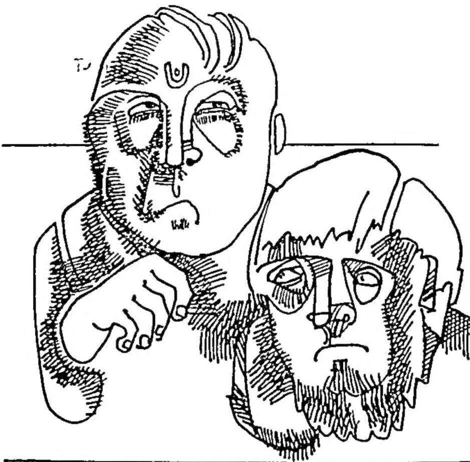
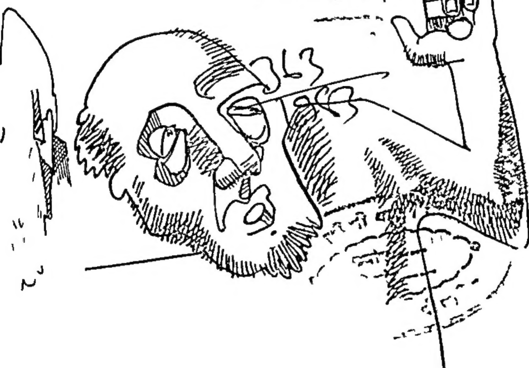


ग्यारह एकाकी नाटक

तीन अपाहिज

विपिन अग्रवाल



लोकभारती प्रकाशन
१५–ए, महात्मा गांधी मार्ग,
इलाहाबाद-१
द्वारा प्रकाशित

●

विपिन कुमार अग्रवाल

●

द्वितीय संस्करण १९८२

●

भार्गव मुद्रण केन्द्र
बाई का बाग, इलाहाबाद-३
द्वारा मुद्रित

मूल्य २२.५०

अपने बाबा की स्मृति मे
जिन्होने
मुझे रामलीला दिखाई

आभार

अपने सब मित्रो का आभारी हूँ, जिन्होंने इन नाटको को प्रारम्भ मे सुना और इन्हे प्रकाशित कराने के लिए आवश्यक प्रोत्साहन दिया। डॉ० सत्यव्रत सिन्हा ने कई नाटको को मच पर प्रस्तुत करके मुझे इस माध्यम को समझने मे सहायता दी। लक्ष्मीकात वर्मा, रघुवश और रामस्वरूप चतुर्वेदी ने रिहसल के समय मेरा साथ दे कर लेखक और अभिनेताओ के बीच के वार्तालाप को सुगम और उपयोगी बनाया। सुरेन्द्रपाल ने व्यक्तिगत रुचि लेकर इन नाटको को पुस्तक का रूप दिलाया। अन्त मे अपने बच्चो के प्रति आभारी हूँ, जिन्होने कागज़ की नावे और हवाई जहाज़ बनाते समय मेरे हर लिखे कागज़ को उठाकर अलग रख दिया।

१८ ए, बैंक रोड,
इलाहाबाद २

—विपिनकुमार अग्रवाल

क्रम

तीन अपाहिज

[पहली बार डॉ० सत्यव्रत सिनहा के निर्देशन में 'प्रयाग रंगमंच' द्वारा 'पैलेस थियेटर' में २१ ४-१९६३ को प्रदर्शित]

पात्र

•

कल्लू	श्री शान्ति स्वरूप प्रधान
खल्लू	श्री रामचन्द्र गुप्त
गल्लू	श्री जीवनलाल गुप्त
साइकिलवाला	श्री रामगोपाल
डुग्गीवाला	श्री शान्ति स्वरूप प्रधान

• • •

[आधे से ऊपर दिन बीत चुका है। तीन अपाहिज-से, कल्लू, खल्लू और गल्लू, एक तेल के लैम्प के खम्भे के नीचे, तीन तरह से बैठे हुए हैं।]

कल्लू (उठने का उपक्रम करते हुए) चलो!

खल्लू चलो क्या? कैसे चलें?

कल्लू (झींक कर उठना बन्द करता है।) उठ कर।

खल्लू ओ, उठ कर! (और आराम से बैठ जाता है।)

गल्लू (लेटते हुए) कहाँ?

[खल्लू कल्लू की ओर प्रश्नात्मक मुद्रा में आशा की नजरों से देखता है।]

कल्लू कहीं भी।

खल्लू (सिर खुजला कर) कहीं भी, मैंने सुना है इस जगह का नाम (जैसे स्वगत भाषण करता हो।)

गल्लू (करवट ले कर और कोहनी से मुड़े हाथ पर सिर टिका कर) दूर होगी!

कल्लू : कहीं भी, मतलब, क—हीं—भी—।

गल्लू (कुछ प्रसन्न हो कर) यानी, यहीं आसपास भी!

कल्लू हो सकता है। मैंने अभी सोचा नहीं है।

खल्लू बिना सोचे कभी नहीं बोलना चाहिए। (बोल कर मुंह बन्द कर लेता है।)

गल्लू : हाँ, अभी हम लोग उठ जाते तो?

खल्लू हाँ, तो? (गल्लू उठ कर बैठ जाता है। दोनों कल्लू को नाराजगी से देखते हैं।)

कल्लू (जैसे समय चाहता हो) तो, तो क्या?

[प्रश्न की गंभीरता को महसूस कर गल्लू और खल्लू एक-दूसरे—

को देखते हैं ।]

खल्लू (सहसा मुसकुरा कर, मानो उत्तर पा लिया हो) शायद फिर बैठना पड़ता ।

गल्लू (चिढ कर) कौन जाने, पहले से कैसे कहा जा सकता है ।

कल्लू मैं तो भविष्यवाणी मानता हूँ ।

गल्लू मैं नही मानता ।

खल्लू (पैर पर हाथ पटक कर जैसे मक्खी मार रहा हो) पहले से कैसे कह सकते हो—नही मानता ।

[गल्लू अपने को फँसा मान कर चुप हो जाता है । कल्लू कुछ देर बाद खल्लू की सफलता समझ कर हँसता है ।]

कल्लू वाह खल्लू हाथ मिलाओ । (उसके हाथ अपनी जगह पड़े रहते हैं ।)

खल्लू किससे । (वह सिर हिला कर एक के बाद एक दोनों को देखता है, मानो निश्चय न कर पा रहा हो कि दुखी गल्लू से हाथ मिलाए या कल्लू से ।) क्या गल्लू बुरा मान गया ? (दोनों के बीच में देख कर ।)

गल्लू नहीं ।

कल्लू (स्थिति अपना कर) तो मिलाओ हाथ !

[गल्लू हाथ बढ़ाता है ।]

खल्लू (कुछ अधिक जोश से हाथ मिलाते हुए) मैं भी आकाशवाणी में विश्वास नही करता हूँ । (शान से बैठ जाता है ।)

कल्लू आकाशवाणी नही, भविष्यवाणी । (खल्लू का चेहरा लटक जाता है ।)

गल्लू नकल बुरी चीज है ।

खल्लू तो कल्लू ऐसी भाषा क्यों बोलता है ?

गल्लू उसकी मर्जी । अब हम आजाद हैं ।

खल्लू खाक !

कल्लू (अपने ऊपर आक्रमण मान कर) क्या कहा ?

खल्लू खाक !

कल्लू खाक खा क (सिर हिलाता है, मानो सबध समझ न पा रहा हो।)

खल्लू अब बोलो बच्चू !

गल्लू हम लोग जब मिल कर बठते है तो लडते क्यो हैं ?

खल्लू क्योंकि हम आजाद है, हि, हि हि ! (अपने किये मजाक पर खुद ही खुश होता है, पर औरो को गम्भीर देख कर सहसा हँसी रोक लेता है।)

कल्लू (होंठों पर उँगली रख कर) चुप !

[सब शात हो जाते है। कान लगा कर सुनने की कोशिश करते है। कल्लू उठ कर मच के अगले भाग में एक ओर जा कर झुक कर सुनता है। खल्लू जमीन से कान लगा कर सुनता ह और साथ साथ कल्लू की ओर देखता भी है। वहीं से कहता है "इधर से नही उधर से।" कल्लू मच के दूसरी ओर जा कर सुनता है। हलकी हलकी डुग्गी पिटने की आवाज आती हैं, जो धीरे धीरे तेज होती ह। कल्लू "इधर ही आ रही है।" कह कर अपनी जगह जा बठता है। खल्लू भी सीधा बठ जाता ह। गल्लू खाँसता है और अपनी बनियाइन पर से एक तिनका झाडता ह। कल्लू बालो पर हाथ फेरता है। तीनो जैसे आने वाली घटना की तैयारी कर रहे हो। एक डुग्गी पीटनवाला आवाज लगाता ह "आज शाम को,—मुहम्मद अली पार्क में,—डाक्टर सुखबीर सिंह भाषण देंगेऽऽऽऽ " (डुग्गी) "दें गेऽऽऽऽ 'कहता हुआ मच पर आता ह और डुग्गी बजाता हुआ पार जाता है। बीच में इन तीनो को बठा देख सहसा डुग्गी बजाना बन्द कर देता ह। एक पल के लिए उनकी ओर वह देखता है, फिर कूल्हे एक ओर निकाल कर आराम से खडा हो जाता है और जेब से एक बीडो

निकालता है। बीड़ी देख कर तीनों उसकी ओर झुक जाते हैं। वह पूछता है "माचिस है?" प्रश्न सुन कर तीनों फिर सीधे बैठ जाते हैं। वह कन्धे उचका कर बीड़ी जेब में वापस डालता है। पहली बार हाथ जेब में नहीं जाता, वह मुड़ कर बीड़ी सम्हालता है। खल्लू एकदम से लपक कर जमीन पर झुक कर बीड़ी ढूंढने लगता है। झुग्गीवाला बीड़ी जेब में रख कर चिल्लाता हुआ चला जाता है। खल्लू धीरे धीरे सीधा हो कर बैठता है। वातावरण में तनाव आ जाता है।]

गल्लू लालची।

कल्लू बेसब्री की हद है, वह होशियार हो गया।

खल्लू (बोलने की कोशिश करता है। बड़ी मुश्किल से कह पाता है) वह खाली कुर्ता पहने था।

गल्लू, कल्लू क्या था-था-था ऽऽऽ।

खल्लू हाँ।

गल्लू (सम्हल कर) झूठ। खल्लू अपनी बात से हटाना चाहता है।

खल्लू हाथ कंगन को पारसी क्या।

कल्लू पारसी नहीं आरसी।

खल्लू अरे वही।

गल्लू अरे वही क्या! बोलना नहीं आता तो चुप रहा कर। विद्वान बनता है।

कल्लू (पैर फला कर) छोड़ो भी, भाषण सुनने चलोगे।

खल्लू क्या?

कल्लू भाषण। कोई बोलेंगे।

गल्लू कहाँ?

कल्लू पार्क में।

खल्लू (जैसे बातचीत में छूटना न चाहता हो) लाइन पार।

कल्लू हाँ, वही ।

गल्लू तो जाने की क्या जरूरत है, यही से सुन लेंगे ।

कल्लू यही से ।

गल्लू हाँ, यही से ! गुलब्बो जब रशीदन को डाँटती है तो यहाँ साफ सुनाई पड़ता है ।

खल्लू यह भाषण है, डाँट नही है ।

गल्लू सुनने में सब एक-से होते हैं । फरक मानो तो है, न मानो तो नहीं ।

[खल्लू सहारे के लिए कल्लू की ओर देखता है, पर वह चुप बैठा है । हार कर सब शात बैठ जाते हैं । जिधर डुग्गीवाला गया था, उधर से एक युवक अस्तव्यस्त, हाथ में पुरानी, साइकिल लिये हुए, जिसके पिछले पहिये में बिलकुल हवा नही है, आता है । इन लोगो को देख कर रुक जाता है ।]

युवक यहाँ कही पन्चर की दूकान है ।

खल्लू (गल्लू से) परचूनी की दूकान ।

गल्लू काहे की दूकान ?

कल्लू पन्चर की ।

खल्लू पन्चर !

गल्लू पन्चर !

कल्लू हाँ, पन्चर ।

[तीनो चुप हो जाते है । युवक निराश हो कर आगे बढ़ जाता है । हलकी-हलकी भाषण देने की आवाज आती है । जिधर युवक गया, उधर से ।)

खल्लू भाषण हो रहा है । भाषण (मन ही मन मुसकुराता है) भाषण (मानो इस शब्द का उच्चारण करना उसे अच्छा लग रहा हो ।)

कल्लू चुप रहो ।

[भाषण की ध्वनि तेज़ हो जाती है, अब हम आज़ाद हो गये हैं, गुलामी की जंजीरें हमने तोड़ डाली हैं ।]

खल्लू कल्लू !

कल्लू हाँ !

खल्लू हम कब आज़ाद हुए ?

कल्लू यही टिल्लू की उम्र समझ लो ।

खल्लू कोई दस साल का होगा, कुछ ऊपर ।

कल्लू और क्या ।

खल्लू तो आज़ाद अभी बच्चा है । हम बच्चा कैसे बन सकते हैं ।

गल्लू आज़ाद बच्चा नहीं, देश है ।

खल्लू देश बच्चा कैसे बन सकता है ।

कल्लू अपनी क़िस्मत से !

[सब इसको मान लेते हैं । फिर भाषण सुनने लगते हैं । "अब हमें काम करना चाहिए । खाली हाथों नहीं बैठना चाहिए । हमारे प्रधान मंत्री का कहना है—आराम हराम है । "]

खल्लू आराम हराम है, यह कौन है कल्लू ?

कल्लू तुम !

खल्लू मैं ! (आश्चर्य से, महत्त्व पा प्रसन्न भी ।)

गल्लू (चिढ़ कर) हाँ तुम, कद्दू नहीं तो !

खल्लू मैं कद्दू ।

गल्लू हाँ, तुम कद्दू ।

खल्लू (क्रोध में जैसे बोल नहीं पा रहा है ।) यह गाली है । कल्लू ! देखो ।

कल्लू हाँ गल्लू, यह गाली है, इसके घरवालों पर भी पड़ती है !

गल्लू (टालने के लिए) कैसे ?

खल्लू बनता है ! अगर मैं कद्दू हूँ तो मेरी माँ कौन हुई ?

गल्लू (कुछ सोच कर) धरती !

खल्लू तो मेरी माँ धरती है।

गल्लू धरती—माँ तो होती है।

[दोनो सफ़ाई के लिए कल्लू की ओर देखते है।]

कल्लू हाँ, धरती मा तो होती है।

गल्लू फिर, कद्दू गाली नही हुई।

कल्लू नही हुई।

खल्लू तो गल्लू भी कद्दू है।

कल्लू हाँ।

खल्लू तुम भी कद्दू हो।

कल्लू (इसके लिए तयार न था, पर और कोई चारा न देख कर) हाँ हम सभी कद्दू है।

खल्लू कद्दू एकता की भावना को जगाता है।

कल्लू हर गाली यही करती है।

खल्लू पर कद्दू गाली नही है।

गल्लू जब एकता को जगाती है तो है।

खल्लू क्या जगाती है ?

गल्लू एकता ! (खल्लू न समझने का सिर हिलाता है।)

कल्लू (जरा खाँस कर) यानी हम सब एक है।

खल्लू (उँगली उठा कर बैठे लोगो को गिनने लगता है) एक दो,

कल्लू खल्लू ! (खल्लू का गिनना बीच ही में रुक जाता है) गिनती में एक नही भावना में।

खल्लू भावना में ? कल्लू, तुम फिर ।

गल्लू इसमे क्या मुश्किल है। समझते कुछ हो नही। जा की रही भावना जमी । अपनी राष्ट्रभाषा का शब्द है।

खल्लू किसका ?

गल्लू अपने देश की भाषा का (हाथ हिला कर खल्लू से तंग न करने का इशारा करता है। गम्भीर हो कर कल्लू से) अच्छा कल्लू !

यह आदमी साइकिल हाथ में लिये हुए क्यों जा रहा था ?

कल्लू कौन जा रहा था।

गल्लू : अरे ! वही जा अभी इधर स गया था।

कल्लू उसे गये तो जमाना गुजर गया। याद पड़ता ह, शायद उसका पहिया टूटा था।

गल्लू पहिया टूटा था, क्या वह अभिमन्यु था, बड़ा तेज था उसके चेहरे पर।

खल्लू क्या नाम लिया तुमने ?

गल्लू अभिमन्यु !

खल्लू तुम जानते हो उसे, बड़ा अजीब नाम ह।

गल्लू अभिमन्यु महाभारत में था, लड़ाई में उसका पहिया टूटा था।

खल्लू अच्छा, लड़ाई में क्या पहिया टूट जाता ह ? (कल्लू की ओर देखता है।)

कल्लू हां, और लड़ाई का टूटा पहिया फिर कभी नहीं जुड़ता।

खल्लू वह एकता नहीं जगाता, हि हि हि ।

[कल्लू नाराज हो कर उसकी ओर देखता ह। खल्लू सहसा चुप हो जाता ह।]

गल्लू शाम हो गयी !

[तीनों आंखों पर हाथ की छाया कर दूर एक ओर देखते हं, मानो उधर शाम हो।]

कल्लू
खल्लू } हां, शाम हो गयी।

गल्लू (उठ कर मंच के सामने वाले भाग में एक ओर जाता है। झुक कर जमीन से चुटकी भर धूल उठा कर उड़ाता है।) हवा चल रही ह।

खल्लू (उठ कर गल्लू के पास जाता ह। उसकी नक़ल करता हुआ

धूल उठा कर उड़ाता है।) हवा चल रही है।

[दोनों लौट कर एक दूसरे की जगह बैठ जाते है। कुछ अजीब-सा लगता है।]

गल्लू यह मेरी जगह नही है।

खल्लू कैसे मालूम ?

गल्लू मैं तुम्हारे सामने बठा था।

खल्लू वह तो अब भी बैठे हो।

गल्लू यह मेरी जगह नही है।

खल्लू तुम्हें हवा लग गयी है। (चुटकी से धूल गिराने का सकेत करता है।)

गल्लू तुम मेरी जगह बैठ गये हो।

खल्लू और तुम मेरी।

गल्लू तो उठो।

खल्लू क्यो ?

गल्लू जगह बदलो।

खल्लू हाँ, बदलो। (पर उठता कोई नही।)

कल्लू मैं अगर दूसरी ओर आ कर बैठ जाऊँ तो तुम लोग अपनी अपनी जगह पर हो जाओगे।

[खल्लू, गल्लू उसकी सूझ पर उसे बडे आदर की दृष्टि से देखने लगते हैं। कल्लू उठने को कोशिश करता है, पर जैसे शक्ति न हो, धम् से बैठ जाता है। दोनो उठ कर कल्लू को सहारा देते है। कल्लू किसी तरह उठ कर खडा हो जाता है। दोनों उसे पकड कर घुमाते हैं, जिससे कल्लू की पीठ दर्शकों की ओर हो जाती है और स्वय आपस में भी उनकी जगह बदल जाती है। तीनो बैठ जाते हैं।]

कल्लू अब देखो!

गल्लू यह तो फिर गड़बड़ हो गया।

खल्लू हाँ, फिर।

[दोनों मिल कर फिर जबरदस्ती कल्लू को उठाते हैं। कल्लू अब उठना नहीं चाहता। झींकता है।]

कल्लू अच्छी मैंने अक्ल बतायी।

[खल्लू गल्लू नहीं मानते। उसे फिर घुमा कर बैठाल देते हैं। इस सिलसिले में खुद भी घूम कर पूर्ववत् बैठ जाते हैं।]

गल्लू फिर ग़लत हो गया।

खल्लू सही क्या था? (दोनों कल्लू की ओर देखते हैं।)

कल्लू जो पहले था वह अब नहीं है। न सही, न ग़लत।

गल्लू न सही न ग़लत। (दुहराता है, मानो समझने का प्रयत्न कर रहा हो।)

खल्लू तो अब क्या है? (दोनों कल्लू की ओर देखते हैं।)

कल्लू जो है!

[बात समझ में आ जाती है। खल्लू और गल्लू इस युक्ति को स्वीकार कर लेते हैं। आराम से बैठ जाते हैं। कल्लू अपना पेट दबा कर कराहता है।]

कल्लू मैं जा रहा हूँ।

गल्लू कहाँ?

कल्लू मेरा पेट दर्द कर रहा है।

[कल्लू किसी तरह उठ कर जाता है। जाते-जाते वह अपनी धोती ढीली करके फिर से बाँधता है। एक थैली वहीं गिर जाती है। उसे पता नहीं चलता। वह चला जाता है। उसके जाते ही खल्लू और गल्लू उस थैली की ओर लपकते हैं। थैली गल्लू के हाथ लग जाती है। वह उसे खोलता है। खल्लू अन्दर हाथ डाल कर कुछ मुट्ठी में भर कर निकालता है।]

खल्लू अरे, यह तो चने हैं।

गल्लू चने, भुने चने!

[दोनों आ कर बैठ जाते हैं। गल्लू खुली थैली खल्लू की ओर बढ़ाता है। खल्लू चनों को एक बार हसरत भरी नज़रों से देख कर थैली में वापस डाल देता है।]

खल्लू लाओ।

गल्लू (थैली बाँधते हुए) क्या?

खल्लू चने, और क्या।

गल्लू क्या करोगे?

खल्लू क्या करेंगे।

गल्लू हाँ! (शरीर में तनाव आ जाता है।)

खल्लू (हार कर) खाएँगे।

गल्लू (उत्तर सुन कर शिथिल हो जाता है।) तुम्हारा मतलब है दोस्त की गैरहाज़िरी में हम उसका मान उड़ाएँगे।

खल्लू (विचलित हो कर) इस तरह से सोचते हो तो शायद नहीं।

गल्लू (उत्तर सुन कर निराश हो जाता है पर विषय जारी रखना चाहता है।) क्या किसी और ढंग से सोचा जा सकता है।

खल्लू क्यों नहीं। थैली बीच में रख दो!

[गल्लू थैली बीच में रख देता है। दोनों उसे बड़े मग्न हो कर देखते हैं, मानो वहाँ से विचार उठेंगे।]

खल्लू यह चने हैं!

गल्लू हाँ, हैं।

खल्लू यह कल्लू के चने हैं।

गल्लू कल्लू के हैं।

खल्लू यह उसके पास पहले से थे।

गल्लू हाँ, उसी से गिरे।

खल्लू कल्लू का मन इनमें से कुछ चने पहले भी खाये बिना न माना होगा।

गल्लू (खल्लू किस दिशा में बात ले जा रहा है, महसूस कर खुश

बढ़ावा देता है।) हाँ, हाँ, खल्लू, जरूर खाये होंगे।

खल्लू (गल्लू के जोश से खल्लू की एकाग्रता भंग हो जाती है।) उसके चने थे उसने खाये। (बात बनी नहीं। दोनो दुखी हो जाते हैं।) मैं थक गया, अब तुम कोशिश करो। (दोनो फिर थैली की ओर देखना आरम्भ कर देते हैं।)

गल्लू कल्लू ने इसमें से कुछ चने खाये होंगे।

खल्लू हाँ!

गल्लू और अब उसका पेट दर्द कर रहा है।

खल्लू (खुश होकर) हाँ कर रहा है।

गल्लू चने से पेट दर्द करता है।

खल्लू (बेबस हो कर) हाँ, दर्द करता है।

गल्लू कल्लू अभी फिर वापस आएगा।

खल्लू (निराश होकर) आएगा।

गल्लू यदि यह चने यूं ही रहे तो हमें उसे चने दे देने होंगे।

खल्लू (उदास हो कर) हाँ, शायद!

गल्लू पर चने मिलने पर उसका मन फिर नही मानेगा।

खल्लू (आशा से) तब?

गल्लू वह फिर चने खाएगा।

खल्लू तो!

गल्लू उसका पेट फिर दर्द करेगा।

गल्लू हाँ, फिर!

गल्लू कल्लू हमारा दोस्त है।

खल्लू हाँ, है!

गल्लू हम ऐसा कोई काम नही कर सकते जिससे उसे तकलीफ़ हो।

खल्लू कभी नहीं।

गल्लू तो अपने दोस्त के हित में हमें यह चने खा लेने चाहिए।

[खल्लू आश्चर्य और आदर से गल्लू को देखता है। गल्लू हाथ

बढ़ा कर थैली उठा लेता ह । दोनो चने निकाल कर खाने लगते हैं । पहले जल्दी जल्दी फिर धीरे धीरे ।]

खल्लू हित में क्या, तुम कुछ कह रहे थे ।

गल्लू हित में, यानी अपने दोस्त की भलाई में ।

खल्लू ओ भई दोस्त के लिए क्या नही करना पडता ।

गल्लू नही तो दोस्ती मे फायदा क्या ।

खल्लू कौन किसका दोस्त ह । (बातचीत जारी रखने के इरादे से ।)

गल्लू मैं तुम्हारा, तुम कल्लू के और कल्लू मेरा ।

खल्लू हम सब दोस्त हैं ।

गल्लू (इसमें कोई बुराई न देख कर) हाँ, सब ।

खल्लू तब तो दोस्ती एकता बढाती है ।

गल्लू बढाती ह ।

खल्लू दोस्ती गाली है, हि हि हि ।

[गल्लू नही हँसता । यह देख कर खल्लू भी चुप हो जाता ह । वे चने खाते हैं । किसी के आने की आहट आती है । गल्लू थैली छुपा लेता हैं । दोनो मुँह चलाना बन्द कर देते हैं । डुग्गीवाला डुग्गी पीछे लटकाये बीडी पीता हुआ आता है । इन लोगो को देख कर रुक जाता है ।]

डुग्गीवाला बीडी पिओगे । (दोनो पूववत बैठे रहते है । वह हँस कर बठ जाता है । एक कश ले कर) अरे, बुरा मान गये, कैसे दोस्त हो ? (दोनो 'दोस्त' शब्द सुन कर चिहुक जाते ह पर फिर स्थिर हो जाते है । डुग्गीवाला कन्धे उचका, उठ कर चला जाता है । उसके जाते ही दोनों फिर जल्दी-जल्दी मुँह चलाने लगते हैं । थैली खाली होती है । थैली गल्लू ज़मीन पर रख देता है । कल्लू पैर घसीटता कठिनाई से चलता हुआ आता है ।]

कल्लू (बैठते हुए) ओफ, बडी तकलीफ थी ।

खल्लू कहाँ ?

कल्लू पेट में।

गल्लू अब ठीक है।

कल्लू हाँ—मेरी एक चनी गिर (उसकी नजर जमीन पर पड़े चनों पर पड़ती है। उसे उठा कर देखता है।) लगता है चने सब गिर गये।

खल्लू कहाँ ? (इधर उधर देखते हुए।)

कल्लू यहीं कहीं। शायद जमीन पर।

गल्लू जमीन पर!

कल्लू हाँ जमीन पर।

गल्लू (खुश हो कर मानो कोई बहुत अच्छा विचार आ गया हो।) तब तो यहाँ चने की फ़सल उग आएगी।

खल्लू तुमने बहुत बड़ा काम किया है।

गल्लू तुम्हारे लिए आराम हराम है।

कल्लू आजाद देश के तुम दोस्त हो। (गल्लू कुछ नाराज हो कर कल्लू की ओर देखता है। कल्लू 'दोस्त' शब्द का प्रयोग करने की गलती को महसूस कर हाथ से मुँह दाब लेता है।)

गल्लू अब धरती से चने निकलेंगे! (पुरानी बात पर वापस आते हुए।)

खल्लू हाँ, निकलेंगे।

गल्लू धरती माँ है।

[तीनों हँस पड़ते हैं।]

खल्लू तुम कद्दू!

गल्लू तुम कद्दू!

कल्लू तुम कद्दू!

कल्लू
लल्लू हम सब कद्दू।
गल्लू हम सब दोस्त।

[तीनों एक-दूसरे का हाथ पकड़ कर घेरा बना लेते हैं।]

हम सब एक।

[सहसा सन्ध्या ढल जाती है। रात हो जाती है।]



ऊँची नीची टाँग का जाँघिया

[श्री जीवनलाल गुप्त के निर्देशन में 'प्रयाग रंगमंच' द्वारा २५-१०-६४ को 'पैलेस थियेटर' में प्रदर्शित]

पात्र



तीन कारीगर	रामचन्द्रगुप्त, शान्तिस्वरूप प्रधान
	हरीराम
मगन दर्जी	जीवनलाल गुप्त
रामू	मुकेश पुरी
धीरजमल	मनहर पुरी
प्रीतम जी	रामगोपाल
एक सज्जन	द्वारिकाप्रसाद



दर्जी

[मगन दर्जी की मामूली दुकान। दायी तरफ, पीछे की ओर, कपडा काटने की एक मेज पडी है। बायी तरफ, पीछे की ओर, तीन कारीगर जमीन पर बठे काम कर रहे हैं। मगन मेज के पीछे सिले फटे कपडे तह करके रख रहा है। सुबह का समय है।]

तीनों कारीगर : (एक साथ सुई डोरा चलाते हुए)
कसी है सुई कैसा है तागा
तीन दिन भूखा रहा तीन दिन जागा
कल्लू खां पैदा हुए तन नही कपडा
दौडे दौडे यहाँ आये हाथ लिये करघा
यही रुई धुनी यही बुना कपडा
पहने बुशशर्ट निकले सग लिये बुर्का
कैसी ह सुई कैसा है तागा
तीन दिन भूखा रहा तीन दिन जागा!

मगन (शुरू में दोना हाथ मेज पर रख कर कारीगरो की ओर देखते हुए फिर बाद में दर्शको की ओर देखते हुए।)
ना कोई भूखा ना कोई जागा
सोने की सुई ह रेशम का तागा
कटा फटा गज है लोहे की कैंची
तीन दिन नापा तीन दिन काटा
भगतराम मोटे हुए पहन कर धोती
सीधी-सादी धोती पहने सीता बैठी रोती
अटकन बटकन नगे घूमे
कैसी है गरमी कसा ह जाडा।

[एक दस बारह वर्ष का लडका, रामू, खाली जाँघिया

दुकान के अन्दर आता है ।]

मगन : (रामू को देख कर) तू फिर आ गया ?

रामू • आज तो पहली बार आया हूँ, मास्टर !

मगन : (उससे भागने का हाथ से इशारा करते हुए) चल !

रामू (तुरन्त दुकान के अन्दर चलने लगता है)

अटकन-बटकन नगे घूमें
कैसी है दुनिया कैसा है राजा !

मगन नही मानेगा ?

रामू : क्यों नही मानूँगा, मास्टर ! (चलना सहसा बन्द कर देता है।)

मगन मुझे मास्टर मत कहा कर, मैं टेलर हूँ !

रामू (कमर पर दोनों हाथ रखकर और आँखे मूद कर, मानो पुराना पाठ याद कर रहा हो)

ना कोई टेलर ना कोई मास्टर
दुनिया एक है मेला रे !

मगन (लोहे का गज लेकर रामू की ओर बढता है, जैसे उसे मारने के इरादे से) तुझे ठीक करना होगा।

रामू (झट से पीछे हट कर) मुझे नही, पर मेरा जाँघिया जरूर ठीक करना होगा। देखो नानो मास्टर, तुमने एक पैर दूसरे पैर से लम्बा बना दिया है। (झुक कर एक तरफ का नीचे मुडा हुआ जाँघिये का कपडा सीधा कर देता है।)

मगन (दोनों कारीगरों को उस जाँघिये की ओर देखते हुए और हँसते हुए पा, उनकी ओर गज दिखा कर) अपना अपना काम करो जी, इसको मैं देखता हूँ।

[मगन रामू के पास बढ कर लोहे के गज से उसका जाँघिया मापता है। गज रामू के नगे पैर से छू जाता है। छूते ही वह खिलखिला कर हँसता है और पीछे हट जाता है—जैसे उसे गुदगुदी लग रही हो। दो-तीन बार ऐसे होता है।]

मगन : (बैठे ही बैठे रामू की ओर सरकते हुए) सीधा खड़ा रह ।

रामू : (अपने को बहुत साध कर खड़ा हो जाता है ।) लो ! (एक-आध बार पैर काँपता है, पर वह अपने को सम्हाल लेता है ।) अच्छा मास्टर, तुम मेरा जाँघिया लोहे की छड़ से क्यों नापते हो और नुक्कड़ वाली सुधा बी० ए० का जम्पर फीते से ?

मगन ऐसा मेरे गुरु ने बताया था ।

रामू : पर तुम तो कहते थे कि तुम्हारे गुरु कपड़ा नाप कर सीना जानते ही नहीं थे । एक बार आदमी को देख लिया और बस कपड़ा काट दिया ।

मगन वह तो मैं भी करता हूँ—खास कपड़ों के लिए । तभी आदमी का चरित्र उसके कपड़ो में झलका पाता हूँ । यह एक कला है । (अपनी मेज की ओर जाते हुए)

रामू : तो मेरे चरित्र में एक टाँग बड़ी है क्या ?

मगन : (प्रश्न को कुछ अटपटा पा कर रुक रुक कर) जरूर हो गी नहीं तो ऐसी मेरे हाथों से कटती कसे ।

रामू (मगन के सामने पास जाकर और सिर उठा कर उसे देखते हुए) तो इस चरित्र को सुधारूँ कैसे मास्टर, (दुखी हो कर) वरना मुझे जिन्दगी भर ऐसे ही जाँघिये पहनने पड़ेंगे ।

मगन अरे अब लोग धोती पहनने लगे हैं । तू भी पहन लेगा । सब चरित्र छिप जाएगा । दुनिया ने मगन की कैंची से बचने का रास्ता निकाल लिया ह । खैर । (गज को दीवार से टिका कर रख देता है ।)

रामू मास्टर मं वादा करता हूँ, धोती कभी नहीं पहनूँगा ।

मगन (उसकी ओर गव से देखते हुए) शाबाश । (जैसे खुश होकर) ला अब तेरा जाँघिया ठीक कर दूँ ।

रामू पर मैं जाँघिया उतारूँगा कैसे ?

मगन मैं कोई ऐसा वैसा कारीगर नहीं हूँ। जाँघिया उतार कर ठीक

किया तो क्या किया! बस तू चुपचाप सामने खड़ा हो जा।

[रामू मंच के एक ओर जा कर चुपचाप खड़ा हो जाता है। मगन वहाँ से दस कदम नापता है और रामू की ओर घूम कर एक घुटना टेक कर बैठ जाता है। अपने दाहिने हाथ में कैंची को पकड़ लेता है, जैसे वह कोई अस्त्र हो। कारीगर सीना बन्द कर देते हैं। शांति छा जाती है। सब बड़े आदर से मगन को देखने लग जाते हैं। मगन एकटक रामू के जाँघिये की लम्बी वाली टाँग की ओर देख रहा है, जैसे ध्यान केन्द्रित कर रहा हो। सहसा मानो उसे जोश आता है और वह दौड़ कर जाँघिया काटने के लिये उठने को होता है कि एक सज्जन अचकन, टोपी और पाजामे में सजे धजे आते हैं। स्थिति भंग हो जाती है। मगन उठ कर खड़ा हो जाता है। रामू अपनी जगह पर बैठ जाता है। वह सज्जन मगन को एक कुर्ते का कपड़ा हाथ बढ़ा कर देते हैं।]

सज्जन इसका कुर्ता सिलेगा मास्टर।

[मगन लोहे का गज उठा कर उनका कुर्ता नापता है। कारीगर फिर काम करने लगते हैं और गाते हैं।]

छोटी-छोटी सुई है लम्बा लम्बा तागा
चलते-चलते हाथ थके एक गज नापा
रहमतउल्ला घर को चले पहुँचे बीच बाज़ार
इतने सारे बच्चे देखे ली मिठाई उधार
एक एक सबको ... े हर ब
पीछे-पीछे पुलि ... गयी
छोटी छोटी सु
चलते-चलते

सज्जन (कुर्ता ... ने पर)

मगन

सज्जन पर मुझे कल चाहिए।
मगन कल बन जाएगा।

[वह सज्जन चले जाते हैं।]

मगन (स्वगत भाषण) अजीब लोग है। जब कपड़ा पहनने को नही रहा तब सिलवाने चल। इस देश में बिना मुसीबत के कोई काम करना ही नही जानता। सबके सब आलसी है— आलसी! वही अर्जुन थे। बिना लड़ाई के भी धनुष चला चला कर सीखा करते थे। और अब, लोग लड़ाई में भी बन्दूक चलाने में डरते है। मिल कर बात कर लो। यह भी कोई ढग है। पिछली लड़ाई में तीन हजार वर्दियाँ राता रात सी कर मेरे गुरु ने दी थी तब यह दुकान खुली। अब तो लगता है बन्द करने की नौबत आ जायेगी। यह बातचीत का जमाना है, बातचीत का। जो काम करे वही मरे। उल्लू बनाते हैं।

रामू (मौका पा कर) किसको? (उठकर खड़ा हो जाता है।)

मगन (कुछ सजग हो कर) अरे एक-दूसरे को, और क्या, मुझसे क्या लेना देना।

[मगन फिर अपनी कची ले कर, उसी तरह दस कदम नाप कर बैठ जाता है। कुछ देर ध्यान केन्द्रित करने का असफल प्रयत्न करता है। पर मन चचल रहता है। सिर हिला कर उठ जाता है।]

मगन इस समय नही रामू। मेरा ध्यान बँट रहा है। तेरा जाँघिया गलत कट जाएगा। एक बाजी खेल लू तब काटूगा। कुछ देर म आना।

[रामू जाँघिया मोड कर चला जाता है।]

मगन गफ्फूर।

[एक कारीगर हाथ का काम रख कर मेज के पास आ जाता है। मगन नीचे से एक शतरज निकाल कर बिछा देता है।

एक दो चालें होती हैं।]

गफ्फूर बी० ए० की अम्मा मिली थी।

मगन (मोहरा चलते हुए) मना कर रही थी।

गफ्फूर बहुत सुबह सब्जी खरीद रही थी।

मगन (बात चलाने के इरादे से) आज उनके यहाँ कुछ है क्या?

गफ्फूर नहीं तो।

मगन सुधा को स्कूल जाना होगा। मास्टरनी नहीं पहुँचेंगी तो स्कूल कैसे खुलेगा। जैसे

गफ्फूर जैसे हम वाक्य को यह कई बार पूरा कर चुका हो) मास्टर नहीं पहुँचेंगे तो दुकान कैसे खुलेगी!

मगन (मन ही मन खुश हो कर, फिर सहसा गंभीर हो कर) कोई किसी का इंतजार नहीं करता गफ्फूर। एक जमाना था..

गफ्फूर (मगन का एक मोहरा मारते हुए) जब लोग अदब और तहजीब की क़ीमत जानते थे। अब तो जिसे देखो वही नवाब बना घूमता है।

मगन मगन की कैंची जिसे चाहे नवाब बना दे, जिसे चाहे कबाब! (कबाब शब्द का उसने पहली बार प्रयोग किया है इस सिलसिले में, इसलिए गफ्फूर चौंकता है इस शब्द पर।) लाल धोती पहन कर बी० ए०, फी० ए० घूमें, आखिर जम्पर तो मुझसे बनवाएगी।

गफ्फूर शह! सुना है वह मशीन खरीद रही है। अब पैसा

मगन पैसा, पैसा, इस पैसे ने आदमी का दिमाग खराब कर दिया है गफ्फूर। नहीं तो जब यह स्कूल में पढ़ती थी, मैंने कितनी फ्राकें इन्हीं हाथों से सी कर दी हैं और सिलाई नहीं ली। क्या यूही!

गफ्फूर अब जमाना बदल गया है मास्टर! कोई बाप को मानता नहीं, फिर टेलर को कौन मानेगा। मात!

मगन जिस दिन यह देश टेलर को मानना छोड देगा, उसका बेडा गर्क हो जाएगा। हाँ! मगन की सिली अचकन पहन कर अंग्रेजी बोलो या फ़ारसी, कहलाओगे भारती!

[रामू का प्रवेश]

रामू हारे कि जीते, मास्टर!

मगन कौन हारता है, कौन जीतता है। असली चीज है मन। मै दिल के आराम के लिए खेलता हूँ, बस!

रामू दिल के आराम के लिए तुम शतरंज खेलते हो, अजीब बात है मास्टर! तुम्हारा हर काम अजीब होता है। तुम कपडे भी अजीब सीते हो।

मगन (सुनी अनसुनी करके धमकाने के स्वर मे) क्या कहा तूने, रामू!

रामू (झट से बात पलट कर) शतरंज बहुत अच्छा खेल है!

मगन (मेज पर झुक कर) तुझे कैसे मालूम? क्या तुझे भी लत लग गयी है। अगर तूने शतरंज खेली तो तेरी टाँग

रामू (बीच ही में) मेरी नहीं जाँघिये की टाँग तोडनी है तुम्हें।

मगन (धीरे से, प्यार से, जैसे किसी तरह बात जान लेना चाहता हो।) रामू क्या तूने शतरंज खेली थी?

रामू : मै क्या खेलने लगा। मुझे तो तुम्हारे मरने के बाद तुम्हारी जगह लेनी है।

मगन रामू! क्या इसीलिए मै तुझे बडा कर रहा हूँ कि तू मेरा मरना मनाए।

रामू (बातचीत के इस मोड को न समझ कर) तुम्ही ने तो कहा था, मास्टर!

मगन मैंने कहा था तो क्या तू भी कहेगा?

रामू बिगडो मत मास्टर! मैंने बस एक बार गफ्फूर के साथ शतरंज खेली थी (मगन गफ्फूर की ओर घूरता है गफ़्फूर

और फुरती से काम करने लगता है।) बिना बुरी चीज को जाने कोई उससे बचेगा कैसे, तुम्ही ने तो कहा था

मगन तुम्ही ने तो कहा था, तुम्ही ने तो कहा था अक्ल का दुश्मन।

रामू किसकी अक्ल का ?

मगन अपनी अक्ल का, और किसका ?

रामू अपनी अक्ल का ? (जैसे समझ न पा रहा हो ।)

मगन मगजपच्ची न कर !

रामू मगजपच्ची ?

मगन यह लड़के स्कूल में दिन भर आजकल न जाने क्या पढ़ते हैं। पता नहीं किस भाषा में आजकल मास्टर लोग इन्हें डाँटते हैं, मुझे तो शक है डाँटते भी हैं या नहीं। तुझे कल स्कूल में कितनी बार डाँट पड़ी थी रामू !

रामू एक बार भी नहीं।

मगन और मार !

रामू (हँस कर) तुम कैसी बातें कर रहे हो मास्टर, हम लोग स्कूल पढ़ने जाते हैं कि यह सब करने ।

मगन प ढ ने जाते है, अच्छा चल खड़ा हो, बड़ा ए थो तो डी वाला बना है ।

रामू (जहाँ पहले खड़ा हुआ था वहीं जा कर खड़ा हो जाता है। कुछ देर खड़ा रहता है, फिर बात चलाने के लिए।) मास्टर, तुम कहा करते थे कि तीन तरह के कारीगर होते हैं।

मगन (कुछ इधर-उधर ढूढ़ते हुए) हाँ !

रामू एक वह जो कभी सही कपड़े नहीं सी सकता।

मगन (अब भी ढूढ़ते हुए) हूँ।

रामू दूसरा वह जो हमेशा सही कपडे सीता है।

मगन (कैंची मिल जाती है।) ठीक। (मेज के पीछे से निकल आता है।)

रामू और तीसरा ?

मगन (दस कदम नापते हुए और पूर्वस्थिति में कैंची लेकर बैठते हुए।) तीसरा वह जो चाहे कपड़ सी ले पर कभी-कभी कमाल के कपड़े सी देता है—वही असली कारीगर है, अपने काम में खुदा का दीदार कर लेता है। हर बेहतरीन कपड़ा सीने के बाद वह खुदा के और नजदीक पहुँच जाता है।

रामू तुम अब तक कितनी बार खुदा के पास सरक चुके हो क्या मेरा जाँघिया काटते समय एक बार और सरकोगे ?

मगन हाँ (यह कह वह एकदम से दौड़ कर रामू के पास पहुँचता है और जाँघिये की लम्बी वाली टांग खट-खट काट देता है। फिर कुछ दूर खड़ा हो कर देखता है। कपड़ा कुछ टेढ़ा कट जाता है।)

रामू (कटे जाँघिये को देखते हुए) मास्टर, यह तो टेढ़ा कट गया। बिना निशान लगाये

मगन मगन कभी निशान लगा कर जाँघिया नहीं काटता।

रामू (जाँघिया देखते हुए) इसका क्या होगा।

मगन होगा क्या, गफ्फूर! मैं काट चुका हूँ, इसका जाँघिया बरा बर करके तुरप दो।

रामू (आहिस्ते आहिस्ते सरक कर गफ्फूर के पास आता है।) तुम निशान लगा कर तुरपना।

मगन (घूर कर दोनों को देखता है। पर कुछ बोलता नहीं। एक और कपड़ा मेज पर फैला कर, कैंची विधिवत दाहिने हाथ में ऊपर उठा कर, उस कपड़े पर कुछ देर अपना ध्यान केन्द्रित करता है फिर जल्दी-जल्दी उसे काटने लगता है।)

[गफ्फूर रामू का जाँघिया सीने में लगा है। बाकी दोनों कारीगर गाते हैं।]

दोनों कारीगर

हमने न बूझा हमने न जाना
कब उठायी सुई कब डाला तागा
तानसेन ने गीत गाया सुई दौड़ी सिलने
चेतक का साज़ सिला राधा का लहँगा
कागज़ सिला पानी सिला, सिला उसने पत्थर
हम आग बैठे तापा किये, सत्य, शिव, सुन्दर
हमने न बूझा हमने न जाना
कब उठायी सुई कब डाला तागा।

[बाहर से आवाज़ देता हुआ 'मास्टर हैं' एक आदमी प्रवेश करता है—खद्दर की मैली धोती, कुर्ता और टोपी पहने हुए। अन्दर आ कर मगन को झुक कर प्रणाम करता है।]

मगन आइए, धीरजमल जी!

धीरजमल मास्टर, आइए कहने से काम नहीं चलेगा, ज़रूरी काम से आया हूँ और यह काम तुम्हीं कर सकते हो!

[बाहर से दूसरी आवाज़ आती है 'मास्टर हैं।']

धीरजमल यहाँ भी आ गया। (मेज पर एक हाथ पटकते हुए)

[एक आदमी पाजामा ढीली-ढाली सिकुड़ी हुई पर नयी सिली अचकन और टोपी पहने प्रवेश करता है।]

प्रीतम कहिए मास्टर, क्या हालचाल है?

मगन ठीक है प्रीतम जी, अचकन तो ठीक आयी है बिलकुल आपके।

प्रीतम हाँ, पर अब और मुश्किल काम लाया हूँ, (धीरजमल पर नज़र पड़ जाती है।) अच्छा, तो आप भी मौजूद हैं!

धीरजमल जी हाँ।

[दोनों कुछ देर एक-दूसरे को ताकते हैं। चुप्पी छा जाती है। फिर दोनों मुड़ कर एक साथ मगन से कहते हैं]

धी० व प्री० हम लोग इस कस्बे के एक महापुरुष, दानी, साहित्य सेवी एव कवि का अभिनन्दन करना चाहते हैं।

मगन कब।

धी० व प्री० आज से ठीक दस वर्ष बाद।

मगन दस वर्ष बाद।

धी० व प्री० हमें विश्वास है कि 'सीताराम जी' 'वाणीदास जी' (धीरजमल सीताराम जी का नाम लेते हैं और प्रीतम वाणीदास जी का। एक पल के लिए इस पर दोनो एक-दूसरे को देखते हैं, पर फिर साथ-साथ बोलने लगते हैं।) तब तक महापुरुष, दानी, साहित्यसेवी एव कवि आदि उस हद तक हो जाएँगे कि उनका अभिनन्दन किया जा सके।

धीरजमल (प्रीतम की ओर मुड कर) मैंने कितनी बार कहा कि अभिनन्दन सीताराम का होगा।

प्रीतम तुम्हारे कहाने से क्या होता है अभिनन्दन वाणीदास का होगा।

मगन (बीच बचाव करते हुए) पर आजकल तो यह दोनो ही लोग शायद बीमार हैं, कोई कह रहा था

धीरजमल जहाँ तक वर्तमान का सवाल है, सीताराम कम बीमार है।

प्रीतम वाणीदास इस समय तक शायद ठीक भी हो गया हो।

धीरजमल हम तो भविष्य में देखते हैं, सीताराम ही है जो दस वर्ष तक जीवित रह सकेगा।

प्रीतम धमकाता है। वाणीदास क्या—नाम—है—उसका से ज्यादा कठिन परिस्थितियों में अधिक दिनो तक जिन्दा रहेगा।

धीरजमल देख लेना।

प्रीतम देख लेना!

धीरजमल (मगन की ओर मुड कर) मास्टर, सीताराम इतना सकोची व्यक्ति है कि वह अपना नाप देने के लिए तयार नही होगा। इसलिए आप उसका अध्ययन दूर ही से करके एक पोशाक तैयार कर दीजिए जो अभिनन्दन के अवसर पर भेंट दी जा सके।

प्रीतम एक ऐसी ही पोशाक वाणीदास के लिए भी बनेगी, और वह भी नाप नही देगा।

[धीरजमल और प्रीतम एक बार एक दूसरे को देख कर चले जाते है।]

रामू (रामू का जाँघिया खिन जाता है। मगन के सामने आकर खडा हो जाता है।) ठीक है मास्टर!

मगन हाँ ठीक है रामू! अभी जो यहाँ हुआ वह तूने देखा और सुना।

रामू हाँ मास्टर!

मगन यह तेरा भविष्य तैयार हो रहा है। आज से दस साल बाद जब तू जवान होगा तेरे लिए महापुरुष चुने जा चुके होंगे। तू वही दुनिया देखगा जिसकी नीव आज इस तरह रखी जा रही है।

रामू नीव रखने के लिए कहाँ वह लोग तो तुम्हें पोशाक बनाने के लिए कह गये है।

मगन अभी तू नही समझेगा। पर सुन, यह पोशाकें मैं नही तू ही बडा हो कर बनाएगा। यह लोग तो अब इतने दिनो तक जिन्दा रहेंगे ही, पर मेरा ठिकाना नही है।

रामू क्यों?

मगन बहस मत कर ध्यान से सुन! इन पोशाको को बनाना तेरे जीवन का सबसे पहला शानदार काम होगा। तुझे इन लोगो के लिए एक कुर्ता, एक छोटी और एक बडी बाँह

का, और एक पाजामा, एक छोटी और एक बड़ी टाँग का बनाना होगा, जिससे अभिनन्दन के बाद सीताराम और वाणी दास ज़माने से शिकायत न करके तुमसे आ कर करें। आदतन यह देश भी वही करेगा जो ये लोग करेंगे। और जिस देश के लोग अपने [illegible] से शिकायत करते हैं वह देश कभी गलत कदम नहीं उठा सकता। (आँखें मूँद लेता है, जैसे भविष्य में देख रहा हो।)

रामू देश के टाँग कहाँ होती है, मास्टर! जो कदम उठाए! अगर होती तो तुमने उसके लिए भी मेरा सा जाँघिया सी दिया होता।

[मगन लोहे का गज लेकर रामू को मारने के लिए धमकाता है। रामू भाग जाता है। मगन उसके बचपन पर हँस कर सिर हिलाता है, मानो कह रहा हो—अभी बच्चा है, समझ जाएगा। आहिस्ते से गज दीवार से टिका देता है।]

तीनों कारीगर

सूरज की सुई है धूप का तागा
चन्दा की सुई है जुन्हाई का तागा
दिन दिन हमने सिया गज-गज [illegible]
एक पल आँख लगी [illegible]
सूरज की सुई है ..

[गाते गाते [illegible] ।]

• • •

धीरजमल (मगन की ओर मुड कर) मास्टर, सीताराम इतना सकोची व्यक्ति है कि वह अपना नाप देने के लिए तयार नही होगा। इसलिए आप उसका अध्ययन दूर ही से करके एक पोशाक तैयार कर दीजिए जो अभिनन्दन के अवसर पर भेंट दी जा सके।

प्रीतम एक ऐसी ही पोशाक वाणीदास के लिए भी बनेगी, और वह भी नाप नही देगा।

[धीरजमल और प्रीतम एक बार एक दूसरे को देख कर चले जाते हैं।]

रामू (रामू का जाँघिया सिल जाता है। मगन के सामने आकर खडा हो जाता है।) ठीक है मास्टर!

मगन हाँ ठीक है रामू! अभी जो यहा हुआ वह तूने देखा और सुना।

रामू हाँ मास्टर!

मगन यह तेरा भविष्य तयार हो रहा है। आज से दस साल बाद जब तू जवान होगा तेरे लिए महापुरुष चुने जा चुके होंगे। तू वही दुनिया देखगा जिसकी नीव आज इस तरह रखी जा रही है।

रामू नीव रखने के लिए कहाँ, वह लोग तो तुम्हें पोशाक बनाने के लिए कह गये हैं।

मगन अभी तू नही समझेगा। पर सुन यह पोशाकें मैं नही तू ही बडा हो कर बनाएगा। यह लाग तो अब इतने दिनों तक जिन्दा रहेंगे ही, पर मेरा ठिकाना नही है।

रामू क्यों?

मगन बहस मत कर ध्यान से सुन! इन पोशाकों को बनाना तेरे जीवन का सबसे पहला शानदार काम होगा। तुझे इन लोगों के लिए एक कुर्ता, एक छोटी और एक बडी बाँह

का, और एक पाजामा, एक छोटी और एक बडी टाँग का बनाना होगा, जिससे अभिनन्दन के बाद सीताराम और वाणी दास जमाने से शिकायत न करके तुमसे आ कर करें। आदतन यह देश भी वही करेगा जो ये लोग करेंगे। और जिस देश के लोग अपने दर्जी से शिकायत करते हैं, वह देश कभी गलत कदम नही उठा सकता। (आँखें मूँद लेता है जैसे भविष्य में देख रहा हो।)

रामू देश के टाँग कहाँ होती है, मास्टर! जो कदम उठाए! अगर होती तो तुमने उसके लिए भी मेरा सा जाँघिया सी दिया होता। [मगन लोहे का गज लेकर रामू को मारने के लिए धमकाता है। रामू भाग जाता है। मगन उसके बचपन पर हँस कर सिर हिलाता है, मानो कह रहा हो—अभी बच्चा है समझ जाएगा। आहिस्ते से गज दीवार से टिका देता है।]

तीनों कारीगर

सूरज की सुई है धूप का तागा
चन्दा की सुई है लुनाई का तागा
दिन दिन हमने सिया रात रात हमने सिया
एक पल आँख लगी समय ले कर भागा
सूरज की सुई है

[गाते गाते पर्दा गिर जाता है।]

• • •

उत्तर का प्रश्न

[शाम का समय। एक कमरा, जिसके सामने एक सड़क है और दाहिनी ओर एक गली। गली जहाँ सड़क से मिलती है वहाँ एक 'लैम्प पोस्ट' है। कमरे में पीछे बीच में एक दरवाजा है और दाहिने, सामने की ओर एक खिड़की है, जो गली में खुलती है। कमरा खाली-सा है। पीछे दाहिनी ओर फ़र्श पर एक दरी बिछी हुई है और बायीं ओर एक लम्बी मेज़ पर कुछ पुरानी किताबें पड़ी हैं। सामने बायीं ओर एक स्टूल पड़ा है। महिम स्टूल पर घुटना पर कोहनियाँ और हथेलियों पर ठोडी टिकाये शान्त बैठा एकटक सामने देख रहा है। ऋषि और राहुल बात करते हुए सड़क पर घूम रहे हैं। कपड़े गरीब विद्यार्थियों की तरह हैं। ऋषि लम्बा और राहुल ठिगना है।]

ऋषि (राहुल के कंधे पर हाथ रखते हुए) तुम्हें याद है ?

राहुल हाँ, ऋषि! सब याद है। (हँस कर ऋषि को देखता है।)

ऋषि क्या याद है ?

राहुल सब लेखकों के नाम, किताबों के शीर्षक और उनका प्रकाशन-इतिहास।

ऋषि (माथे पर सलवट डाल कर राहुल की ओर देखते हुए) और कथानक ?

राहुल (सामने देखते हुए और एक कल्पित कंकड़ को ठोकर मारते हुए) तुमने जितनी आलोचना याद कर ली है उसको पुष्ट करने के लिए मैंने वही वही भाग पढ़ रखे हैं।

ऋषि काम चल जाएगा न राहुल !

राहुल हाँ! (ऋषि कंधे पर से हाथ हटा लेता है।)

ऋषि चलो आज की रात महिम के कमरे में काटें! वह दशक का

काम अच्छा करता है ।

राहुल हाँ, बस दशक का हा समझो । (जेब में हाथ कभी नसर्गिक प्रश्न पूछ देता हू बस ।

ऋषि हाँ, पर नसर्गिक प्रश्न का भी तो अपना व और देखता है ।)

राहुल (सिर ऊँचा करके ऋषि की ओर प्रश्नात्म जो प्रश्न नैसर्गिक नही है, क्या उसका वजन

ऋषि उसका वजन आवश्यक नहीं है । जब कि व होना आवश्यक भा है ('भी' पर जोर देव भी ।

राहुल अच्छा, यह नसगिक की परिभाषा क्या है पूरी तरह स समझ नही पाया हूँ । (सिर हिल

ऋषि जिस दिन समझ जाओगे, यह शब्द इतिहास भाषित शब्द कभी जिन्दा नही रह सकता ।

राहुल तब तो भाषा द्वारा हम मौलिक विचार वि सकते ।

ऋषि हाँ, नही कर सकते हैं । महज वह बात कह मालूम है ।

राहुल तब उ हें कहन की कोई जरूरत ही नही है ।

ऋषि इसीलिए बिना जरूरत कभी बोलना नही चा

राहुल (चलते चलते रुक कर) और हम लोग क्या व

ऋषि (अवाक् हो कर राहुल की ओर देखता है ।)

[दोनों चुपचाप चल कर 'लैम्प-पोस्ट' है । गली म मुड़ कर दोनों खिड़की क

आये! ऋषि किशी, राहुल पाहुल।

[यह सुन कर ऋषि राहुल को, बाँह पकड़ कर, सड़क पर लौटा लाता है। गम्भीर हो कर लैम्प' के नीचे खड़े हो कर दोनों बातें करते हैं। अन्दर, महिम मेज पर जा कर किताबों के ऊपर लेट जाता है—खिड़की की ओर सिर करके और दशकों की ओर मुँह करके।]

राहुल (कुछ नाराज़ हो कर) तुम मुझे खींच क्यों लाये?

ऋषि देखा नहीं तुमने, महिम इन्तज़ार कर रहा था।

राहुल तब तो हम लोगों को अन्दर चलना चाहिए था।

ऋषि उसे इन्तज़ार करने का अधिकार है। क्या वहाँ पहुँच कर हम उसकी इन्तज़ारी में बाधा नहीं डालते।

राहुल पर वह तो हमारा ही इन्तज़ार कर रहा था।

ऋषि हम किसी भी कार्य के ध्येय को नहीं, महज़ कार्य प्रणाली को देख सकते हैं।

राहुल (वाद विवाद की चुनौती को स्वीकार करते हुए) तब मूल्य निर्धारण का नियम कैसे लागू होगा?

ऋषि (जैसे इस प्रश्न की प्रतीक्षा कर रहा था।) बिलकुल ठीक सवाल उठाया तुमने, हम कार्य-प्रणाली का ही वज़न नापेंगे।

राहुल (दूसरे ढंग से प्रश्न पर विचार करते हुए) अच्छा ठीक है, पर हमें भी तो अपने मित्र के कमरे में घुसने का अधिकार है।

ऋषि हाँ, है। (दोनों अलग अलग ढंग से लैम्प' के नीचे बैठ जाते हैं।)

राहुल (विजय से) तब हम अपने को अपने अधिकार से वंचित क्यों रखें? अगर तुम इसमें कोई त्याग की भावना पा रहे हो तो बात दूसरी है पर मैं तो इसे भावुक होना ही मानूँगा।

ऋषि बात तुम ठीक कर रहे हो। तब हम क्या कर सकते हैं?

राहुल (जैसे ऋषि की बात न सुनी हो) और यह भी हो सकता है कि हमारा मित्र इतने बड़े कमरे में अकेला बैठा-बैठा घबड़ा

काम अच्छा करता है।

राहुल हाँ, बस दर्शक का ही समझो। (जेब में हाथ डालते हुए) कभी कभी नैसर्गिक प्रश्न पूछ देता हूँ बस।

ऋषि हाँ, पर नैसर्गिक प्रश्न का भी तो अपना वजन है। (राहुल की ओर देखता है।)

राहुल (सिर ऊँचा करके ऋषि की ओर प्रश्नात्मक मुद्रा में देखते हुए) जो प्रश्न नैसर्गिक नहीं है, क्या उसका वजन नहीं है?

ऋषि उनका वजन आवश्यक नहीं है। जब कि वजन के लिए नैसर्गिक होना आवश्यक भी है ('भी' पर जोर देता है।) और काफी भी।

राहुल अच्छा, यह नैसर्गिक की परिभाषा क्या है? मैं अभी तक इसे पूरी तरह से समझ नहीं पाया हूँ। (सिर हिलाता है।)

ऋषि जिस दिन समझ जाओगे, यह शब्द इतिहास बन जाएगा। परिभाषित शब्द कभी जिन्दा नहीं रह सकता।

राहुल तब तो भाषा द्वारा हम मौलिक विचार विनिमय कर ही नहीं सकते।

ऋषि हाँ, नहीं कर सकते हैं। महज वह बातें कह सकते हैं जो सबको मालूम हैं।

राहुल तब उन्हें कहने की कोई जरूरत ही नहीं है।

ऋषि इसीलिए बिना जरूरत कभी बोलना नहीं चाहिए।

राहुल (चलते चलते रुक कर) और हम लोग क्या कर रहे हैं?

ऋषि (अवाक् हो कर राहुल की ओर देखता है।)

[दोनों चुपचाप चल कर 'लैम्प-पोस्ट' के पास पहुँच जाते हैं। गली में मुड़ कर दोनों खिड़की के पास पहुँच कर ठिठक जाते हैं। अन्दर कमरे में महिम सहसा खड़ा हो कर बोलने लगता है।]

महिम नहीं आये, नहीं आये नहीं आये। अच्छा हुआ दोनों नहीं

आये ! ऋषी-किशी, राहुल पाहुल !

[यह सुन कर ऋषि राहुल को, बाँह पकड़ कर, सड़क पर लौटा लाता है। गम्भीर हो कर 'लैम्प' के नीचे खड़े हो कर दोनो बातें करते है। अन्दर, महिम मेज पर जा कर किताबो के ऊपर लेट जाता है—खिडकी की ओर सिर करके और दर्शको की ओर मुह करके।]

राहुल (कुछ नाराज हो कर) तुम मुझे खींच क्यो लाये ?

ऋषि देखा नही तुमने, महिम इन्तजार कर रहा था।

राहुल तब तो हम लोगों को अन्दर चलना चाहिए था।

ऋषि उसे इन्तजार करने का अधिकार है। क्या वहाँ पहुँच कर हम उसकी इन्तजारी में बाधा नही डालते !

राहुल पर वह तो हमारा ही इन्तजार कर रहा था।

ऋषि हम किसी भी कार्य के ध्येय को नही, महज कार्य प्रणाली को देख सकते हैं।

राहुल (वाद विवाद की चुनौती को स्वीकार करते हुए) तब मूल्य-निर्धारण का नियम कैसे लागू होगा ?

ऋषि (जैसे इस प्रश्न की प्रतीक्षा कर रहा था।) बिलकुल ठीक सवाल उठाया तुमने, हम कार्य प्रणाली का ही वजन नापेंगे।

राहुल (दूसरे ढग से प्रश्न पर विचार करते हुए) अच्छा ठीक है, पर हमें भी तो अपने मित्र के कमरे में घुसने का अधिकार है।

ऋषि हाँ है। (दोनो अलग अलग ढग से 'लैम्प' के नीचे बैठ जाते है।)

राहुल (विजय से) तब हम अपने को अपने अधिकार से वचित क्यो रखें ? अगर तुम इसमें कोई त्याग की भावना पा रहे हो तो बात दूसरी है पर मैं तो इसे भावुक होना ही मानूगा।

ऋषि बात तुम ठीक कर रहे हो। तब हम क्या कर सकते हैं ?

राहुल (जस ऋषि की बात न सुनी हो) और यह भी हो सकता है कि हमारा मित्र इतने बडे कमरे मे अकेला बैठा बैठा घबडा

जाए। उसे फिर शून्य का साक्षात्कार होने लगे। महिम कुछ पागल है, तुम तो जानते ही हो।

ऋषि भाई, तुम सौ ओ पैसा ठीक कह रहे हो। मान लिया। फिर ज़रूरत से ज्यादा अपनी बात साबित कर रहे हो। यह जोश का द्योतक है और जोश गुण नही है। भावुकता का भण्डा है।

राहुल (जोश में आते हुए) पर यह न कहना कि कपडो के अन्दर शरीर है, अनैतिकता है।

ऋषि और उसे चिल्ला चिल्ला कर कहना भावुकता है। (उतने ही जोश के साथ।)

राहुल (शान्त और गम्भीर स्वर में) अनैतिक होने से भावुक होना बेहतर है।

ऋषि (शान्त और गम्भीर हो कर) दो दोषो में कोई चुनाव नही हो सकता। सर्दी में ठडे पानी की दो बाल्टियो में से किसके पानी में मुह धोया जाए, यह सोचना अपनी नैतिक गरीबी को न मानना है। और यह स्थिति रूमानी है।

राहुल रूमानी और नसर्गिक में बहुत बारीक अन्तर है, इस खतरे से तुम वाकिफ हो या नही।

ऋषि हूँ, पर दोनो दो हैं यह भी जानता हूँ।

राहुल पृथकता का एहसास काफी नही है। पानी की बाल्टियाँ भी दो थी। मै चुनाव करता हूँ तो नसर्गिक हूँ, तुम चुनाव नही करते हो तो रूमानी हो।

ऋषि यह तो टौ टो लौ जी है।

राहुल मै जो कहू वह बकवास है, तुम जो कहो दर्शन है। यह क्या अट्ठारहवी शताब्दी का ढग अपनाया है तुमने।

ऋषि मैं समझता हूँ अट्ठारहवी शताब्दी फिर छम-छम करेगी।

राहुल (आराम से बठते हुए) अपनी बात साबित करने के लिए अट्ठारहवी शताब्दी को छमछमवाना मैं-वाद है और मैं-वादी

होना अन्तर्राष्ट्रीयता का विद्रोह करना है। तुम क ख ग घ सब की शपथ को तोड रहे हो।

ऋषि (हार मानते हुए) आज म किसका मुह देख कर उठा था ?

राहुल अपना।

ऋषि आज मैंने क्या खाया था ?

राहुल भुट्टा।

[दोनो चुप विचारो म खो-से जाते ह। अन्दर महिम बड बडाना शुरू करता है।]

महिम मैं पागल नही हूँ क्योंकि मैं जानता हू कि मैं पागल नही हूँ। (उठ कर मेज पर बठ जाता है और नाचे पैर लटका कर उन्हें ज़ोर ज़ोर से डुलाता है।) मै जानता हूँ कि म अपने पैर हिला रहा हूँ। जो काम मै जान कर करता हूँ वह मेरे पागलपन की निशानी नही हो सकती। (मेज स उतर कर कानो म अँगूठे डाल कर और उँगलियाँ फना कर मुह बिराता है।) यह सब मैं जानबूझ कर कर रहा हूँ इसलिए इनके लिए उत्तरदायी हूँ। पागल आदमी नही जानता कि वह क्या कर रहा ह और वह अपने कर्मों के लिए उत्तरदायी नही होता। (जल्दी-जल्दी कमरे म घूमने लगता ह।) मैं जानता हूँ दुनिया मुझे पागल क्या कहती ह। पागल इसलिए कहती ह कि मैं वह सब देख सकता हूँ जिसे दुनिया अपने से छुपाना चाहती है। मुझे पागल करार कर देना उसके लिए बहुत सुविधाजनक हो जाता ह। उन्हे एक छाता मिल जाता ह, जिसे लगा कर वे आराम से घूमें और मै नाहक बरसता रहू। मसलन मैं जानता हूँ कि हर आदमी अकेले कमरे म बठ कर मुह बिराता ह और शीशे के सामने कपडे उतार कर खडा होना चाहता ह। (चलते चलत सहसा रुक जाता है।) पर कभी कहता नही क्योंकि वह आदमियत स गिर जाएगा।

आदमियत न हो गयी सूखी नीम की पत्ती हो गयी जरा से म डह जाएगी। (धीरे धीर चलत हुए और बीच-बीच में स्टूल इधर स उधर उठा कर खिसकाते हुए और उसका चक्कर काटते हुए) ऐसी आदमियत से तो मछलियत अच्छी है—मछलियत। म यह भी जानता हूँ कि अकेले में आदमी ससार भर को गाली देता है, पर बाहर निकलता है तो ऐसी मीठी हँसी हँसता ह और इतना लाड टपकाता घूमता ह कि मानो सारा ससार उसका आँगन है और सब मेहमानो से उस प्रेम है। हर राह चलता हुआ आदमी उसका भाई ह। और मैं जानता हूँ राह चलते हुए भाइयो को भी। इतने प्रेम स मेरी ही मेज बिछा कर मुझे ही बठने को बुलाएँगे कि मानो अब मेरे बिना उनका जीवन सूना ह। (मेज के पास स्टूल रख कर बठ जाता ह)। मै यह जानते हुए कि यह सब धोखा ह उनकी बिछाइ हुई मेज पर जा कर बठ जाता हूँ, पागल हूँ न इसी-लिए! फिर मौका मिलते ही जलाने के लिए मेज की टाँगें तोड कर वे भाग जाएँगे और मै ऊपर के हिस्से को हाथा पर सँभाले बठा रह जाऊँगा, पागल हूँ न! जिनमे इतनी भी तहजीब नही है कि भाग जाए, वे मेरे ही सामन छुरा निकाल कर खीस निपोरे इधर उधर घूमेंगे। और म उन्हें भार-मुक्त करने के लिए अपना पीठ अर्पित कर दूँगा—पागल हू न! (ज़मीन पर बठ स्टूल को अपने बाहुपाश में बाँध लेता ह और सीट पर ठोडी रख लेता है।) कभी-कभी लोग मेरे पागलपन के कारण मुझे बहुत भाग्यवान भी कहते हैं। यह चाल दुनिया की सबस अजब चाल ह। दूसरे के तिनके को आदमी खुर्दबीन से देखता है और अपनी पाल लगी नाव को अपनी मेहनत का परिणाम मान लेता ह। जो भाग्य स नही मिली उस बाँटने की उलझन नही रहती। नि सकोच भोग अधिकार

बन जाता है। मुझे इस बात मे स्वार्थ दीखता ह क्योकि मैंने सोचने की शक्ति खो दी है। (धीरे धीरे मुसकराना आरम्भ करता ह। जब दाँत दीखने लगते है तो धीरे धीरे मुसकराना बद करता है।) लोगा के अनुसार म भाग्यवान हूँ क्योंकि अपने से ही इतनी बातें कर लेता हूँ। वे बेचारे बहुत मेहनत से कोई बात कर पाते हैं इसलिए आपस तक सीमित रखते हैं। वार्तालाप के सुख की उन्हें ही जरूरत ह। मुझे नही—! मुझे भाग्यवान साबित कर धीरे धीरे मुझसे सब अधिकार छीन लिये गये है। सब गिनाऊँ तो सारी जिन्दगी इसी में गुजर जाए—और मैं और पागल कहलाऊँ! मैं अब नही बोलूगा। चुप बैठूगा। साले अभी तक नही आये। अगले जन्म मे कछुए और मगर की योनि में पैदा हो दोनो के दोनो! (उठ कर स्टूल पर विचारों में खोया सा बैठ जाता ह।)

[एक आदमी खट पट करता हुआ बायें से सडक पर आता ह और गली के पास पहुँच कर उसमें मुड जाता है। उसके चलने की आहट स राहुल और ऋषि क विचारो की तन्द्रा टूट जाती ह।]

राहुल (चौक पर उठते हुए) देखें महिम ने शायद इन्तजार करना बन्द कर दिया हो!

[राहुल उठ कर दबे कदम रखता हुआ खिडकी के पास जाता ह। पास पहुँच कर घुटनों के बल जमीन पर बैठ जाता ह। सिर धीरे धीरे उठा कर अन्दर झाँकता ह। फिर फौरन सिर नीचे कर लेता ह। दौड कर ऋषि के पास जाता ह और कहता ह, "हे ईमानदारी, हे दर्शन, हे नतिकता! वह तो अभी तक बैठा इन्तजार कर रहा ह।" ऋषि को उदास देख कर वह भी चुप हो जाता ह। दोनो आलथी-पालथी मार एक-दूसरे के सामने इस प्रकार बैठ जाते ह मानो सडक पर

ाही अपने कमरे मे बठे हों ।]

राहुल (कुछ दर के चितन के बाद) मुझे एक उपाय सूझा ह ।

ऋषि (उत्सुकता दिखाते हुए) क्या ?

राहुल हम दोनो महिम क कमरे में चलें और उसे पहिचानें ना । हम लोगो का मित्र के कमरे में घुसने का अधिकार और उसका हमारा इन्तजार करने का अधिकार, दोना पूरे हो जाएँगे ।

ऋषि (उठ कर राहुल को गले लगा लेता हैं ।) काश मेरे पास एक विश्वविद्यालय होता, जिसमें तुम्हें मैं दशन विभाग का अध्यक्ष बना सकता । चलो चलें !

[राहुल और ऋषि दोना गली में घुम जाते ह । पीछे वाला दरवाजा खोल कर प्रसन्न मुद्रा में महिम के कमरे में प्रवश करत हैं । अन्दर आ कर दरवाजा बन्द कर दते हैं । आवाज से चौंक कर महिम की तन्द्रा टूट जाती ह । वह प्रसन्न हो कर इन लोगा की ओर देखता ह । पर वे लोग बिना महिम की ओर देखे हुए, जा कर बैठ जाते ह और दरी के नीचे रखी शतरज को निकाल कर बिछाने लगते ह ।]

महिम (हार कर बोलता हैं ।) आ गये तुम लोग ! मैं कब से तुम लोगों का इतजार कर रहा हूँ !

राहुल (ऋषि और राहुल की नजरें मिलती हैं ।) कहा था न मैंन !

ऋषि हाँ ! (फिर दोना मोहरे लगाने में लग जाते हं ।)

महिम अबे ओ राहुल के बच्चे ! सुनता है कि नही ।

ऋषि (राहुल से) कौन ह यह, तुम इसे जानते हो क्या ?

राहुल (आखा पर हथेली का छाया कर महिम की ओर देखता ह । फिर ऋषि से) सूरत तो पहचानी सी लगती ह, पर और अधिक मैं इसक बारे मे कुछ नही जानता ।

ऋषि बडी बेतकल्लुफो से पुकार रहा था तुम्हें ! लगता ह, पागल ह ।

राहुल अपने से ही बात कर रहा होगा । बडा भाग्यवान ह ।

[महिम हस कर स्टूल पकड लेता है और उठ कर खडा हो जाता है। पर स्टूल छोडता नही इसलिए साथ में वह भी उठ जाता है। यह महसूस कर महिम फिर स्टूल नीचे रख कर बैठ जाता है।]

राहुल (महिम को यह हरकत देखकर हँस कर ऋषि से कहता है) इस दुनिया में ढूढो एक मिलते हजार हैं किसने कहा है, मुझे तो ठीक से याद भी नही है।

ऋषि गालिब ने। तुम तो कह रहे थे लेखको के नाम तुमने याद कर लिये है और यह हाल है?

राहुल भई इतनी बुद्धि तो मेरे भाग्य में बदी नही है कि सब कुछ याद कर लूं। हाँ, अगर कोई मुझसे कुछ उधार ले जाता है तो जरूर याद रखता हूँ और यह खूबियत मैंने बडी मेहनत से पैदा की है।

ऋषि मैं तो भूल जाता हूँ क्योकि हर आदमी को अपना भाई समझता हूँ, पता नही मैंने कब किससे क्या चीज ली हो और वह उलट कर मुझी से माँगने लगे।

राहुल यह तो अपन अपने जीवन का दशन है। (बातचीत को मोड देते हुए।)

ऋषि (चुनौती स्वीकार करते हुए) जीवन का दशन क्या अपना-अपना हो सकता है। वह तो सावभौमिक होना चाहिए।

महिम (क्रोधवश मुश्किल स शब्द निकालते हुए) ए सावभौम की सन्तान! क्या तू भी मुझे नही पहचानता?

[ऋषि और राहुल चौंक कर एक-दूसरे का मुह देखने लगते ह मानो इस अप्रत्याशित बाधा के लिए वे तैयार न हो।]

महिम (एक एक शब्द पर जोर देते हुए) मैं महिम हूँ और आप लोग मेरे घर में बैठे हुए है।

राहुल (हँस कर) अच्छा, आप महिम है! आइए न हम लोग आप-

से मिलने के लिए बहुत इच्छुक हैं। (पास ही दरी पर हाथ पटक्ते हुए) आइए, बैठिए, आपके बिना कितना सूना लग रहा था।

ऋषि इन्ही की बात तुम कर रहे थे क्या ? पूछ लो हम इनकी इन्तजारी में बाधा तो नही डाल रहे ह।

राहुल (महिम की ओर देख कर) महिम जी ! हम लोग आपकी इन्तजारी मे बाधा तो नहीं डाल रह हैं ?

महिम नही आप लोग बाधा डालना तो दूर रहा, मेरे कमरे में पधार कर मुझे कृताथ कर रहे ह। कहिए क्या सेवा करूँ ? (आ कर दरी पर बैठ जाता है।

ऋषि (राहुल से) अब हम लोग इसे पहिचान कर अनाधिकारिक चेष्टा नही करेंगे।

राहुल नही।

महिम आप लोग मुझे पहिचानने में सकोच कर रहे ह। अभी लात मार कर बाहर निकाल दूँगा तो अक्ल ठिकाने लग जायगी।

राहुल अरे भाई गरम क्यों होते हो, हम लोग तो तुम्हें इसलिए नही पहिचान रहे थे कि कही तुम्हारे इन्तज़ार करने के अधिकार से तुम्हें तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध वचित न कर दें।

महिम कितने हितैषी हैं आप लोग !

रा ऋ (झुक कर एक साथ) यह आपका विनय ह !

ऋषि हटाओ यार यह बाज़ी ! खेल में मन नही लग रहा है।

राहुल हाँ लग तो मेरा भी नही रहा है, क्या कारण हो सकता ह ?

ऋषि हमी ने हाल में अमरीका में कुछ जापानी चूहो पर प्रयोग करके यह निष्कष निकाला है कि जब वे भूखे होते ह उनका खेलना कूदना बन्द हो जाता ह।

राहुल क्या उसका यह निष्कप मनुष्य पर लागू नही हो सकता ?

ऋषि मेरा ख्याल है कि होना चाहिए। डेविडसन के आँकडों से

लगता ह, और सैय्यद नासर ने उसका समर्थन किया है, कि वहाँ मनुष्य की इतनी कमी है कि चित्रकारो को अब 'माडेल' नही मिलते है और वे इसलिए ऊटपटाँग चित्र बनाने मे लग गये है। शायद इसीलिए हम्फी अपना प्रयोग मनुष्यो पर नही कर सका। उसकी मजबूरी को देखते हुए उसके निष्कष को मनुष्य पर न लागू करना अन्याय होगा।

राहुल क्या भई, महिम! मै तुम्हारी राय का कायल हूँ। तुम क्या समझते हो? भूखा आदमी क्या खेल म मन लगा सकता है? अपना उत्तर बेचारे हम्फी द्वारा चूहा पर किये गये प्रयोगा की रोशनी में देना।

महिम चूहों पर शायद उसका निष्कष लागू न हो, पर बिना हम्फी और डेविडसन का पढे मैं कह सकता हूँ कि भूखा आदमी खेल में मन नही लगा सकता है।

ऋषि देखो मेरी बात सही निकली न! (हँस कर राहुल की ओर देखता है।)

राहुल (गम्भीर हो कर) हो सकता है, पर इसका उपाय क्या है?

[दोना महिम की ओर देखने है। महिम उठ कर मेज़ के पास जाता ह। दराज खोल कर एक दोना निकालता है, जिसमें ३ ४ समोसे हैं। दोना ला कर दरी पर रख देता है और बैठ जाता है। लोग समोसा खाने लगते हैं।]

ऋषि मेरा एक प्रश्न ह और इस पर मैं तीन वर्षों से विचार कर रहा हूँ। (राहुल और महिम पर नजरें डालता ह प्रभाव देखने के लिए। पर वे लोग समोसा खाने में व्यस्त रहते हैं।) ह० प्र० द्विवेदी क अनुसार तुलसीदास नामक लेखक ने कही लिखा है 'एक थे राम।' क्या यह सही है, और अगर ह तो इसका ऐति हासिक दायित्व क्या ह?

राहुल आप अपना प्रश्न और साफ करके कहें।

ऋषि मेरी धारणा है कि अगर द्विवेदी का दावा सही है तो काफ़ी बारीक विश्लेषण में हमेशा यह साबित किया जा सकता है कि इतिहास दूसरा रास्ता अख़्तियार करता। वह एक ऐसी स्थिति थी जब इतिहास के सामने दो ही रास्ते थे और एक का चुनाव इस पर निर्भर करता था कि राम थे कि नहीं। यदि तुलसीदास ने वाकई में लिखा है कि राम थे' और यह हमें द्विवेदी के शोध ग्रंथ से ज्ञात होता है और वे सही हैं, तो आज हम लोगों का यहाँ इस समय एकत्रित होना अ-ऐतिहासिक है। और जो अ-ऐतिहासिक है वह अनैतिक भी है।

राहुल वह कैसे ? (आख़िरी समोसा उठा कर खाते हुए।)

ऋषि *परिभाषा से, और कैसे !*

राहुल पर परिभाषा ग़लत हो सकती है !

ऋषि वह बात दूसरी है, पर यदि हम इस परिभाषा को मान लें तो यही सत्य निकलता है।

राहुल तब तो उत्तर आसान हो जाता है। क्योंकि हम लोग एकत्रित हैं इसलिए साफ़ है कि द्विवेदी ग़लत है और तुलसीदास ने कहीं *नहीं लिखा कि 'राम थे'* !

ऋषि (कुछ हतप्रभ होते हुए) यह हो सकता है पर इस प्रकार हम आज के बाट से इतिहास को तोल रहे हैं।

राहुल और कोई चारा भी तो नहीं है। (झुक कर दोने में देखता है।) समोसे ख़त्म हो गये। (दोना उठा कर महिम को दे देता है। महिम उठ कर दोना खिड़की से बाहर फेंक देता है। दरी की ओर लौटता है। राहुल उसे हाथ उठा कर मना कर देता है।) महिम यह तुम्हारा घर है, तुम्हें ऊँचे स्थान पर (स्टूल की ओर इशारा करता है) बैठना चाहिए !

[महिम स्टूल पर आ कर बैठ जाता है ऋषि और राहुल दरी पर लेट जाते हैं।]

राहुल इधर मैं भी शकाग्रस्त रहा हूँ। आप लोग समाधान करें। मैं यह जानना चाहता हूँ कि दिन रात का कारण है कि रात दिन का कारण है।

ऋषि दोनो म यह सबध नही ह।

राहुल यह म भी सोचता था। पर हम निश्चय कैसे कर सकते है कि दोनो में यह सम्बन्ध नही है।

ऋषि क्योकि सम्बन्ध बहुत साफ दीखता है और जो बहुत साफ दीखता है वह ग़लत होता है। लुकाचिको इसी प्रश्न पर विचार कर चुका ह और यही उत्तर उसने दिया है।

राहुल तो क्या हुआ। अगर हम इसे अक्ल को बुता कर देखेंगे तो साफ नही दिखेगा। हाँ इस कठिन काम से बचना चाहें तो बात दूसरी है। लुकाचिको के सामने यह प्रश्न नही था क्योकि तब तक नतिकता इतनी विकसित नही हुई थी। अब तो कार्य से पीछे हटना अन्तर्राष्ट्रीय लोक मगल के खिलाफ है। क्या महिम।

महिम ठीक कहते हो।

[कुछ देर शान्ति रहती ह। सब विचार मग्न दीखते हैं।]

महिम (चौंक कर) एक प्रश्न मेरा भी ह—आदमियत क्या है? (वह दरी की ओर देखता ह। ऋषि और राहुल सो गये ह और खुर्राटे भर रहे हैं। अपनी आर देखता ह और फिर स्टूल की ओर। दोनो पैर ऊपर चढा कर यह कहता हुआ 'मैं पागल हू" घुटना के बीच मुह छिपा लेता ह।)

• • •

रेल कब आएगी

पात्र



व्यक्ति	शंकर	सीता	बापू
एक आदमी	चाचा	मुसाफिर	
टिकट बाबू	नवयुवक	अफसर	
दूसरा अफसर	दरोगा		
स्टेशन मास्टर	मंत्री		



[लाटफारम पर शकर एक बड बक्स के ऊपर बठा दार्शनिक मुद्रा में सिगरेट पी रहा है। एक व्यक्ति पास आ कर खड़ा हो जाता है।]

व्यक्ति : (शकर के पीछे किसी स्थान को देखते हुए ऐसे स्वर में कि शकर सुन ले) रेल कब आएगी। बहुत देर हो गयी ।

शकर (वैसे ही बठा रहता ह।)

व्यक्ति : (शकर की ओर देख कर प्रश्नात्मक स्वर में) समय क्या ह ?

शकर (सिगरेट की राख झाड कर) यह बहुत मुश्किल सवाल है। अपनी जिन्दगी के पिछल दम वर्षों से मैं इसी पर विचार कर रहा हूँ पर अब तक किसी नतीजे पर नही पहुँच पाया हूँ।

व्यक्ति : (एक एक शब्द अलग-अलग बोलते हुए) म पूछ रहा हूँ इस समय समय क्या ह ?

शकर (आग झुक कर) अब तो आपन सवाल और भी मुश्किल बना दिया। पुरान विचारका ने समय को पृथक् अटूट और अनादि काल से अनन्त काल की ओर समगति से प्रवाहित पाया था। पर अब, लगता ह समय वह समय नही रहा। या यू कहना उचित होगा कि समय जो था वह अब भी है पर उसके बार म हमारी धारणाएँ ।

व्यक्ति (खीज कर) क्षमा करिएगा। मन एक सीधा सवाल पूछा था। अगर आप उसका सीधा उत्तर नही दे सकते तो रहन दीजिए। (झटके से अपना मुह बन्द कर लता ह, जैसे नाराज हो गया हो)

शकर (जरा मुसकुरा कर, स्वगत भाषण के स्वर म) लगता ह, आप नाराज हो गये और मेर और आपक बीच में कोई गलत फहमी हो गयी ह। लगता है, मैंन आपका सवाल ठी

समझा नही। सवाल ठीक से समझ लेना आधा उत्तर दे देने के बराबर होता है। आइए, हम लोग बातचीत फिर से शुरू करें। (सिर उठा कर) हाँ, तो आपका प्रश्न क्या था?

व्यक्ति आपका सिर।

डाकर (अपना सिर टटोलते हुए) मेरा सिर तो ठीक जगह पर रखा हुआ है, इसमें तो कोई गड़बड़ी नही है (वह व्यक्ति खीज कर चला जाता है)। या है। (अपने कंधे एक बार उचका कर फिर सिगरेट पीने लगता है।) सिर भी एक अजब चीज है।

[दो तीन आदमियों को लिये हुए एक लड़के और एक लड़की का राम और सीता की वेशभूषा में प्रवेश।]

सीता (सामने आ कर इधर उधर देखती है।) रेल किधर से आएगी बाबू?

बाबू चल इधर, उधर कहाँ जा रही है?

एक आदमी अब की ये रामलीला ठीक से गुजर जाए तब जानो।

चाचा : मैं बारह साल तक भरवारी में राम बना, कभी लड़ाई झगड़ा नही हुआ। सब लोग बड़ी श्रद्धा से देखा करते थे। अब भइया, श्रद्धा तो कही रही नही। (एक बीड़ी सुलगाता है। राम की तरफ देख कर) तू पिएगा?

राम दे दो चाचा, पता नही रेल कब आएगी, शायद रात भर जागना पड़े। (एक बीड़ी ले कर सुलगा लेता है।)

चाचा (डींग हाँकने के स्वर में) मैं जब राम बनता था तब रेल-गेल से नही, बलगाड़ी से जाता था। बस्ती के बाहर मेरे लिए हाथी आता था, बाजा आता था। एक जमाना वह आ गया है कि यहाँ से वहाँ तक सब जात के लोगो के साथ रेल पर और फिर टेसन से रामलीला के मैदान तक

बाबू (सँभल कर, शंकर से) आप कौन हैं ?

शंकर शंकर।

चाचा (हँस कर) अरे, यह तो भोलानाथ है इनकी बात का बुरा न मानो।

बाबू नहीं, यह छगू को बहका रहे हैं।

एक आदमी अरे कौन यहाँ जिन्दगी काटनी है। अभी रेल आएगी और हम सब चले जाएंगे। थोड़ी देर के लिए दिमाग खराब करने से क्या फायदा है। (कैसा प्रभाव पड़ा यह जानने के लिए चारों ओर देखता है।)

शंकर बच्चों के सवालों का जवाब न देने से उनका दिमाग बन्द हो जाता है। एक दिन वह सवाल पूछना बन्द कर देंगे। तब तुम क्या करोगे ?

बाबू जब अकल आ जाएगी तब सवाल पूछना अपने आप बन्द कर देंगे। उसमें हमें क्या करना है।

शंकर (बाबू की ओर घूम कर) अक़ल आने का यह मान तुम समझते हो। अक़ल आने पर आदमी और ज्यादा सवाल पूछता है। अभी तुम्हारे आने के पहले एक आदमी ने मुझसे बहुत अच्छा सवाल पूछा—समय क्या है ? मैं इसका उत्तर कैसे दूँ ? (चाचा चुपके से जल्दी जल्दी राम और सीता को वहाँ से हटा कर एक तरफ बैठा देता है। फिर हाथ पकड़ कर बाबू और साथ के आदमी को भी ले जाता है और इशारे से बताता है कि लगता है शंकर का दिमाग फिर गया है, दूर रहना चाहिए।) वैसे शायद वह पूछना कुछ और चाहता था पर भाषा की बनावट की वजह से पूछ गया कुछ और। अगर थोड़ी देर के लिए मैं मान लूँ कि वह जो पूछना चाह रहा था वही मैं समझा भी था, तो भी (सब चले गये महसूस कर चुप हो जाता है।)

[एक पहले दर्जे का मुसाफिर कुली के सिर पर सामान रखवाये एक टिकट जाँचने वाले के साथ आता है। नाटक के दौरान टेसन पर भीड धीरे धीरे बढ़ती है और बीच-बीच मे गाडी आने की घटी बजती है पर गाडी आती नही। न ही कोई घटी की परवाह करता है।]

मुसाफिर कुली, सामान यही रख दो! (कुली सामान रख देता है।) अभी यही ठहरो। (कुली बैठ जाता है।)

टिकट बाबू मैं अब जा रहा हूँ।

मुसाफिर नही, आप नही जा सकते। मुझे जगह दिलवा कर जाइएगा।

टिकट बाबू साहब, इसमे मैं कुछ नही कर सकता हूँ। छोटा टेसन है, यहाँ एक ही सीट का कोटा है। और आपका नाम सुरक्षित स्थान की सूची में नही है। अब मैं क्या कर सकता हूँ?

मुसाफिर मैं यह सब कुछ नही जानता। मैं इस गाडी से, इसी दर्जे में, इसी सीट पर, इसी समय जाऊगा और तुम मुझे नही रोक सकते।

टिकट बाबू अगर जगह दूसरे के नाम सुरक्षित है तो मेरा कर्त्तव्य होगा कि वह जगह मैं उस मुसाफिर को दिलवाऊँ।

मुसाफिर मैं मैं तुम्हे तुम्हारे कर्त्तव्य से डिगा दूँगा और तुम इस वर्ष के चौबीसवें डिगे हुए टिकट बाबू होगे।

टिकट बाबू आप इस वर्ष के पच्चीसवें पहले दर्जे के मुसाफिर होगे जो मुझे मेरे कर्त्तव्य से डिगाने मे नाकामयाब होगें।

शकर आप दोनो बहुत अनुभवी व्यक्ति मालूम होते हैं।

मुसाफिर (टिकट बाबू से) यह कौन है?

टिकट बाबू (न जानने का कधा उचकाता है।)

मुसाफिर सफर करते करते मेरी जिन्दगी गुज़र गयी पर आज तक मैंने ऐसा टिकट बाबू नहीं देखा।

टिकट बाबू (शर्माते हुए) आप मेरी तारीफ़ कर रहे हैं।

मुसाफ़िर (गरम होते हुए) मैंने शक़र किया है, शक़र। मेरे ये बाल टेशन पर खड़े खड़े नहीं पकाये हैं।

शंकर (सामने देख कर बोलते हुए) इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता।

मुसाफ़िर (टिकट बाबू से) यह कौन है ?

टिकट बाबू (न जानने का भाव दिखाता है।)

शंकर (उसी मुद्रा में सामने अनन्त की ओर देखते हुए) बाल के पकने और समय के बीतने में एक सीधा रिश्ता है। बल्कि बाल का पकना समय का तर्क न उलटा जा सकने वाला भाग है। काले से बाल सफ़ेद होते हैं, सफ़ेद से काले कभी नहीं होते। अतः समय हमेशा एक दिशा में परिवर्तित होने वाली गति है।

मुसाफ़िर (टिकट बाबू से) यह कौन है ?

टिकट बाबू (न जानने का इशारा करके जाने को होता है।)

मुसाफ़िर (टिकट बाबू की बाँह पकड़ कर) आप जा नहीं सकते, पहले बताइए यह कौन है !

टिकट बाबू मुझे नहीं मालूम।

मुसाफ़िर मुसाफ़िर होने के नाते मैं अपने अधिकार जानता हूँ। आपको बतलाना पड़ेगा कि आपके टेशन पर यह कौन बैठा है ?

टिकट बाबू यह सूचना देना पूछ-ताछघर का काम है, आप वहीं जाइए।

मुसाफ़िर रेलवे का हर टिकट बाबू चलता फिरता पूछ-ताछघर है।

टिकट बाबू : लेकिन मैं तो इस समय टेशन पर खड़ा हूँ। हो सकता है, चलती हुई रेल में आप की बात सही हो।

शंकर मैं आपके जवाब से सहमत हूँ। कुछ बातें वातावरण के संदर्भ पर आधारित होती हैं। उन्हें सापेक्ष सत्य कहते

है । कुछ निर्पेक्ष और शाश्वत सत्य होते हैं । जैसे बालों का पकना एक निर्पेक्ष एवं शाश्वत सत्य है । आपका चलता फिरता पूछ आडम्बर होना ।

मुसाफ़िर अच्छा मैं ही पूछता हूँ । (विनय की मुद्रा बना, कर शंकर से) आपका शुभ नाम ?

शंकर शंकर ।

टिकट बाबू ओह, तो आप श्री शंकर हैं ।

मुसाफ़िर (एकदम टिकट बाबू की ओर मुड कर, व्यंग्य से) तो आप लोग पहले से परिचित हैं ?

टिकट बाबू नहीं बात यह है ।

मुसाफ़िर (बिगड कर) मैं बात वात कुछ नहीं जानता । जब आप इनको पहले से जानते थे तो आप क्यों बन रहे थे कि जैसे नहीं जानते । यह क्या मजाक है, क्या साजिश है ?

टिकट बाबू मैं इनको जानता नहीं हूँ पर आप ही के नाम पहले दर्जे की सीट सुरक्षित है । यह रही सूची (जेब में हाथ डालता है ।)

मुसाफ़िर (व्यंग्य से) अच्छा, तभी आप इनको न पहचानने का नाटय कर रहे थे । जरा बताइए, कितना ले कर यह काम किया है आपने ?

टिकट बाबू इस तरह से सोचना आपका अंधविश्वास बन गया है । आप मेरा अपमान कर रहे हैं ।

मुसाफ़िर (ऊँची आवाज में) अपमान ही नहीं अभी मैं आपकी मरम्मत भी करूँगा । (कुछ लोग इधर उधर से आ कर इकट्ठे हो जाते हैं ।) आप जनता को लूटते हैं और बेवकूफ बनाते हैं । आप ।

टिकट बाबू (बाँहें समेटते हुए) जनाब, होश सँभाल कर बात कीजिए । (लोग बीच बचाव करके दोनों को अलग कर देते हैं ।

बड़बड़ाता हुआ टिकट बाबू एक ओर चला जाता है, मुसाफ़िर दूसरी ओर। बाक़ी लोग भी तितर बितर हो कर अपनी अपनी जगह वापिस चले जाते हैं।)

[पतली मोहरी की पतलून पहने एक नवयुवक हाथ में रेल की समय-सारणी लिए हुए आता है और शंकर के सिर पर खड़ा होकर उसे पढ़ने लगता है।]

शंकर (बगल में जगह करते हुए, नवयुवक से) बैठ जाइए।

नवयुवक (जैसे बात और आगे न बढ़े इसलिए यन्त्रचालित-सा बैठ जाता है पर समय-सारणी पढ़ना जारी रखता है।)

शंकर क्या पढ़ रहे हो ?

नवयुवक (बिना नज़र उठाये) ढूंढ़ला जाने वाली सब गाड़ियाँ देख रहा हूँ।

शंकर सब गाड़ियाँ क्यों देख रहे हो (रुचि लेते हुए) ?

नवयुवक (समय सारणी बन्द करते हुए) और क्या करूँ आप ही बताइए मैं वहाँ जा तो नहीं सकता हूँ।

शंकर क्यों, जा क्या नहीं सकते हो ?

नवयुवक : बात यह है बात यह है कि वहाँ रजनी गयी हुई है।

शंकर तब तो बहुत अच्छी जगह होगी, वहाँ तुम्हें जाना चाहिए। अभी रेल आएगी।

नवयुवक (दर्द से झूम कर) नहीं, नहीं नहीं। रेल आएगी पर मैं न जा पाऊँगा। (शंकर की ओर देख कर) मैं रजनी से प्रेम करता हूँ इसलिए वहाँ नहीं जा सकता।

शंकर मैं समझा नहीं। अगर प्रेम करते हो तब तो अब तक तुम्हें ढूंढ़ला चला जाना चाहिए था।

[मौक़ा पा कर राम आ कर शंकर से पूछता है, 'रेल कैसे चलती है ?' शंकर बताने को होता है पर तुरन्त सीता बाबू से उसकी शिकायत कर देता है और राम डांट

कर बुला लिया जाता है ।]

नवयुवक आपने, लगता है, कभी प्रेम नहीं किया ।

शंकर मैं दार्शनिक हूँ, तर्कशास्त्र का विशेषज्ञ हूँ, मुझे प्रेम करना तकसंगत नहीं लगा और न ही समय मिला ।

नवयुवक मैं आपको देखते ही यह जान गया था ।

शंकर कैसे ? क्या ।

नवयुवक जो प्रेम करता है वह लिफ़ाफ़ा देख कर मजमून पहचानने लगता है । उसके लिए हर चहरा एक लिफ़ाफ़ा हो जाता है । आप नहीं जानते कितने तरह के लिफ़ाफ़े होते है दुनिया म । धीरे धीरे प्रेमी ससार को समझने लगता है । ससार उसके लिए एक बहुत बडा लिफ़ाफ़ा हो जाता है । वह खुद साधारण व्यक्ति नहीं रह जाता ।

शंकर लगता है, तुम ठीक कह रहे हो ।

नवयुवक (अपने जोश में अनसुनी करके) सारे ससार की आँखें उस पर गिद्ध की तरह टकटकी बाँधे देखती रहती है । एक ग़लत क़दम उसने रखा नहीं, अपनी प्रेमिका की ओर वह ज़रा सरका नहीं कि तुरन्त अपने काम में लिपटे हुए लोग झटके से सजग हो कर उसकी ओर उँगलियाँ दिखाने लगते हैं, उसे बातें सुनाने लगते हैं, उसे ज़लील करने लगते हैं मानों वह अपराधी हो । जैसे मुसाफिर रेल पर टूट पडते हैं उसी तरह ये लोग प्रेमिका की ओर जाते हुए प्रेमी पर टूट पडते हैं । आप इन लोगों को नहीं जानते (फैला हुआ हाथ घुमा कर स्टेशन पर एकत्रित लोगों की ओर इशारा करता है) । आप मेरे दर्द को नहीं समझ सकते मैं अकेला हूँ ।

शंकर (सहानुभूति के स्वर में) कुछ कुछ तुम्हारी स्थिति का एहसास हो रहा है मुझे ।

नवयुवक नहीं, नहीं हो सकता आपको। अभी गाड़ी आयेगी। यह तमाम भीड़ उस पर लद कर ढूँढ़ला चली जाएगी। इसी भीड़ को नहीं मालूम कि रजनी वहाँ है। इसलिए इन लोगों को कोई फ़िक्र नहीं। अपन अज्ञान में यह मुक्त है, मस्त हैं। पर मैं जानता हूँ कि रजनी वहाँ है। और मेरे गाड़ी में बैठते ही यह बात कोई आ कर तेजी से अफ़वाह की तरह फैला जायेगा। और ये सब लोलुप लोग अजीब निगाहों से मेरी ओर देखने लगेंगे। ओफ़, काश, यह गाड़ी आज न आये। मैं आज मूर्खों और पत्थरदिलों से भरी गाड़ी को ढूँढ़ला की ओर जाते हुए देखने से एकबार बच जाऊँ।

शंकर तुम बुजदिल आत्मकेंद्रित और स्वार्थी हो। वैसे मैं लोगों को तौलना और उन पर राय बनाना पसन्द नहीं करता हूँ, पर।

नवयुवक पर मुझ पर हाथ साफ़ करने में आपको भी कोई झिझक नहीं हुई। मेरे लिए यह कोई नया अनुभव नहीं है। मैं प्रेमी हूँ इसलिए निरीह हूँ। मैंने आपसे भी अच्छे और भले दीखते हुए आदमियों को सहसा बदलते हुए देखा है। आप।

[फिर मौक़ा पा कर राम आ कर शंकर से अपना सवाल पूछता है और उत्तर मिलने के पहले ही डाँट कर बुला लिया जाता है। नवयुवक समय-सारणी पढ़ने लगता है। शंकर चुपचाप एक सिगरट और जला लेता है। सहसा टेसन पर बहुत सा सामान ला कर कुली उतार देते हैं। कुछ अफसर आ कर इस सामान के आस-पास खड़े हो जाते हैं। पहले दर्जे का मुसाफ़िर भी आकर खड़ा हो जाता है।]

मुसाफिर (एक अफ़सर से) कौन साहब जा रहे हैं इस गाड़ी से जनाब ?

अफसर यातायात के मंत्री जी।

मुसाफ़िर (खुश होते हुए) श्री आनन्द भजन जी जा रहे हैं क्या इस गाड़ी से ?

अफ़सर : हां, पर गाड़ी है कहां ?

मुसाफ़िर मालूम नहीं।

अफसर . गाड़ी को यहां खड़ा मिलना चाहिए था और वह यहां से नदारद है, अजब बात है। (कई अफ़सर यह सुन कर घबड़ा-से जाते हैं।)

दूसरा अफ़सर और मंत्री जी तो आते होंगे। अब क्या होगा ? (इतने में टिकट बाबू उधर से जाता हुआ दिखाई देता है। उसे आवाज़ देते हुए) ओ, टिकट बाबू !

टिकट बाबू (पास आ कर, मुसाफिर को अपने ऊपर, अब फँसे बच्चू वाली हँसी उड़ेलते हुए पा कर, मुँह फेर कर) क्या है ?

अफसर गाड़ी कहां है ?

टिकट बाबू मुझे नहीं मालूम।

अफसर (बिगड़ कर) तो किसे मालूम होगा, मैं जिला मजिस्टर बोल रहा हूं।

टिकट बाबू आपकी जोड़ी के हमारे विभाग में टेसन मास्टर हैं। आप जा कर उनसे पूछिए।

अफसर मैं नहीं जाऊंगा, वही यहां आएंगे। (इशारे से दरोगा को बुला कर) ज़रा टेसन मास्टर को बुलवाए।

दरोगा (एक सिपाही को बुला कर) जा कर टेसन मास्टर साहब से कहो कि जिला-मजिस्टर साहब उनको याद कर रहे हैं।

टिकट बाबू (जाने को होता है।)

अफ़सर अभी आप भी यहीं रहिए।

रह जाता है। नवयुवक उठ कर टिकट बाबू के हाथ
अपनी समय सारणी छीन लेता है और फिर पढ़ने लगता है
कुछ शान्ति सी छा जाती है। अब से पर्दा गिरने तक नी...
धीरे धीरे, पर बिना शोर किये, बढ़ती है]

शंकर (नवयुवक से) क्या तुम्हें प्रेम करने में मजा आता है?

नवयुवक (बिना आँख उठाये) नहीं, इसमें बहुत दर्द सहना पड़ता है घंटा टेसन पर बैठे रहना पड़ता है। पर एक बार प्रेम कर लेने पर इससे छुटकारा नहीं मिल सकता। इसका कोई इलाज नहीं है।

शंकर मेरे पास है।

नवयुवक (शंकर की ओर देख कर) क्या?

शंकर तर्कशास्त्र का अध्ययन कर लेने से यह रोग पास नहीं आता और अगर आ चुका होता है तो चला जाता है।

नवयुवक तर्कशास्त्र का अध्ययन बहुत मुश्किल तो नहीं पड़ेगा। वरना एक बला से छुटकारा पाने के चक्कर में दूसरी में फँस जाऊँ।

शंकर नहीं, मुश्किल नहीं है। उदाहरण की सहायता से इसकी प्रकृति तुम्हें समझा सकता हूँ। शुरू करने के लिए समझ लो कि इसमें कुछ मान्यताएँ होती हैं। इन्हें मान कर बात आगे बढ़ायी जाती है।

नवयुवक जैसे?

शंकर जैसे जैसे मान लो, एक दुनिया है जिसमें टेसन है, रेल है समय सारणी है और मुसाफिर हैं। और मान लो कि टेसन के नाम में और शहर के नाम में कोई आपसी सम्बन्ध नहीं है।

नवयुवक अच्छा, यह तो मजेदार दुनिया होगी।

शंकर अब मान लो, यह टेसन इलाहाबाद है।

नवयुवक यह टेसन इलाहाबाद है ।

शंकर अब समय-सारणी देख कर बतलाओ यहाँ कौन-कौन सी गाड़ियाँ आती हैं ।

नवयुवक (बिना समय सारणी देखे ही, जैसे सब याद हो) तूफान ३-३३ पर, आसाम मेल ४ ५८ पर, पार्सल ५ १५ पर, कालका मेल

शंकर बस ठीक है, इतने से काम चल जायगा ।

नवयुवक (खोये हुए स्वर में) इतने से काम चल जायगा ।

शंकर मान लो एक गाड़ी टेसन पर खड़ी है ।

नवयुवक खड़ी है ।

शंकर सुबह ३ ३३ पर जो मुसाफिर यहाँ टेसन पर आएँगे वे सामने खड़ी गाड़ी को क्या समझेंगे ?

नवयुवक तूफानमेल ।

शंकर ठीक है, वह तूफ़ानमेल समझ कर उस पर बैठ जाएंगे ।

नवयुवक बैठ जाएँगे ।

शंकर मान लो, वह गाड़ी वैसे ही खड़ी रहती है ।

नवयुवक खड़ी रहती है ।

शंकर ४ ५८ पर फिर मुसाफिरों का एक दल आयेगा । वह सामने खड़ी गाड़ी को क्या समझेगा ?

नवयुवक आसाम मेल ।

शंकर और तब क्या होगा ?

नवयुवक (सहसा आलोक पाते हुए) और वे लोग उसे आसाम मेल समझ कर उस पर बैठ जाएँगे ।

शंकर फिर ?

नवयुवक फिर ?

शंकर (जरा उत्साह और सहारा देते हुए) हाँ, फिर ?

नवयुवक (दिमाग पर जोर डाल कर, सोच सोच कर) फिर ५

पर नये मुसाफिर आएँगे और खन्ना गाडी को पासल मान कर उस पर बठ जायेंगे।

शकर (खुश होत हुए) ठीक, बिल्कुल ठीक। इस प्रकार वही गाडी २४ घण्टे खडी-खडी सारे मुसाफिरो को भर लेगी।

नवयुवक कमाल ह, अब क्या होगा। पर तव तो इसमें बहुत भीड हो जाएगी।

शकर तर्कशास्त्र की दष्टि से भीड का प्रश्न निरथक ह। स्थिति के जिस ढाँचे का विश्लेषण हम लोग कर रहे हं उससे इसका कोई सरोकार नहीं ह।

नवयुवक मान लिया, पर अब होगा क्या ?

शकर अब पूव मान्यता के अन्तगत क्योकि शहर और टेसन मे कोई अटूट सम्बन्ध नही ह, हम टशन के नाम की पट्टी बदल कर इलाहाबाद से दिल्ली की कर देते ह।

नवयुवक कर देते हैं।

शकर तब सुबह दिल्ली कौन सी गाडी पहुँचाती ह ?

नवयुवक ६ ०५ पर दिल्ली एक्सप्रेस ९ ०० पर जनता, १० २८ पर अपर इण्डिया, १७ २५ पर आसाम मेल

शकर तो ६-०५ पर दिल्ली एक्सप्रेस की सवारियाँ उतर जाएँगी, ९ ०० पर जनता की ।

नवयुवक १०-२८ पर अपर इण्डिया की १७ २५ पर आसाम मेल की अहा हा बडा मजा आ रहा ह।

शकर और अगले २४ घण्टे में गाडी बिलकुल खाली हो जायेगी और फिर दिल्ली की पट्टी हटा कर

[इस बीच टेसन पर भीड बहुत हो जाती है। मौका पा कर राम आ कर शकर से सवाल करता ह—'रेल कसे चलती ह ?' और पहला व्यक्ति आ कर पूछता ह—'समय क्या है ?''—पर्दा।]

• • •

उल्टा-सीधा स्वेटर

पात्र



विनोद
गोविन्द
भाभी

[स्थानीय कालेज के प्राध्यापक गोविन्द जी (उम्र ३७ वर्ष) का कमरा। एक खाट, एक मेज, एक लकड़ी की कुर्सी, एक टीन की कुर्सी और एक स्टूल। जनाने और एक पाँच वर्ष की लड़की के कपड़े डोरी पर टँगे हुए हैं और मर्दाने कपड़े खूँटियों पर। मेज और कुर्सी दाहिने पीछे की ओर, टीन की कुर्सी पास ही। बाँये पीछे की ओर खाट और सामने की ओर स्टूल। एक दरवाजा दाहिनी ओर बाहर से आने के लिए और एक दरवाजा बाँई ओर स्टूल के पीछे, घर के अन्दर जाने के लिये]

गोविन्द जी धारीदार पजामा और कमीज पहने, चश्मा लगाये, एक पैर कुर्सी पर ऊपर रक्खे मेज के पीछे बैठे हैं। कोई इतिहास की पुरानी मोटी-सी पुस्तक हाथ में लिये पढ़ रहे हैं। उनका छोटा भाई विनोद (उम्र १७ वर्ष), विश्वविद्यालय में प्रथम वर्ष का विद्यार्थी, एक फ़ाइल लटकाये बाहर से आता है। खाकी पैन्ट और मुड़ी बाँह की कमीज पहने है। ऊपर से डिज़ाइनदार चटक रंग का एक स्वेटर। समय शाम का है—कोई ३ बजे।]

विनोद (बाहर का दरवाज़ा खोल कर और फिर बन्द कर गुनगुनाता हुआ अन्दर आता है।) डोगा, डोगा, डोगा अरे आ आ, SS आ, आ SSS नी सा SSS (फ़िल्मी धुन और शास्त्रीय संगीत को साथ रखते हुए)

गोविन्द (पुस्तक मेज पर टिकाते हुए, मानो मेज इसी के लिये है।) बिन्नू।

विनोद (गाते गाते सहसा रुक जाता है।) हाँ। (इधर उधर देखता है, कहाँ से आवाज आ रही है। गोविन्द जी का

गोविन्द — कौन, जो तुम्हारा दोस्त है ?

विनोद : (घुटनों पर हथेलियाँ मारते हुए) हाँ।

गोविन्द — (एक पैर नीचे लटकाते हुए) वह तो फेल हो गया था। अभी कालेज में ही है न

विनोद — (जूते उतारते हुए) हाँ, अब शायद वह ननीताल चला जाएगा—शेरउड कालेज में। (उठ कर जूते खाट के नीचे सरका देता है।)

गोविन्द — उसे न हिन्दी बोलनी आती है न अंग्रेजी, शेरउड जायगा। मैंने उसे इतिहास में इस बार तीन नम्बर दिये हैं जब दूसरा साल है वही विषय पढ़ते हुए ।

विनोद — (खाट पर लेटते हुए और दोनों पांव इस तरह हिलाते हुए कि दोनों अँगूठे बार-बार लड़ें) वहाँ पढ़ाई अच्छी होगी।

गोविन्द — (चश्मा लगाते हुए) कोई दूसरा इतिहास तो पढ़ा नहीं देंगे जिसमें अकबर के धार्मिक विचारों के बजाय स्वेटर के डिज़ाइन पूछे जाएँ। (मुस्करा कर विनोद को देखते हैं।)

विनोद — (उठ कर बैठ जाता है।) मैंने ही यूनिवर्सिटी में आ कर कौन तीर मार लिये हैं ?

गोविन्द — इतना तो हो ही गया है कि अपनी भाभी के हाथ का बुना हुआ स्वेटर न पहन कर बाजार का बना हुआ स्वेटर पहनने लगे हो। कुछ दिन बाद और हुआ तो घर में पजामे भी सिलवाना बन्द कर दोगे। सुना है, अब बने बनाये मिलने लगे हैं। पता नहीं दुकान पर खड़े होकर कैसे नापते होंगे तुम लोग।

विनोद — (झुक कर एक पैर का नाखून नोचने लगता है।)

गोविन्द — (अपना दूसरा पैर भी नीचे रखते हुए) अभी उसी दिन बिचारी तुम्हारी भाभी कह रही थी कि उसने राजाराम की दुकान पर एक अच्छा ऊन देखा था, जिसका शकरपारे

देखकर) आ जाप।

गोविन्द हाँ, मैं। (चश्मा उतारते हुए जैसे बहुत दिनों बाद फिर मौका मिला हो।)

विनोद (कन्धे हिला कर फाइल खाट पर फेंक देता है। स्वेटर उतारने के लिए दोनों हाथ सामने क्रास करके स्वेटर का निचला भाग पकड़ता है।)

गोविन्द (दूसरा पैर भी ऊपर चढ़ाते हुए।) यह क्या है?

विनोद (जैसे इस प्रश्न की प्रतीक्षा ही कर रहा था हाथ नीचे लटका कर) क्या क्या है?

गोविन्द (चेहरा उठा कर, चश्मा लगा कर एक उंगली से स्वेटर की ओर इशारा करते हुए) यह।

विनोद (स्वेटर की ओर देखते हुए) स्वेटर। (गोविन्द जी को देखता है।)

गोविन्द (स्वेटर बराबर देखते हुए) ओह।

विनोद (वातावरण में तनाव आ जाता है। विनोद गोविन्द को ओह के लक्ष्य को ठीक नहीं समझ पाता है। टोह लेने के लिये वह फिर स्वेटर उतारने के लिये हाथ उठाता है।)

गोविन्द कहाँ से आया?

विनोद (उठे हाथ गिराते हुए) बाजार से।

गोविन्द तुम्हारी भाभी लाई?

विनोद (स्टूल पर बैठते हुए और जूते के फीते खोलते हुए) नहीं।

गोविन्द फिर?

विनोद मैं।

गोविन्द (आश्चर्य प्रकट करते हुए) तुम बाजार गये और खरीद कर लाये?

विनोद (इधर उधर देखते हुए) राजन भी गया था उसी के साथ

गोविन्द कौन, जो तुम्हारा दोस्त है ?

विनोद : (घुटनों पर हथेलियाँ मारते हुए) हाँ।

गोविन्द (एक पैर नीचे लटकाते हुए) वह तो फ़ेल हो गया था। अभी कालेज में ही है न

विनोद (जूते उतारते हुए) हाँ, अब शायद वह नैनीताल चला जाएगा—शेरउड कालेज में। (उठ कर जूते खाट के नीचे सरका देता है।)

गोविन्द उसे न हिन्दी बोलनी आती है न अंग्रेजी, शेरउड जायगा। मैंने उसे इतिहास में इस बार तीन नम्बर दिये हैं जब दूसरा साल है वही विषय पढ़ते हुए।

विनोद (खाट पर लेटते हुए और दोनों पाँव इस तरह हिलाते हुए कि दोनों अँगूठे बार बार लड़ें) वहाँ पढ़ाई अच्छी होगी।

गोविन्द (चश्मा लगाते हुए) कोई दूसरा इतिहास तो पढ़ा नहीं दंग जिसमें अकबर के धार्मिक विचारों के बजाय स्वेटर के डिज़ाइन पूछे जाएँ। (मुस्करा कर विनोद को देखते हैं।)

विनोद (उठ कर बैठ जाता है।) मैंने ही यूनिवर्सिटी में आ कर कौन तीर मार लिये हैं ?

गोविन्द इतना तो हो ही गया है कि अपनी भाभी के हाथ का बुना हुआ स्वेटर न पहन कर बाजार का बना हुआ स्वेटर पहनने लगे हो कुछ दिन बाद और हुआ तो घर में पजामे भी सिलवाना बन्द कर दोगे। सुना है, अब बने बनाये मिलने लगे हैं। पता नहीं दूकान पर खड़े होकर कैसे नापते होंगे तुम लोग।

विनोद (झुक कर एक पैर का नाखून नोचने लगता है।)

गोविन्द (अपना दूसरा पैर भी नीचे रखते हुए) अभी उसी दिन बिचारी तुम्हारी भाभी कह रही थी कि उसने राजाराम की दूकान पर एक अच्छा ऊन देखा था, जिसका शकरपारे

या डिजाइन डालकर वह अपने बिन्नू के लिए स्वेटर बनाएगी। कितने चाव से उसने कहा था यह सब। उसे क्या मालूम

विनोद (उठते हुए अपने स्वेटर को देखते हुए) मैं यह स्वेटर नहीं पहनूंगा। (छत की ओर देखता है, मानो वहीं उसे शक्ति मिलेगी)

गोविन्द (चश्मा उतारते हुए, आगे झुक कर विस्मय से) तो क्या करोगे? फेंक दोगे

विनोद (सहसा फिर सोचा करते हुए) नहीं। (स्टूल पर आकर बैठ जाता है।)

गोविन्द तो क्या अपनी भाभी को पहनाओगे, या मुझे? (उठकर टीन की कुर्सी पर आकर बैठ जाते हैं और उत्सुकतापूर्वक विनोद को देखते हैं।)

विनोद राजन भी खरीदने को कह रहा था उसे दे दूंगा।

गोविन्द हाँ जिससे वह कहे कि तुम्हारे भाई-साहब और भाभी पुराने खयाल के हैं। नहीं, तुम्हीं पहनो, मैंने मना नहीं किया है, बस पूछा था। तुम लोगों को समझने की कोशिश कर रहा हूँ, पर समझ नहीं पा रहा हूँ। (उठ कर पजामा हाथ से ऊपर खिसकाते हुए।) मैंने भी अपने जमाने में फैशन किया था। रीति रिवाज तोड़े थे। वंश में पहली बार तुम्हारी भाभी को साथ लेकर सिनेमा गया था तब तुम छोटे थे। खैर, पर जो करते थे उसके पीछे कोई सिद्धान्त होता था—पुरानी परम्परा और झूठे अन्ध-विश्वासों से मुक्त होने का। जिम्मेदारी सम्हालने का। १९४२ में तब तुम शायद पैदा भी नहीं हुए थे मैंने अकेले, (कमरे में घूमते हुए) मेरे सब साथी दूर भाग कर खड़े हो गये थे, एक अंग्रेज कप्तान को पीटा था और

उसका मिलीटरी गाड़ी जला दी थी म्यूनिसिपल बोर्ड की फाइलें मने इन्हीं हाथों से फाड़ी थी और अब, तुम लोग बहुत हुआ तो सिनेमाघर फूंक आओगे (घूम कर फिर मेज के पीछे अपनी कुर्सी पर जा बैठते हैं।)

विनोद (एक पैर ऊपर स्टूल पर उठाते हुए) जलाने के लिए हम लोगों के पास अंग्रेज नहीं हैं तो इसमें हम लोगों की क्या गलती है ?

गोविन्द (एक पल के लिए स्तब्ध हो जाते हैं, फिर) जलाने के लिए नहीं हैं तो नकल करने के लिए तो हैं। उनसे फैशन लेते और बने-बनाये स्वेटर खरीदते तो तुम लोगों को डर नहीं लगता। तुम लोगों को भी पार्कों में रिज़र्व्ड बेञ्चों पर बैठने को न मिला होता तो आज नकल न करते। विलायती बने न घूमते।

विनोद एक स्वेटर पहनने से कोई अंग्रेज नहीं हो जाता और ना न पहनने से भारतीय।

गोविन्द यह मैं भी जानता हूँ। (किताब उठा कर बन्द करते हुए) हम लोगों ने उन्हें मारा भी, उनसे सीखा भी। जिसने उनके खिलाफ विद्रोह किया है, उसे ही उनकी नकल करने का अधिकार है। हमने उनसे समय की पाबंदी सीखी, शासन करने की विधि सीखी ! एक तुम लोग हो ! बने बनाये स्वेटर पहन कर समझते हो मॉडर्न बन गये, एक सेंटेन्स तक अंग्रेजी का सही नहीं बोल पाते हो।

विनोद सही अँग्रेजी बाबूगिरी की निशानी है। अब

गोविन्द और बाज़ार का स्वेटर पहनना लफंगों की ! (किताब खोलकर पढ़ने लगते हैं।)

विनोद (कंधे उचका कर उठ जाता है। स्वेटर उतार कर अलगनी

पर टांग देता है। पास ही लटकी मोना की छोटी फ्राक उतार कर, घुमा फिरा कर देखता है, फिर उसे वापिस टांग देता है। आ कर टीन की कुर्सी पर बैठ जाता है।)

गोविन्द (कुछ देर बाद किताब रखते हुए) चाय आती होगी, लाओ मुँह धो आऊँ, तुमने धोया?

विनोद (दोनों हाथ मेज़ पर रखते हुए) बाद में धो लूंगा।

गोविन्द (उठ कर स्टूल के पीछे लगे दरवाज़े की ओर जाते हुए) तुम लोग तो घूमने के लिए दिखाने के लिए मुँह धोते हो। घर में खाने-पीने के लिए नहीं। (दरवाज़े पर रुक कर, कुछ सोच कर, फिर टंगे स्वेटर के पास जाते हुए) लाओ, इसे पहन कर तुम्हारी भाभी के सामने जाऊँ। देखूं क्या कहती है? (डोरी पर से उतार कर स्वेटर पहन लेते हैं और अकड़ कर अन्दर जाते हैं। विनोद कस कर मेज़ को पकड़ लेता है उठ कर खड़ा हो जाता है उसका मुँह खुलता है पर आवाज़ नहीं निकलती। धीमे धीमे हारा हुआ-सा बैठ जाता है। बाहें शिथिल हो मेज़ पर से फिसल इधर उधर लटक जाती हैं।)

[अन्दर से एक स्त्री के खिलखिला कर हँसने की आवाज़ आती है]

भाभी अरे यह क्या पहन आये तुम?

गोविन्द स्वेटर।

भाभी : वह तो मैं भी देख रही हूँ। पर तुम्हें सूझा क्या? ऐसा स्वेटर तो बिन्नू भी नहीं पहनेगा। (बिन्नू एक बार फिर खड़ा होकर बैठ जाता है।) उसके लिए मैं बुनने वाली हूं, तुम्हें नया स्वेटर पहनने का शौक है तो एक तुम्हारे लिये भी बना दूँगी! सीधे से कह देते।

गोविन्द मेरी बात तुम कोई सीधे से मानती हो जो कह देता?

अच्छा चाय बन गई ? (विनोद सतोष की साँस लेता है ।)

भाभी हा, लो बिन्नू के लिए भी लेते जाओ । (विनोद उठ कर खड़ा हो जाता है, एक कदम अन्दर जाने के लिए बढाता है ।) आज मीनू ताई के गई है रात वही रहेगी । तुम लोग पी लो ।

गोविन्द (हाथ मे दो प्याल लिये आते है । चाय मेज पर रख कर बैठते हुए) हम लोगो को आज़ादी बहुत आसानी से मिल गई ।

विनोद (चाय का प्याला उठाते हुए) शायद ।

गोविन्द (चौंक कर विनोद की ओर देखते हुए) शायद, क्या ?

विनोद आज़ादी आसानी से मिल गई ।

गोविन्द यही तो मैंने कहा था ।

विनोद हाँ । (दोनो चाय पीते है ।)

गोविन्द (कुछ सोच कर) तुम्हारी भाभी अभी क्या कह रही थी सुना तुमने ?

विनोद हा ।

गोविन्द बस हाँ ?

विनोद और क्या

गोविन्द (बीच में काट कर) और क्या ? तुम तो यह भी कह सकते हो कि वह सेन्टिमेन्टल है ।

विनोद हाँ । पर भावुक होना मै अपने मे कोई बुरी चीज़ नहीं मानता हूँ । मैं

गोविन्द बुरी चीज़ क्या मानते हो ?

विनोद कुछ भी नही ।

गोविन्द कुछ भी नही ?

विनोद हाँ, या सब कुछ ।

गोविन्द सब कुछ ?

विनोद हाँ सच !

गोविन्द अजीब बात है।

विनोद और साधारण भी।

गोविन्द (विनोद की ओर अवाक देखते हैं।)

विनोद (उठा कर अपनी फाइल खाट पर से उठा लेता है। पन्ने उलटते हुए) आप अजीब लग रहे हैं इस स्वटर में (मुस्कुराता है।)

गोविन्द (चौंक कर, स्वटर की ओर देख कर) हूं ?

विनोद हाँ और भाभी प्रसन्न हुई थी आपको इसे पहने देख कर।

गोविन्द (जल्दी से स्वेटर उतारते हुए) प्रसन्न हुई थी कि हस रही थी।

विनोद दोनो में अन्तर है क्या ? अजीबियत खुशहाली लाती है! (आँखें मूद कर सोचता है मानो कोई रंगीन स्वप्न देख रहा हो)

गोविन्द (स्वेटर खाट पर फैंकते हुए।) जिन्हें लाती होगी उन्हें लाती होगी।

विनोद (उठकर स्टूल पर बैठते हुए) लाती सब को है। कुछ को दीखती है, कुछ को नहीं।

गोविन्द क्या मानें ?

विनोद जमाना बदल गया है।

गोविन्द यह तो तुम्हें देख कर कोई भी कह सकता है।

विनोद खाली मुझे ही नहीं! (गोविन्द की ओर देखता है।)

गोविन्द तुम्हारे जैसे बहुतों को! तुम्हारे दोस्त को भी।

विनोद नहीं ! अजीबियत जिनके लिए शौक है, उनको नहीं। वे पीछे आते हैं, मजाक है।

गोविन्द ओह, तो आप सीरियसली अजीब हैं !

विनोद यही एक तरीका है ! बाकी सब बेमाने हैं—पुराने

अखबार-वाला, टूटी कैन्वस-वाला।

गोविन्द पुराने अखबार-वाला, टूटा कैन्वस-वाला? यह क्या कह रहा है?

विनोद टूटे रिकार्ड-वाला बेचा इन के बदले कसेरा।

गोविन्द बिन्नू!

विनोद हाँ।

गोविन्द क्या हो गया है तुम्हें? (उठ कर मेज के पीछे से निकल कर टीन की कुर्सी पकड़ कर खड़े हो जाते हैं)

विनोद कुछ नहीं, यूँ ही जरा भावुक हो गया था।

गोविन्द यह तुम भावुक हो रहे थे?

विनोद नहीं पाठ याद कर रहा था।

गोविन्द पाठ?

विनोद हम लोगों ने हिन्दी भाषा को समृद्ध बनाने के लिये एक पाठशाला खोली है।

गोविन्द (टीन की कुर्सी पर बैठते हुए) कैसी पाठशाला?

विनोद हम लोग क्लब, संस्था, सोसाइटी और मंडल बनाने में विश्वास नहीं करते हैं। हिन्दी के साधारण बोल-चाल के शब्दों को ही ऊपर उठाना चाहते हैं। (आगे झुक कर) जैसे पाठशाला को ही लीजिये, बच्चों को पुण्यभूमि से अलग कर

गोविन्द बिन्नू!

विनोद हाँ।

गोविन्द मैं फिर पूछता हूँ क्या हो गया है तुम्हें? तबियत तो ठीक है?

विनोद आप धमकाते हैं तो नहीं बोलूँगा। (पुनः टाट पर बैठ जाता है)

गोविन्द (इस अप्रत्याशित आक्रमण से विचलित होते हुए) मैं धमका रहा हूँ?

विनोद इसमे आप की कोई ग़लती नही ह। हर आदमी, जो अपने बोर को विकसित करने म लगा ह, एक न एक दिन इस तरह के विरोध का सामना करता ही ह। लगता है, मेरा समय आ गया है। (उठ कर खाट पर से स्वेटर लेकर उल्टा पहन लता है ताकि गला पीछे हो जाय)

गोविन्द उल्टा ह । लगता ह

विनोद उल्टा नही, यह निशान ह कि मुझ विरोध दीखन लगा है और अब मं लस हू ।

गोविन्द किस के खिलाफ ?

विनोद तालाब के खिलाफ ।

गोविन्द तालाब के ?

विनोद हाँ ।

गोविन्द (विनोद को कही जाने क लिए तत्पर देख जैसे कुछ निगलते हुए) अब तुम कहाँ जाओगे ?

विनोद रोशनी में ।

गोविन्द (कुछ सम्भल कर) क्या उल्टा स्वटर पहन कर तुम लोग रोशनी मे जाते हो ? कही छुप जाओ अगर (विनोद मत्र मुग्ध सा सीधा बाहर सामने एक टक दखता हुआ चला जाता ह । भिडे दरवाजे उसके शरीर से टक्कर खा खुल जाते हैं । अपनी दष्टि से विनोद का पीछा करते हुए) अजीब आदमी ह । (सिर हिला कर, फिर हाथ नचा कर और दर्शकों की ओर देख कर) यह सब क्या ह ?

• • •

एक स्थिति

[श्री जीवनलाल गुप्त के निर्देशन में 'प्रयाग रंगमंच' द्वारा 'पैलेस थियेटर' में २६ १२ १९६५ को प्रदर्शित]

पात्र



माधो	जीवनलाल गुप्त
माधो बहू	ज्योति
बद्री	द्वारिका प्रसाद
सीतल	सूर्यप्रताप
गुरुबचन	रामचन्द्रगुप्त
पुरुषोत्तम	शान्तिस्वरूप प्रधान
वंशी	अशोक सेठ



[एक]

[दूसरी मंजिल का एक कमरा। पीछे बायीं ओर दरवाजा है, सीढ़ी का। दाहिनी ओर एक बड़ी-सी खिड़की है। कमरे में खड़े हो कर आसानी से बाहर झाँका जा सकता है। खिड़की के नीचे सड़क है, क्योंकि 'लम्प पोस्ट' का ऊपरी भाग मंच के दाहिने भाग में दीख रहा है। बायीं ओर एक बड़ा पलँग पड़ा हुआ है इधर-उधर गृहस्थी का छोटा मोटा सामान फैला हुआ है। 'फ़र्नीचर' कम है। खिड़की के नीचे एक 'स्टूल' रखा हुआ है।

एक स्त्री, जिसके बच्चा होने वाला है पलँग पर दीवार के सहारे आराम से बैठी है। अपने हाथ की तश्तरी से वह कई प्रकार की चीजें निकाल कर खा रही है। बीच-बीच में एक हाथ से वह पंखा भी झलती जाती है। शाम का समय है।

स्त्री एक बार उठ कर खिड़की से झाँकती है जैसे किसी का इन्तज़ार कर रही हो। किसी को न देख कर उसका मुहँ कुछ फूल जाता है। पैर लटका कर वह पलंग पर बैठ जाती है और इधर-उधर देखती है। पीछे मुड़ कर तश्तरी से एक मठरी उठा कर कुतरती है। इतने में किसी के सीढ़ी पर चढ़ने की आवाज़ आती है। स्त्री एक पल के लिए सतर्क हो जाती है। सारे शरीर में तनाव आ जाता है। फिर तुरन्त ही फुर्ती से पीछे सरक कर दीवार का सहारा ले लेती है। तश्तरी तकिये के पीछे सरका देती है। वहीं से एक रूमाल निकाल कर सिर पर पट्टी की तरह बाँध लेती है। मरे मरे हाथ से पंखा डुला कर कराहने लगती है।

एक ३० वर्ष का आदमी, चपरासी की वर्दी पहने, पीछे का दरवाजा खोल कर अन्दर आ जाता है। पेटी और लम्बा कोट उतार कर पास ही मेज पर पड़े कपड़ों के ऊपर फेंक देता है। पलँग पर बैठी स्त्री की ओर एक बार देख कर खिड़की के पास पड़े 'स्टूल' पर आकर बैठ जाता है। खड़ा होकर बाहर झाँक कर देखता है। किसी को न पाकर जरा निराश हो कर फिर 'स्टूल' पर बैठ जाता है। मुड़ कर स्त्री को देखता है। दोनों की आँख चार होती है। उसके चेहरे पर मुसकुराहट आती है पर फिर सहसा चली जाती है, क्योंकि स्त्री झटके से दूसरी ओर देख कर जोरों से पंखा झलने लगती है। पुरुष हँस कर अपनी दोनों हथेलियाँ उठा कर निशाना बैठा कर दोनों घुटनों पर एक साथ मारता है। फिर हँस कर स्त्री की ओर देखता है।]

माधव अरे, थक जाओगी।

स्त्री (एक क्षण के लिये पंखा रोक कर, फिर अधिक जोरों से झलते हुए) तुम्हारी बला से।

माधव मेरी बला तो तुम्ही हो!

स्त्री (कुछ सीधे बैठ कर) तो दूसरी परी ले आओ, गये तो थे पहाड़।

माधव कोई मैं अपने से गया था।

स्त्री नहीं तुम्हारी अम्मा तुम्हारा हाथ पकड़ कर ले गयी थी।

माधव कैसी बात करती हो, 'ड्यूटी' पर

स्त्री डूटी मेरी बला से।

माधव 'डूटी' नहीं ड्यूटी। मुझे पढ़ी लिखी लड़की से शादी करनी चाहिए थी।

स्त्री (पंखा पलँग पर पटक कर) पढ़ी-लिखी होती तो वह भी

ड्यूटी पर पहाड़ जाती, यहाँ बैठी तुम्हारा धरना नही देती

माधव (घुटना पर कोहनियाँ टिका कर, आगे झुक कर, नम्र स्वर में) कितने दिन और है ?

स्त्री किसके, मेरे मरने के ।

माधव (सीधे बैठ कर) तुम तो हमेशा बिगडी रहती हो, कोई बात कसे करे । साहब की बीबी और मेरी बेगम मे कुछ तो फ़रक हो ।

स्त्री वह नकटी पहाड गयी थी या नही ?

माधव (चौंक कर) कौन ?

स्त्री तुम्हारे साहब की जोरू ।

माधव हाँ, बीबी जी गयी थी उनके बिना (कुछ सोच कर रुक जाता है)

स्त्री (आगे सरक कर पैर पलँग से नीचे लटकाते हुए) हाँ, हाँ, कहो रुक क्या गये, उसके बिना

माधव (मुड कर खिडकी से बाहर देखता है ।)

स्त्री बीवी जी के बिना न साहब का मन लगता न गुलाम का । और मेरे बिना

माधव (मुड कर स्त्री की ओर देखता है, आँखें चार होती हैं ।) मुझे गुलाम शब्द से चिढ है तुम जानती हो, अब चुप भी रहो । मैं थका हुआ हूँ ।

स्त्री (पर हिलाते हुए) अब चुप नही रहूँगा । बहुत रह ली । तुमने पढ-लिख कर यह नोकरी क्या की ?

माधव (भीज कर) क्या करता, भूखा मरता

स्त्री (मुह पर हाथ रख कर) क्या बात करते हो, तुम्हे मेरी कसम

माधव (खडा होकर बाहर जाता है । किसी को देख कर, हिलाता है ।)

पुरुषोत्तम (नीचे से आवाज़ आती है।) कहो, लौट आये!

माधव हाँ!

पुरुषोत्तम कब आये?

माधव आज सुबह ही।

पुरुषोत्तम खूब मज़े का कटा।

माधव (झुक कर अन्दर देखता है, स्त्री सरक कर पीछे बैठ जाती है। फिर बाहर खींच कर) अपने राम को 'डयूटी' से मतलब।

पुरुषोत्तम अरे यार, किसी और को पढ़ाना। पहाड़ पर जा कर कौन साला काम करता है। मुफ्त का माल है उड़ाओ

माधव नहीं, हमारे साहब तो 'मीटिंग' में गये थे।

पुरुषोत्तम यह कहो यह बहाना करके अपनी मेम साहब से छुटकारा पाने गये थे। फिर कहाँ की 'मीटिंग' कहाँ की 'फ़ाइल'। टिफ़िनटाप क्या गोवर्धन है जा

माधव अच्छा, काम की बात कर।

पुरुषोत्तम क्या भाभी पीछे खड़ी है (हँसता है।)

माधव (परेशान होकर 'स्टूल' पर बैठ जाता है। दबी नज़र से स्त्री की ओर देखता है।)

पुरुषोत्तम अरे, ओ माधव!

माधव (उठ कर नीचे झाँक कर) अब क्या है, मेरी खोपड़ी मत खाओ, इतना सफ़र करके लौटा हूँ आज ही।

पुरुषोत्तम तुम इंटर पास हो ना!

माधव हाँ।

पुरुषोत्तम तुम्हारा नाम गया है।

माधव (उत्सुक होकर, अधिक आगे झुक कर) कहाँ!

पुरुषोत्तम बढ़ती के लिए।

माधव किसने भेजा?

पुरुषोत्तम अपने यूनियन के मन्त्री न।

माधव अरे यार, वह तो हर चुनाव के पहले कितनी बार भेज चुका है। मन्त्री बन जाता है, फिर साल भर गोल।

पुरुषोत्तम है तो अपना ही आदमी।

माधव इससे क्या, अपना हो या न हो, जनतन्त्र में सब बराबर है।

स्त्री (बात भंग करने के इरादे से) कौन है?

माधव (जल्दी से अन्दर देख कर) पुरुषोत्तम! (फिर बाहर देखने लगता है।)

पुरुषोत्तम तो तुम्हीं मन्त्री बन जाओ, पढ़े लिखे तो हो।

माधव मैं ऐसे ही प्रसन्न हूँ।

स्त्री बन क्यों नहीं जाते। हाँ कह दो न, नाना ने—(उठने का उपक्रम करती है।)

माधव (स्त्री से) समझती हो नहीं कुछ भी, मत बोलना। (बाहर झाँकता है)

पुरुषोत्तम अरे कैसी प्रसन्नता अब तो बस सनीमे में राज कपूर हँसते हैं, हमारे तुम्हारे लिये तो खाली निपोरना रह गया है, वह भी जब तक बत्तीस दांत हैं तभी तक।

माधव (पुरुषोत्तम से) अभी तो हैं हैं।

स्त्री सुनो! पड़ोसिन कह रही थी कि नये टाकीज में 'जिस देश में गंगा बहती है' आया है। कहीं नहीं घुमाया है तो उसे दिखा दो।

माधव (स्त्री से) क्या कहती है?

पुरुषोत्तम मखाराम कह रहा था। बना-ठना आदमी के [illegible] दाँत भी होते हैं, [illegible]

माधव (पुरुषोत्तम से) कौन मखाराम?

स्त्री 'जिस देश में गंगा बहती है'।

माधव (स्त्री से) क्या [illegible] बाबर, [illegible]

आओ, मुझे फ़ुरसत नहीं है।

पुरुषोत्तम — वही जो हाई स्कूल में फेल हो गया था, फिर कवि बन गया था। कविता अविता चली नहीं तो अब एक चीना के साझे में दाँत बनाने की दूकान खोले बैठा है।

माधव — (पुरुषोत्तम से) अच्छा किया उसने, नौकरी से धंधा भला।

स्त्री — बाबा जी नहीं, सनीमा आया है।

माधव — (स्त्री से) ओ सनीमा!

पुरुषोत्तम — लेकिन इन चीनियों का क्या ठिकाना। आज साझा कल नाता फिर न जोरू न जाता। और सखाराम तो बिलकुल पंचशील वाला आदमी है, न यहाँ का रहेगा न वहाँ का!

माधव — (पुरुषोत्तम से) तो क्या हुआ, अब हम सारी दुनिया को एक समझना चाहिए।

स्त्री — पर 'जिस देश में गंगा बहती है', ऐसा-वैसा सनीमा नहीं है।

माधव — (स्त्री से) सब सनीमे एक से होते हैं।

पुरुषोत्तम — हाँ, पर सारी दुनिया भी हमें एक-सा देखे तब न!

माधव — (पुरुषोत्तम से) देखेगी नहीं तो जाएगी कहाँ।

स्त्री — अब मैं कसम खाती हूँ कभी नहीं देखूँगी। (नाराज हो कर पलंग पर पीछे जा कर बैठ जाती है, अपनी तश्तरी निकाल कर मठरी खाने लगती है।)

माधव — (स्त्री से) मैं अपनी गोल दुनिया की बात नहीं कर रहा हूँ।

पुरुषोत्तम — अच्छा चलूँ, नहीं तो तुम्हारी भाभी खाने को दौड़ेगी—जैसे मैं कोई गाजर-मूली हूँ!

माधव — (एक नजर अन्दर डाल कर फिर बाहर झाँक कर पुरुषोत्तम से) तुम्हारी भाभी ने तो यहाँ खाना शुरू कर दिया है। (हँस कर स्टूल पर बैठ जाता है।)

स्त्री — (तश्तरी रखते हुए) हाय राम, शरम नहीं आती तुम्हें

[दो]

[सुबह ९ और १० के बीच का समय। माधव के मकान का नीचे का सामने का भाग। मच पर दाहिनी ओर सीढी का नीचे वाला दरवाजा ह जिस पर 'माधव चपरासी' की तख्ती लगी हुई है। एक लम्बा-सा चबूतरा है दीवार के किनारे किनारे। बायी ओर 'लम्प-पोस्ट' का निचला भाग दीख रहा है। माधव से कुछ अधिक उम्र के दो चपरासी आकर चबूतरे पर बैठ जाते ह— सीतल और बद्री। शक्ल से ढग से बिना पढे लिखे लगत ह। बद्री माधव का आवाज दता है जैसे कि सूचना द रहा हो कि हम लोग आ गये। फिर जेब से बीडी निकालता ह। माचिस के लिए जेब टटोलता है। माचिस नही मिलती।]

बद्री सीतल !

सीतल (पगडी उतार कर ठीक करत हुए) क्या है ?

बद्री माचिस ह ?

सीतल नही, ऊपर स माँग लो।

बद्री (खडा हो कर ऊपर सिर करके) माधव, ओ माधव।

[कुछ देर बाद ऊपर से एक दबा सा स्त्री स्वर सुनाई पडता ह—'अभी आ रहे ह'।]

बद्री भौजी ! जरा माचिस फेंक दो।

[कुछ देर बाद ऊपर स एक माचिस आ कर गिरती ह। बद्री बढ़ कर उठा लेता ह। चबूतरे पर आ कर बैठ जाता है और बीडी जला लेता है। एक सीतल को दे देता है पर वह मना कर देता ह। उसकी खुली पगडी ठीक स लिपट नही रही ह।]

सीतल (पगडी ठीक करते हुए) बद्री, आज तुम्हारे साहब

आयेंगे ?

बद्री (बीडी का कश न भर) क्या मालूम, आएँ तो, न आए तो, हमें तो ड्यूटी बजानी है।

सीतल जब साहब नही है, तो ड्यूटी किसकी। मनमौजी हैं, बैठे रहो।

बद्री ड्यूटी साहब की नही सरकार की है। साहब आते रहते हैं, जाते रहते हैं, पर अपनी सरकार वहीं रहती है।

सीतल (बद्री की ओर झुक कर) माधव कह रहा था कि सरकार भी बदल रही है।

बद्री (बीडी पीना रोक कर) सरकार बदल सकती है ? (माथे पर सिलवटें आ जाती है जैसे समझने की कोशिश कर रहा हो।)

सीतल हाँ, जैसे अपने यूनियन मे मंत्री बदल सकता है।

बद्री (तनाव से मुक्त हो कर) अरे, सब बातें हैं, आज दस साल से तो मैं यहाँ हूँ, अभी तक मंत्री बदला नही। हम तो उसका अब असली नाम भी भूल गये हैं।

सीतल (पगडी ठीक से लगाते हुए) हाँ, बात तो तुम ठीक कह रहे हो, पर माधव हमेशा सच्ची बात कहता है, पढा लिखा है। साहब से अँग्रेजी मे बात करता है।

बद्री अरे सीतल, अँग्रेज तो रहे नही, फिर अब साहब कौन बहुत अँग्रेजी बोलते हैं। माधव ने भी दो-चार बातें रट ली होगी, वही गिटिर पिटिर कर लेता होगा। तुम भी सीतल

सीतल नही बद्री, तुम्हारे ही बगल मे तो बैठा पढता रहता है।

बद्री (बीडी फेंक कर) क्या मालूम पढता रहता है। बाँचना और बात है और ऐसे दिखाने को किताबिया खोल कर बैठना और बात है। अभी नये छोकरे हैं, नये, यह सब

फशन म आता ह ।

सीतल हमारा-तुम्हारा तो बहुत खयाल रखता ह ।

बद्री मेरा नाम बद्री है, सीतल, बद्री । मेरा [illegible] कौन नहीं रखता ।

सीतल भौजी ।

बद्री (सहसा शिथिल हो कर) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] न था सीतल । यह तो बद्री था कि [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]

[इतने म माधव वहाँ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] म नीचे आ जाता ह ।]

माधव राम राम सीतल, राम-राम [illegible] ।

सीतल राम राम भइय्या, [illegible] बैठो । [illegible] और अपना पगड़ा [illegible] [illegible] [illegible] । ([illegible] बैठ जाता है)

बद्री (कुछ चिड़चिड़ [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] माधव का आना अच्छा न लगा हो ।) [illegible] ।

माधव बद्री किसको [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ?

सीतल अरे, इसकी [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] का [illegible] रहता ह । [illegible] [illegible] ।

बद्री मुझे कौन [illegible] ।

माधव तुम्हारा [illegible] [illegible] [illegible] ।

सीतल यह क्या [illegible] ?

माधव करना ।

सीतल [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] नरक [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

बद्री [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

माधव [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

सीतल [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

जबान पर भइय्या। जरा फिर से कहना।

माधव हर आदमी

सीतल हर आदमी

माधव दूसरे के लिए

सीतल दूसरे के लिए

माधव नक

सीतल नरक

माधव और अपने लिए

सीतल और अपने लिए

माधव स्वर्ग

सीतल सरग

माधव देखता है।

सीतल देखता है। (हँसता है।) हर आदमी दूसरे के लिए सग्ग

माधव क्यो सीतल, क्या बद्री की सच मे भौजी से नही पटती ?

सीतल पटती होती तो क्या इस तरह से यह हमेशा खउआना रहता!

माधव अरे, यह तो इसकी आदत है।

सीतल आदत नही, करम का फल है।

बद्री सीतल!

सीतल (हिम्मत बाँध कर) हाँ!

बद्री तुम उस दरिद्दर से मोहाने हो क्या ?

सीतल (समझाते हुए) औरत जात से नरमी से काम लेना चाहिये। यही मैं तुमसे कहता हूँ और सारी पचायत से।

माधव (बाच में पड़ते हुए) बात क्या है, तुम्हा बताओ सीतल।

[बद्री एक बीडी सुलगा लेता है और इस प्रकार से बैठ जाता है मानो इन बातो से उसका कोई मतलब न हो।]

सीतल अब क्या गिनाऊ

माधव फिर भी!

सीतल (माधव की ओर झुक कर) कहता है जरा-सी बात करती था और बीच में बीस बार 'और ये लो' 'और ये लो' कहती थी। सो इसे अच्छा नही लगता था।

माधव यह तो कोई बात हुई नही।

सीतल और भौजी अपने मके से एक बिल्ली ले आयी थी, जिसके लिए उसने कठी धरी थी। सो कहता है पहले बिल्ली को खिला कर उसे खाना देती थी।

माधव यह तो उसकी ज्यादती थी, पर

सीतल और बद्री कहता है, मालूम नही सच कि झूठ, जब वह घर मे घुसता था तो भौजी खाट डाल कर उसके नीचे जा कर आराम से उलर जाती थी।

[बद्री कई बार अपने बठने का ढग बदलता है।]

माधव तब तो

बद्री तब तो, तब तो क्या, यह सब तो तुम्हारी किताबिया में लिखा नही है। तुम्हारे पढ़े लिखे से हम लोगो को कौन फायदा है। हम जोरू को सैन्डिल पहना कर मटकवाएंगे तो नही जो उसकी खुसामद करते घूमें। और क्या कहोगे?

सीतल अरे बद्री, नान से बालक की तरह फूट पडा, माधव को बात तो कह लेने दे।

माधव नही सीतल, मैं सच में बद्री को सलाह देने के क़ाबिल नही हूँ (विचारो में खो-सा जाता है, फिर सहसा सजग हो कर) चलो चलें नही तो देर हो जायेगी!

[तीन]

[मच ग्रक दो का। समय सुबह का। कुछ लोग चबूतरे पर जमा हैं। बीडी, हुक्का चल रहा है। उनमे बद्री और सीतल भी है। मुख्य व्यक्ति गुरुवचन है। बहस चल रही है। कुछ लोग चपरासी की अधूरी वर्दी पहने हैं, और —

लोग सादे कपड़े पहने हैं।]

गुरुवचन बख्शी नहीं आया, आज तो इतवार है ? और चुनाव का मीटिंग !

एक स्वर बेचारा आज भी साहब का सौदा लाने में फँस गया होगा।

गुरुवचन यह सरासर जातती है। हमारा सौदा ला कर कौन देता है।

दूसरा स्वर गुरु एक बात है, खस की टट्टी पर पानी डालने वाला सुबह शाम खाली रहता है उसे हमारा सौदा लाना चाहिए।

बख्शी अरे फर्श साफ करने वाले को उठ कर हमें सलाम करना चाहिए।

गुरुवचन हाँ ठीक है, अपनी इज्जत अपने हाथ। अगर हम लोग अपने को महत्त्व नहीं देंगे तो हमें कौन पूछेगा! (कुछ जोश में आ जाता है।)

एक स्वर चपरासी यूनियन जिन्दाबाद।

एक स्वर चुप रह। समझता कुछ है नहीं। बन्द मीटिंग हो रही है कि पब्लिक मीटिंग ? चला जिन्दाबाद करने!

पहला स्वर जिन्दाबाद से हमें कोई नहीं रोक सकता।

गुरुवचन अरे भाई, लड़ो मत। अभी बहुत बातें सुलझानी हैं। हाँ, तो पहली माँग है कि पानी डालने वाले और फर्श साफ करने वाले 'असिस्टेन्ट चपरासी' कहलाएँ। इस नाते खाली समय में हमारा काम करें, क्योंकि देश की आजादी के साथ हमारी जिम्मेवारियाँ बढ़ गयी हैं और हमें अपना काम खुद करने के लिए फुरसत कम मिलती है।

सीतल पर माधव तो कह रहा था कि सब बराबर हैं। न हम किसी की बेगारी करें और न कोई हमारी।

गुरुवचन पर सीतल, हमें तो देश की स्थिति देखते हुए बेगारी करनी ही पड़ेगी, तब अपनी बेगारी करवाने का अधिकार क्या न माँगें ? अच्छा, और किसी को कुछ कहना है, या यह पास

माना जाए।

[कुछ देर सब चुप रहते हैं]

एक स्वर — सलामी वाली बात रह गयी।

दूसरा स्वर — सलामी तो कुर्सी की होती है। हमें तो स्टूल मिलता है।

बद्री — और स्टूल बिना गद्दी का बैठे-बैठे तो मेरा शरीर पिराने लगता है।

गुरुवचन — ठीक है, तो हमारी दूसरी माँग होगी कि स्टूल पर रखने के लिए हम लोगों को एक गद्दी दी जाय। और जब कुर्सी को सलामी दी जा सकती है तो गद्दीदार स्टूल को भी दी जा सकती है।

सीतल — माधव सलामी के खिलाफ है। कहता है वह गुलामी की निशानी है। आज़ाद देश में हम सब भाई भाई हैं।

बद्री — जब देखो माधव कहता है, माधव कहता है—पतुरियों की तरह। माधव न हो गया, मिनेस्टर हो गया। बुढ़ा गये हो, कुछ अपनी भी तो कहो।

पहला स्वर — बद्री ठीक कहता है। माधव अगर हमारी माँगें नहीं चाहता तो चपरासी बना क्यों घूमता है—बाबू बन जाए, पढ़ा लिखा तो है।

गुरुवचन — अगर माधव हमारी माँगों के लिए नहीं लड़ेगा तो हम चुनाव में उसे खड़ा कैसे करेंगे। जो भी हमारा नेता हो उसे पहले अच्छा चपरासी होना ज़रूरी है।

बद्री — पक्की बात कही गुरुवचन, तुमने?

पहला स्वर — जो हमें सलामी देगा, दौरे पर उसे रेल में हमसे नीचे दर्जे में चलना चाहिए।

दूसरा स्वर — पर थरड से नीचे तो कोई दर्जा होता नहीं।

पहला स्वर — (कुछ सोच कर) मालगाड़ी होती है।

दूसरा स्वर — उससे क्या, उस गाड़ी में चलेगा तभी तो हमारा असबाब

चढ़ाए-उतारेगा और हर स्टेशन पर ला कर पानी पिलायेगा।

पहला स्वर — तब ?

[सब सोच में पड़ जाते हैं।]

बद्री — एक तरकीब हो सकती है।

सब साथ — क्या ?

बद्री — हमें सेकेंड का भत्ता दिया जाए।

गुरुवचन — ठीक, हमारी तीसरी माँग है कि हमें सेकेंड का भत्ता दिया जाए।

एक स्वर — जहाँ हम दौरे पर जाएँगे वहाँ क्या निखट्टू-से गद्दी वाली गाडी से उतर कर खड़े हो जाएँगे—पान पानी, सलामी—कुछ तो हो।

दूसरा स्वर — हाँ, यह तो ठीक नहीं है। हमारे दौरे की खबर पहले से वहाँ हो जानी चाहिए। वहाँ के असिस्टेन्ट चपरासी टेमन आएँ और सलामी दें।

गुरुवचन — पर हमारे पास कर देने से क्या होगा। वहाँ के यूनियन को भी तो यह बात मनवानी पड़ेगी। अभी मैं समझता हूँ

बद्री — तो क्या हुआ, माँग रख देने में क्या नुक़सान है ?

पहला स्वर — हाँ और क्या, दस माँगें रखेंगे तो एक पूरी होगी। रखना जो हमें सो, गलत या सही। अपना क्या जाता है।

गुरुवचन — अच्छा ठीक है।

बद्री — अब कौन चुनाव में खड़ा होगा, पक्की कर लो।

गुरुवचन — हाँ, भाई, माँग बहुत टेढ़ी है।

सीतल — मैं तो माधव को ही सोच रहा था।

पहला स्वर — माधव में क्या बात है ?

सीतल — पढ़ा लिखा है, आजकल के ज़माने में

दूसरा स्वर — पढ़ा लिखा सब बरोबर है। महँगी सबके लिए है।

पहला स्वर — हाँ माधव आ कर पंचों के बीच कहे कि उसके लिए महँगी

नही ह । हम तुम तो सतुआ खा लेंगे, उसी का टमाटर-बिना टेटुआ नही चलेगा ।

गुरुवचन — महँगी और चुनाव से क्या करना है । अगर माधव हमारी माँगें पूरी करने के लिए लडने को तयार हो तो खडा हो जाए, हमें क्या ?

पहला स्वर — माधव मीटिंग में क्यो नही आया ?

गुरुवचन — वह मुझसे कह गया था कि आज जल्दी नही आ पाएगा ।

दूसरा स्वर — तो क्या हुआ, पहले आ कर भाषण दे ।

बद्री — भाषण क्या देगा, अभी तो नहा रहा होगा । ही, ही, ही

पहला स्वर — क्या माने बद्री, उसके नहाने पर हँसे क्यो ?

बद्री — माधव के नहाने पर ?

पहला स्वर — हाँ, माधव के नहाने पर ?

बद्री — सीतल से पूछो, ही, ही, ही,

[सीतल कुछ सकुचित हो कर चिढ़-सा जाता है । कई प्रकार से भगिमाएँ बदलता है ।]

सीतल — बद्री, तुम्हारी मति तो नही बिगड गयी है ।

गुरुवचन — बद्री साफ साफ कहो चुनाव का मामला है ।

बद्री — क्या कहें गुरुवचन माधव अपना आदमी है पर

दूसरा स्वर — हाँ, हाँ, कहो

बद्री — वह पढ़ा लिखा ह ?

पहला स्वर — हाँ, है !

बद्री — वह बिना पाजामा पहने नहाता है ।

गुरुवचन — बिना पाजामा पहने नहाता है ?

पहला स्वर — बिना पाजामा पहने नहाता है ।

दूसरा स्वर — बिना पाजामा पहने, बाप रे बाप ! !

गुरुवचन — आज तक कोई चपरासी बिना कुछ पहने नही नहाया ।

पहला स्वर — न सुना, न जाना !

दूसरा स्वर उसको हम चुनाव में कैसे खड़ा कर सकते हैं, बात फलत देर तो लगती नहीं

गुरुवचन हाँ, नहीं करेंगे।

[सब उठाने लगते हैं।]

सीतल (एक हाथ आगे करके रोकने का इशारा करते हुए) अरे, सुनो, माधव पढ़ा लिखा है हमारा इतना खयाल रखता हमें मगा वह कैसे

[सब उठ जाते हैं।]



यह पूरा नाटक एक शब्द है

पात्र

●

आवाज़ १ नेमी २ गणेश

●

[एक सादा कमरा। मच के पीछे की ओर बीच से कुछ बाएँ हट कर एक दरवाज़ा ह। कमरे के बीच में एक कुर्सी पडी है, जिसका सामना दर्शकों की ओर है। कुर्सी के सामने मेज़ ह, जिस पर एक अखबार पडा ह। मच पर सामने की तरफ बाइ ओर एक खाट पडो ह और दाइ ओर दीवार से निकले सीमेंट क लम्बे तख्ते पर एक हाथ का बना हुआ खुला (बिना केबिनेट का) रेडियो, एक बिना फूल का फूल-दान, एक-दो पुरानी गद भरी किताबें और कई छोटी मोटी चीजें बिखरी हैं। नेमी कुर्सी पर बठा हुआ है। उसके पैर मेज पर फैल हुए हैं और सिर पीछे की ओर ढुलका हुआ है।]

आवाज (बाहर से दरवाज़ा खटखटाने की) खट, खट, खट।

नेमी (सिर उठाकर) कौन।

आवाज (बाहर स) मैं।

नेमी मैं कौन?

आवाज (बाहर से) जो तुम नही हो।

नेमी (सीधे बठने हुए) ओह, समझा—तुम।

आवाज (बाहर से) हाँ म।

नेमी (माथे पर सलवटें डाल कर) फिर मैं।

आवाज (बाहर से) एक बार नही सौ बार मैं।

नेमी (पर नीचे रखते हुए, दोनो घुटनो पर दोनो कुहनियां टिका कर खुली हथलिया के बीच चेहरा रख कर) क्या पूरा जुलूस ह?

आवाज (बाहर स) नही।

नेमी (तन कर बठते हुए, हाथो को कमर पर टिकाकर चिडचिडे स्वर म) फिर?

आवाज (बाहर स) अकेला मैं।

नेमी (शिथिल होकर) ओ, तब ठीक है, खोलता हूँ, पर अभी घुसना मत (उठ कर दरवाज़े की सिटकनी खोल देता ह फिर आकर कुर्सी पर बठ जाता है, मेज़ पर पैर फला कर) आओ ! कुछ दर रुक कर) आ ऽऽ ओ !! (दरवाज़े की ओर मुँह मोड़ कर) मैं कहता हूँ आ ऽऽऽ !!! ओ...... (दाहिने हाथ से अपनी छाती पर हल्की-सी थपकी देकर) मैं (अपना हाथ देखता है, फिर हथेली उलट पलट कर देखता है। चेहरे पर घबड़ाहट आ जाती है। दरवाज़े की ओर मुँह कर के कुछ बोलने की कोशिश करता है, पर आवाज़ नही निकलती यद्यपि मुंह चलता है। मुह बन्द करक फिर एक बार अपना हाथ देखता ह मानो उस पर लिखा हो आगे क्या होगा। बारी-बारी से अपना हाथ और दरवाज़ा दखता ह। उठ कर खड़ा हो जाता ह। दबे कदम रखते हुए दरवाज़े के पास जाता ह। दोनो हाथो से दरवाज़े क पाटो में लगे हैंडिल पकड लेता ह। एक पल के लिए रुकता ह। फिर एकदम दोनो पाट अन्दर खीच कर दरवाज़ा खोल देता ह। कोई नही है। आहिस्ते से एक कदम आगे रख कर फिर सिर आगे बढाता ह। दाएँ फिर बाएँ सिर नचा कर देखता ह। जिस तरह से सिर और पैर बाहर गए थे उसी तरह से पहले सिर फिर पैर आहिस्ते से अन्दर कर लेता ह। एक पल क लिए सतक खड़ा रहता ह। फिर जल्दी से कूद कर कमरे के बाहर हो जाता ह। मुड कर इधर-उधर देख कर, अन्दर हाथ डाल कर दरवाज़ा बन्द कर लेता ह।)

आवाज़ (बाहर से) खट खट खट्।

नेमी (दरवाज़ा खोल कर, अन्दर आकर, फिर दरवाज़ा बन्द कर) कौन !

(बाहर जाकर, दरवाज़ा ब द कर) मैं !

(अन्दर आकर दरवाजा बन्द कर) मैं कौन ?
(बाहर जाकर, दरवाजा बन्द कर) जो तुम नही हो।
(अन्दर आकर, दरवाजा बन्द कर) ओह, समझा—तुम !
(बाहर आकर, दरवाजा बन्द कर) हाँ, मैं।
(अन्दर आकर, दरवाजा बन्द कर) फिर मैं।
(बाहर जाकर, दरवाजा बन्द कर) एक बार नही सौ बार मैं।
(अन्दर आकर, दरवाजा बन्द कर) क्या पूरा जुलूस है ?
(बाहर जाकर, दरवाजा बन्द कर) नही।
(अन्दर आकर, दरवाजा बन्द कर) फिर !
(बाहर जाकर, दरवाजा बन्द कर) अकेला मैं।
(अन्दर आकर दरवाजा बन्द कर) ओ, तब ठीक है, खोलता हूँ, पर अभी पुराना मत (दरवाजे की सिटकनी चढ़ा कर बन्द कर देता है। दरवाजे को देखते हुए उल्टा पीछे चलता है। हाँफ रहा है और थक गया है। खाट से पैर लड़ता है। खाट पर गिर सा पड़ता है। टूटते स्वर में) आ ओ !(कुछ देर बाद एक कोहनी पर उठता है। गर्दन निकाल कर गौर से दरवाजे की ओर देखता है। धीरे धीरे चेहरे पर सहजता फिर मुसकराहट आती है। एक हाथ से माथा ठोकता है।) मैं भी अजीब हूँ ! (मुस्कराता हुआ सिर हिलाता हुआ उठता है। दरवाजे की सिटकनी खोल देता है। आ कर कुर्सी पर बैठ जाता है। अखबार उठा कर आँखों के सामने फैला लेता है। मित्रता भरे स्वर में) आओ !! (कुछ देर बाद) आओ न, भई माफ करो पहले सिटकनी लगी रह गई थी (मुड़ कर दरवाजे की ओर देखता है। अखबार मेज पर डाल कर, उठकर दरवाजा खोलता है। कोई नही है। दोनों हाथ नचाता है जैसे कह रहा हो अजीब बात है। दर[illegible] कर देता है। सिटकनी लगा देता है। आकर

जाता है। बडबडाता है) कौन मैं मैं कौन जो तुम नहीं हो (लेट जाता है) ओह समझा तुम हाँ मैं फिर मैं (सो जाता है। खुर्राटे लेने लगता है। कुछ देर बाद 'खट, खट, खट्'। दौड कर जल्दी से दरवाजा खोल देता है। गणेश अन्दर आ जाता है। नेमी गणेश को अवाक् देखता है। उसे हल्के से छू कर जल्दी से अपना हाथ खींच लेता है, मानो बिजली लग गई हो फिर हाथ बढा कर कस कर गणेश की बाँह पकड लेता है। दर्द से गणेश के मुह से चीख निकल जाती है। उसकी आवाज सुनते ही नेमी होश में आ जाता है। गणेश से लिपट जाता है और कहता है) गणेश, ओह गणेश, तुम हो तुम हो तुम

गणेश (नेमी को अलग करते हुए) यह सब क्या है नेमी ?

नेमी तुम हो

गणेश (कुर्सी पर बैठते हुए) हाँ, मैं हूँ।

नेमी फिर मैं ! ।

गणेश (खीझ कर) अच्छा, बक बक मत करो, रेडियो चला दो।

नेमी (यत्रवत रेडियो के पास जा कर उसे चला कर) क्यो ?

गणेश उससे मानव के प्रति मेरी आस्था बढती है।

नेमी रेडियो से ?

गणेश हाँ, रेडियो से ! (अखबार हाथ में ले लेता है।)

नेमी (खाट पर बैठते हुए) क्यो ?

गणेश क्यो कि वह बोलता है।

नेमी पर बोलता तो मै भी हूँ।

गणेश हाँ, पर तुम तो मुह से बोलते हो (नेमी मुह खोलता है और खुला रखता है) जानवरो की तरह (गणेश अखबार सामने कर पढ़ने लगता है, नेमी मुह बन्द कर लेता है। गणेश मेज पर अखबार डाल कर उठता है। नेमी का एक हाथ अपनी

दो उँगलियों के बीच पकड़ कर उठाता है और छोड़ देता है। नेमी का हाथ इस प्रकार गिर पड़ता है जैसे उसमें जान ही न हो। ऐसा ही दूसरे हाथ के साथ होता है। फिर गणेश एक-एक कर के नेमी के दोनों कान ऊपर की ओर खींचता है, जिसके साथ नेमी का सिर घूमता है मानो उसमें कोई विरोध की शक्ति न हो। अन्त में गणेश नेमी के सिर के बाल पकड़ कर खड़े कर देता है और कहता है) यह आदमी की निशानी है।

नेमी (आहत महसूस करते हुए) मैं एक शरीफ आदमी हूँ।

गणेश (कुर्सी पर बैठते हुए और हाथ झटकते हुए जैसे कह रहा हो—हटो भी) इतना ही कहो कि बीमार जानवर हो! अभी हमारा ज्ञान इतना नहीं बढ़ा है कि ठीक-ठीक बता सकें कि तुम्हारे ऊपर शराफत उतरी है या और कोई बीमारी। अगर शराफत है तो उसका इलाज मेरे पास है। (उठ कर रेडियो की आवाज तेज़ कर देता है।)

नेमी (तेज़ आवाज़ से परेशान होते हुए) गणेश, रेडियो धीमा कर दो या बन्द कर दो।

गणेश (अखबार उठा कर पढ़ने लगता है।)

नेमी मैं कह रहा हूँ रेडियो बंद कर दो।

गणेश (अखबार से नज़र उठा कर) क्या? (फिर अखबार पढ़ने लगता है।)

नेमी मुझे अच्छा नहीं लग रहा है। मैं कहता हूँ

गणेश मुझे अच्छा लग रहा है।

नेमी (बिगड़ कर) रेडियो मेरा है कि तुम्हारा?

गणेश (उठ कर रेडियो बन्द कर देता है।) लो तुम ठीक हो गये। (रेडियो की ओर देख कर) मानव महान् है। (कुर्सी पर बैठ जाता है।)

जाता ह । बडबडाता ह) कौन मैं म कौन जो ि
हो (लेट जाता ह) ओह समझा तुम हां मैं ि
(सो जाता है । खुराटे लेने लगता ह । कुछ देर
खट्, खट' । दौड कर जल्दी से दरवाजा खोल दे
अन्दर आ जाता ह । नेमी गणेश को आवाक
हल्के से छू कर जल्दी से अपना हाथ खीच
बिजली लग गई हो फिर हाथ बढ़ा कर ब
बांह पकड लेता ह । दद से गणेश के
जाती है । उसकी आवाज सुनते ही
है । गणेश से लिपट जाता है और
गणेश, तुम हो तुम हो तुम

जाता है। बडबडाता है) कौन मैं मैं कौन जो तुम नही हो (लेट जाता ह) ओह समझा तुम हाँ मै फिर मैं (सो जाता ह। खुर्राटे लेने लगता है। कुछ देर बाद 'खट, खट, खट'। दौड कर जल्दी से दरवाजा खोल देता ह। गणेश अन्दर आ जाता ह। नेमी गणेश को अवाक देखता है। उर हल्के से छू कर जल्दी से अपना हाथ खीच लेता ह, मान बिजली लग गई हो फिर हाथ बढ़ा कर कस कर गणेश क बाह पकड लेता ह। दद से गणेश के मुह से चीख निक जाती ह। उसकी आवाज सुनते ही नेमी होश में आ जा ह। गणेश से लिपट जाता है और कहता ह) गणेश, ओ गणेश, तुम हो तुम हो तुम

गणेश (नेमी को अलग करते हुए) यह सब क्या है नेमी ?

नेमी तुम हो

गणेश (कुर्सी पर बठते हुए) हाँ, मैं हूँ।

नेमी फिर मं।।

गणेश (खीझ कर) अच्छा, बक बक मत करो, रेडियो चला दो।

नेमी (यन्त्रवत् रेडियो के पास जा कर उसे चला कर) क्यो ?

गणेश उससे मानव के प्रति मेरी आस्था बढती ह।

नेमी रेडियो से ?

गणेश हाँ, रेडियो से। (अखबार हाथ में ले लेता ह।)

नेमी (खाट पर बठते हुए) क्यो ?

गणेश क्यों कि वह बोलता ह।

नेमो पर बोलता तो म भी हूँ।

गणेश हाँ पर तुम तो मुह से बोलते हो (नेमी मुह खोलता ह खुला रखता ह) जानवरो की तरह (गणेश अखबार कर पढ़ने लगता ह, नेमी मुह बन्द कर लेता है। गणे पर अखबार डाल कर उठता ह। नेमी का एक हाथ

नॉब घुमाने से आवाज का घटना और बढ़ना कोई बड़े ताज्जुब की बात हो। कई बार आवाज कम और तेज करता है मानो इसमें उसे आनन्द आ रहा हो। सहसा बाहर से आवाज आती है—खट्, खट, खट! रेडियो धीमा करके दरवाजे की ओर मुह करके) आ जाओ! (कुछ देर रुक कर दरवाजे क पास पहुँच कर दोनो पाट सहसा खोल देता है। दो अजीब कपडे पहने लोग अन्दर आ जाते हैं। एक गणेश के दाहिनी ओर खड़ा हो जाता है, दूसरा बायी ओर। गणेश एक क़दम पीछे हट जाता है। दोनों को सिर घुमा कर देखता है। पर दोनो आदमियों (१ और २) की दृष्टि बजते हुए रेडियो पर गडी है। १ बढ़ कर रेडियो को उसकी जगह से खिसका देता है। २ और गणेश सरक कर उसके पास आ जाते हैं।

१ (गणेश से) यह क्या है?

गणेश रेडियो।

२ किसने बनाया?

गणेश मानव ने।

२ (१ से) कहा था न! (हँसता ह।)

१ (गणेश से) यह मानव क्या ह?

गणेश (चुप उसकी ओर देखता ह।)

२ (गणेश से) तुमने उसे देखा है?

गणेश नही।

१ तब तुम्हें कैसे मालूम कि रेडियो उसी ने बनाया है?

गणेश मेरे पिता ने मुझे ऐसा ही बताया है।

१ (गणेश के कधे पर जोरो से हाथ मार कर जिससे वह सामने गिरते-गिरते बचता ह) हो यार मजेदार! अच्छा कैसा होगा यह मानव जो तुम्हारे लिये रेडियो बना-बना कर भेजता ह?

गणेश उसकी कल्पना नही की जा सकती।

नेमी (लेटते हुए) गणेश !

गणेश हाँ !

नेमी (एक कोहनी पर उठ कर) अभी तुम्हारे आने के पहले एक खट-खट् हुई। मैंने उठ कर दरवाजा खोला तो वहाँ कोई नहीं था।

गणेश कितने भाग्यवान हो तुम।

नेमी (चौंक कर) क्या ?

गणेश जहाँ आदमी हो सकता था वहाँ नहीं मिला। मेरी आशा का कमल खिलने के लिये इतना काफी है।

नेमी (उठ कर गणेश का हाथ पकड़ कर उसे उठाता है। उसे खींच कर दरवाज़े के पास ले जाता है। स्वयं दरवाजा खोल कर बाहर चला जाता है। अन्दर हाथ डाल कर दरवाजा बंद कर देता है। बाहर से कहता है) सिटकनी लगा दो (गणेश यंत्रवत सिटकनी लगा देता है।) अब जा कर कुर्सी पर बैठ जाओ।

गणेश (कुर्सी पर जाकर बैठ जाता है। उठ कर रेडियो चला देता है। धीमी आवाज में वाद्यवृन्द का स्वर सुनाई पड़ता है। फिर आकर कुर्सी पर बैठ जाता है। कुछ देर बाद बाहर से आवाज आती है—खट्, खट् खट।) कौन ?

नेमी (बाहर से) मैं।

गणेश (उठ कर सिटकिनी खोल देता है और आ कर कुर्सी पर बैठ जाता है।) आओ। (दरवाज़े की ओर मुँह मोड़ कर) आओ !! (उठ कर दरवाजा खोलता है। कोई नहीं है। दरवाजा भेड़ देता है। आ कर कुर्सी पर बैठ जाता है। फिर उठ कर रेडियो के सामने आ जाता है और उसे प्रशंसा की दृष्टि से देखता है। हाथ बढ़ा कर रेडियो तेज कर देता है फिर कम कर देता है। उसकी प्रशंसा में वृद्धि आ जाती है। मानो ज़रा सी

नॉब घुमाने से आवाज का घटना और बढ़ना कोई बड़े ताज्जुब की बात हो। कई बार आवाज कम और तेज करता है मानो इसमें उसे आनन्द आ रहा हो। सहसा बाहर से आवाज आती है—खट्, खट, खट! रेडियो धीमा करके दरवाजे की ओर मुह करके) आ जाओ! (कुछ देर रुक कर दरवाजे के पास पहुँच कर दोनो पाट सहसा खोल देता है। दो अजीब कपडे पहने लोग अन्दर आ जाते हैं। एक गणेश के दाहिनी ओर खड़ा हो जाता है, दूसरा बायीं ओर। गणेश एक क़दम पीछे हट जाता है। दोनो को सिर घुमा कर देखता है। पर दोनो आदमियो (१ और २) की दृष्टि बजते हुए रेडियो पर गड़ी है। १ बढ़ कर रेडियो को उसकी जगह से खिसका देता है। २ और गणेश सरक कर उसके पास आ जाते है।

१ (गणेश से) यह क्या है?

गणेश रेडियो।

२ किसने बनाया?

गणेश मानव ने।

२ (१ से) कहा था न! (हँसता है।)

१ (गणेश से) यह मानव क्या है?

गणेश (चुप उसकी ओर देखता है।)

२ (गणेश से) तुमने उसे देखा है?

गणेश नहीं।

१ तब तुम्हें कैसे मालूम कि रेडियो उसी ने बनाया है?

गणेश मेरे पिता ने मुझे ऐसा ही बताया है।

१ (गणेश के कंधे पर जोरो से हाथ मार कर जिससे वह सामने गिरते गिरते बचता है) हा यार मजेदार! अच्छा कैसा होगा यह मानव जो तुम्हारे लिये रेडियो बना बना कर भेजता है?

गणेश उसकी कल्पना नहीं की जा सकती।

१ उसके हाथ हैं ?

गणेश हा भी सक्ते हैं, नही भी हो सकने हं, वह अपनी बुद्धि व

२ बुद्धि क्या है ?

गणेश वह जानी नही जा सकती, वह एक शक्ति ह

१ हा, हा, हा (२ के कधे पर हाथ मार कर) शक्ति है

२ हा, हा, हा,

गणेश आप लोगो को विश्वास नही हो रहा है ?

१ जो दिखलाई नही देता जो जाना नही जा सक्ता, उसका विश्वास क्या ?

२ (गणेश की ओर मुड कर) यह जानता है मानव कहाँ ह और कैसा है, पर छुपा रहा है !

१ (गणेश की ओर बढते हुए) क्यो, यह बात है

२ बताओ कहाँ है ? (गणेश की ओर बढता है)

गणेश (घबडाकर एक बार दरवाज़े को देखता है, पीछे हटता ह, पर दोनो लपक कर उसका एक एक हाथ पकड लेते हैं। दद की रखाए गणेश के शरीर पर खिच आती हैं। मुश्किल स बोलता ह) अच्छा, व ता ता हूं (हाथो की पकड ढीली हो जाती ह) मैं उस बुला लाता हूं पर एक शत ह

१ और २ (एक साथ) क्या ?

गणेश आप लोग इस कमरे मे दरवाजा बन्द करके बठें। जब बाहर से किसी के रवाजा खटखटाने की आवाज आये तभी दरवाजा खोलें।

[१ और २ की नजरें आपस मे मिलती हैं। वे सहमत हो जाते ह । खीच कर गणेश को कमरे क बाहर ढकेल देते हैं। दरवाज़ा बन्द कर लते है। १ रेडियो ि उठा कर उलट पलट कर द सी इर्ध ह, उस पर अजीब शिश ने

की कोशिश कर रहा हो कि कुर्सी किस काम आती है। फिर दोनों कमरे के बीच में आ कर खड़े हो जाते हैं जैसे अब आवाज की प्रतीक्षा हो। 'खट्, खट खट'। दोनों एक दूसरे को देखते हैं। फिर दोनों दरवाजे के पास एक साथ पहुँचते हैं। एक एक पल्ला पकड़ कर खोल देते हैं। नेमी कमरे में आ जाता है। विस्मय से वह १ और २ को देखता है। १ और २ विस्मय से उसे देखते हैं।]

१ तुम मानव हो ?

नेमी हाँ हूँ तो।

२ यह रेडियो तुमने बनाया है ?

नेमी (अपने हाथों को देखते हुये) हाँ मैंने ही बनाया है।

[१ और २ सहम कर एक-दूसरे के पास सरक आते हैं।]

१ तुम्हारे पास बुद्धि है ?

नेमी हाँ है, लेकिन

[१ और २ खुले दरवाजे से सहसा बाहर भाग जाते हैं। नेमी कुछ देर तक दरवाजे के बाहर देखता रहता है। फिर दरवाजा बन्द कर देता है। रेडियो ठीक जगह पर रख कर धीमी आवाज में चला देता है। कुर्सी पूर्ववत खिसका कर उस पर बैठ जाता है। पैर मेज पर फैला लेता है। सिर पीछे टिका कर आँख मूंद लेता है—मानो बहुत थक गया हो। 'खट, खट्, खट्'। फिर बाहर से एक नारी का स्वर 'अरे, सुनते हो जी दरवाजा खोलो'। खट, खट, खट। नेमी चौंक कर उठता है, आँखें मलता हुआ दरवाजे की ओर देख कर—'कौन'। नारी का स्वर मैं हूँ, मैं।' नेमी 'मैं कौन ?'] पर्दा

• • •

[एक मामूली सा नया बना हुआ दूसरी मञ्ज़िल का घर। देखने से लगता है कि एक बड़ी इमारत में बहुत से पंक्ति में बने हुये घरों में से एक है। सामने थोड़ा और लकड़ी की रेलिंग से घिरा हुआ चौड़ा बारजा ह। पीछे दो दरवाज़े हैं। एक अन्दर कमरे में जाने के लिये बीच में। एक बिलकुल दाहिनी ओर सीढ़ियों पर जाने के लिये। मच पर तीन कुर्सियाँ, एक छोटी मेज़ और कुछ छोटे गमले सजे हैं। सीढ़ी वाला दरवाज़ा हमेशा खुला रहता ह और बीच वाला दरवाज़ा हमेशा उढ़का। समय शाम का ह।]

[धीरज एक ३० वप का गोरा व्यक्ति मोटा चश्मा लगाये और दार्शनिक की शक्ल लिये सीढ़ियों वाले दरवाज़े स खाली बारजे पर आता ह। आकर सीधे वह चलता चला जाता ह जब तक कि रेलिंग से टकरा नहीं जाता। सामने गिरते गिरते बचता ह। पर सन्तुलन पुन प्राप्त कर लेने के बाद बजाय घबड़ाने के वह अधिक खुश दिखाई देता ह। सीढ़ी वाले दरवाज़े पर वापस जाकर वहाँ से गिन कर दो कदम आग रखता ह और भीतर वाले दरवाज़े क ठीक सामने पहुँच जाता है। सामने लटकी हुई कुंडी को एक बार में उठा कर बिना बजाये ही वापिस सम्हाल कर छोड़ देता है। ऊपर से नीचे तक एक उँगली स दरवाज़ा टटोलता है, मानो कुछ ढूंढ रहा हो। कुछ देर तक ऊपर से नीचे ढूंढ़ने के बाद उसकी उँगली दरवाज़े में बने एक छेद म चली जाती ह। खुश होकर कहते हुये कि 'यही ह!" वह तुरन्त कुंडी उठाकर बजा देता है। दरवाज़ा खुलता ह। मोती, करीब ४० वप का एक स्वस्थ व्यक्ति, दरवाज़ा खोलता ह।]

मोती (कुछ देर तक धीरज को, बिना पहचाने, ताकने के बाद) आप किस पूछ रहे हैं ?

धीरज (अपना चश्मा ठीक कर के) अरे क्या बन रहे हो मोती, मैं धीरज हूँ, धीरज !

मोती (न समझने का सिर हिलाते हुये) तुम्हें कैसे मालूम कि यह मोती का घर है ?

धीरज (शान से तन कर खड़े होकर और ठोढ़ी ऊपर उठा कर) मैंने दो क़दम सामने रखके फिर तीन क़दम दाहिने और

मोती (हाथ से बहुत-कुछ हो चुका का इशारा करके बीच में टोकते हुये) क्या तुमने तीसरे क़दम पर रखी हुई कुर्सी पर बैठ कर देखा कि वह लँगड़ी है या नहीं ?

धीरज (कुछ सकपकाते हुये, शरीर में कुछ शिथिलता लाते हुये, पर ठोढ़ी अब भी उठाये हुये) तुम्हें कैसे मालूम कि मैंने कुर्सी पर

मोती (बीच में बोलते हुये, ठोढ़ी उठाते हुये) मैं दरवाज़े के छेद से देख रहा था। (पल भर रुक कर) ऐसे एसे इस लाइन में ८१ मकान हैं। ५६ घरों के दरवाज़ों में छेद भी है। १७ घरों में दो आगे तीन दाहिने कदम पर कुर्सी भी रखी है। कुल एक ही मकान है जिसके दो आगे तीन दाहिने कदम पर लँगड़ी कुर्सी है और दरवाज़े में छेद भी है।

धीरज पर मैं

मोती मैं इन मामलों में बहस नहीं चाहता। हमें विदेशियों से अच्छी बातें ले लेनी हैं और बुरी छोड़ देनी हैं। हमने उनसे लाइन में बने मकान लिए हैं पर नम्बर नहीं लिए हैं। तुम लोगों का बस चला तो एक दिन वह भी लेना पड़ेगा। अगर तुमने कुर्सी का लँगड़ापन महसूस नहीं किया तो तुमने कैसे मान लिया कि यह मोती का मकान है। मुझे भारत के एक नवयुवक से ऐसी आशा नहीं थी ! (मोती दरवाज़ा बन्द कर लेता है।)

धीरज (छोड़ी वाले दरवाज़े पर वापिस जाता है। दो क़दम आगे तीन क़दम दाहिने रखकर कुर्सी पर बैठकर उसका लँगड़ापन

देखता है फिर उठकर दो कदम रख अन्दर वाले दरवाज़े के पास पहुँच जाता है। पहले की तरह छेद ढूढ़ता है और कुंडी खटखटाता है।)

मोती (दरवाज़ा खोलकर और धीरज को देखकर आश्चर्य और खुशी प्रकट करते हुए) अरे भई धीरज, तुम! कहो क्या हालचाल है?

धीरज ठीक है।

मोती आओ बैठो। (पीछे का दरवाज़ा बंद कर लँगड़ी कुर्सी पर आकर बैठता है।)

धीरज (एक कुर्सी पर बैठते हुए) और सुनाओ।

मोती सुनाओ क्या?

धीरज यही इधर-उधर की।

मोती न मैं इधर गया न उधर की जानता हूँ।

धीरज अगर तुम इधर गए उधर की जानी और तब बात की तो क्या की!

मोती मैं इधर गया और उधर की बात की तो न बात इधर की होगी और न उधर की।

धीरज ठीक है, पर इतना तो कह ही सकते हो कि इधर उधर नहीं है और इधर इधर नहीं है, या दूसरे शब्दों में इधर इधर है और उधर उधर है। इतना कहने में तुम्हारा क्या जाता है?

मोती बात इतनी आसान नहीं है। इधर उधर नहीं है उधर इधर नहीं है तो इससे यह साबित नहीं होता कि इधर इधर है और उधर उधर है। हो सकता है इधर इधर हो पर उधर उधर न हो या इधर इधर न हो पर उधर उधर हो या न इधर इधर हो और न उधर उधर हो।

धीरज अगर तुम ठीक यही कह देते कि इधर इधर है और उधर उधर है तब भी मैं मान जाता, पर तुम तो कुछ कहना ही नहीं चाह

रहे थे।

[एक मोटा तगडा आदमी बाइ ओर से रेलिंग लांघ कर बारजे मे आ जाता है और मोती के पास बेधडक आकर खडा हो जाता है। धीरज और मोती उनको तनिक भी परवाह नही करते जसे उन लोगा के लिए वह व्यक्ति अदृश्य हो।]

मोती मै इधर को उधर और उधर को इधर नही कह सकता था।

धीरज (आगे झुककर आश्चय से) क्या ? (पीछे आराम से बठते हुए) जितनी बार कहो म कह दूँ (मोती की ओर एक हाथ करके) फिर तुम क्यो नही कह सकते थे ?

मोती (तनकर बैठते हुए) क्यो कि मैं हमेशा सच बोलता हूँ।

[अन्तिम तीन शब्दो के निकलते ही अदृश्य व्यक्ति मोती के एक तमाचा जड देता है। फिर आराम से जिधर से आया था उधर चला जाता है। मोती अपना गाल सहलाता है और अवाक इधर-उधर देखता है। धीरज भी इधर उधर देखता है।]

धीरज क्या हुआ ?

मोती मुझे किसी न तमाचा मारा।

धीरज पर किसने ?

मोती मुझे क्या मालूम! यह देखना तमाचा खाने वाले का काम नही है! (उठकर रेलिंग से नीचे की ओर इधर-उधर देखता है। फिर सिर हिलाता हुआ निराश वापिस आकर कुर्सी पर बैठ जाता है।)

धीरज किधर से आया जिसने तुम्हें मारा। (सोचता है।)

मोती (जिधर से अदृश्य व्यक्ति आया था उधर इशारा करते हुए) उधर से तो नही आया।

धीरज (उठकर सीढिया पर नीचे झाकता है। लौटकर कुर्सी पर बठ जाता है।) इधर से भी नही आया।

मोती (कुर्सी के हत्थे पर मुक्का मारते हुए) अगर इधर से भी नही

आया, उधर से भी नही आया तो किधर से आया ?

धीरज (मोती को इशारे से शात करते हुए) सोचने की कोशिश करो। मेरे ख्याल मे वह किधर से भी नही आया।

मोती अगर किधर से भी नही आया तो मेरे तमाचा किसने मारा ?

धीरज जाहिर है किसी ने भी नही मारा।

मोती तो तमाचा लगा कसे ?

धीरज अगर कोई नही आया और किसी ने नही मारा तो तमाचा पूरी तरह से परिभाषित नही हुआ, इसलिए तमाचा नही लगा।

मोती लेकिन मेरे तमाचा लगा है।

धीरज अरे ऐसे तो लगने को लोगो के रोज तमाचे लगते हैं और उन्हें पता नही चलता और तुम इतने पाप सजग हो कि तमाचा लगा भी नही और

मोती (खड़े होते हुए) मैं कहता हूँ कि तमाचा लगा है। (बैठता है।)

धीरज (फिर मोती को शात रहने का इशारा करते हुए) अच्छा भई, अगर लगा है, तो क्या हुआ

मोती क्या हुआ।

धीरज हा, क्या हुआ।।

मोती तुम्हारे लगता तो मालूम पड़ता।

धीरज खैर, अब क्या करोगे ?

मोती तुम जो करते

धीरज मैं जो करता

मोती हा तुम जो करते।

धीरज मैं जो करता वह तुम नही कर सकते

मोती तुम क्या करते।

धीरज मैं क्या करता

मोती हां तुम क्या करते

धीरज मैं मैं अपना दूसरा गाल तमाचा खाने के लिए ऊपर कर देता (गर्दन उचका कर गाल उठा कर बैठ जाता है मानो तमाचा खाने के लिए तैयार हो।)

मोती (आगे झुककर आश्चर्य से) अच्छा! (बाइं रेलिंग पार कर के अदृश्य व्यक्ति फिर आ जाता है और धीरज के बगल में खड़ा हो जाता है।) ऐसा क्यों करते?

धीरज (उसी तरह गर्दन और गाल उठाए हुए) क्योंकि मैं उदार हूं! (उदार कहते ही अदृश्य व्यक्ति धीरज के चांटा लगाकर पुन आराम से बाइं ओर वापिस चला जाता है। धीरज गाल सहलाता है। मोती सीधा हो कर बैठ जाता है।)

[शाम गहरी हो जाती है। कुछ देर कुछ भी घटित नहीं होता। फिर पीछे के दरवाजे से मोती की पत्नी राधा बागजे में आ जाती है। आ कर वह धीरज की बत्ती जला देती है। बुदबुदाती है, "तुम लोग तो बातों में इतने लग जाते हो कि होश ही नहीं रहता अंधेरा हो गया है।" फिर रेलिंग के पास सामने एक ओर खड़े होकर ठोडी पर हाथ टिकाकर नीचे देखने लगता है। कुछ देर के लिए सब चुप जड़ित से रहते हैं। पूरा दृश्य एक तस्वीर सा लगता है। सहसा राधा की भंगिमा में हरकत होती है। वह मुस्करा कर नीचे किसी को नमस्कार करती है। आवभगत के स्वर में कहती है, "आओ सीता, आओ।" फिर अपनी साड़ी का पल्ला ठीक करके सीढ़ी वाले दरवाजे के पास खड़ी हो जाती है। उसके ढंग में एक विशेष प्रकार की अनावश्यक उत्सुकता है जो मोती और धीरज की स्थिरता के बिल्कुल विपरीत है और इसलिए पूरा दृश्य अवास्तविक सा लगता है। सीता और उसके पति राम साथ साथ प्रवेश करते हैं। राधा सीता को हाथ पकड़कर दूसरी

ओर ले जाती है। धीमे स्वर में जल्दी-जल्दी दोनों आपस में बात करने लग जाती हैं जैसे बहुत दिनों बाद मिली हों। कभी कभी दबी हँसी की आवाज़ आती है। इस बीच राम सीढ़ी वाले दरवाज़े से गिन कर दो कदम आगे तीन कदम दाहिने रखते हैं। लँगड़ी कुर्सी के पास पहुँच कर उस पर बैठे मोती को हाथ पकड़कर उठा देते हैं और खुद बैठकर उसका लँगड़ापन महसूस करते हैं। फिर उठकर मोती को कन्धा दबा कर उस पर बैठा देते हैं और खुद दो कदम आगे बढ़कर दरवाज़े में छेद ढूँढते हैं। उसके मिलते ही घूम कर, हाथ फैला कर मुस्कराते हुए मोती की ओर बढ़ते हैं।]

राम कहो भाई, क्या हाल चाल है?

मोती (उठकर मिलते हुए) ठीक है, अपने कहो आओ बैठो।

राम (महिलाओं की ओर इशारा करके) और यह लोग।

मोती अरे वह लोग भी बैठ जाएँगी।

[राधा कमरे में जा कर दो बुने हुए स्टूल ले आती है। राधा धीरज और मोती के बीच बैठती है और सीता धीरज और राम के बीच।]

राधा (मोती से) सब का परिचय तो करा दीजिए।

मोती हाँ हाँ! (धीरज की ओर इशारा करके) आप श्री धीरज हैं, यहाँ के कालेज में दर्शन के प्राध्यापक और इस सिद्धान्त के रचयिता कि आदमी की बनावट ऐसी है कि एक समय में या वह काम कर सकता है या सोच सकता है। (राम की ओर इशारा करके) आप हैं श्री राम, लेखक और अंग्रेजी हटाने और हिंदी रखने की समिति के अध्यक्ष—इतनी कम उम्र में। (सीता की ओर इशारा करके) और आप हैं श्रीमती राम, हम लोगों के बीच में सीता जी। (सब नमस्कार निभाते जाते हैं।)

धीरज (राम से) अच्छा! आप लेखक हैं! आपने कितनी किताबें

लिखो हैं ?

राधा (सीता से) तुम्हारे कितने बच्चे हैं ?

राम (धीरज से) दो।

सीता (राधा से) तीन।

धीरज (राम से) कविताएँ या उपन्यास।

राधा (सीता से) लडके या लडकियाँ ?

राम (धीरज से) एक कविता संग्रह, एक उपन्यास।

सीता (राधा से) एक लडका और दो लडकियाँ।

धीरज (तारीफ की मुद्रा में सिंहावलोकन करते हुए) बहुत खूब, दोनों लिख लेते हैं आप।

राधा (चारों तरफ देख प्रसन्न होने की कोशिश करते हुए सीता से) बडी भाग्यवान हो तुम।

धीरज (राम से) क्या नाम हैं किताबों के ?

राधा (सीता से) क्या नाम हैं बच्चों के ?

राम (धीरज से) कविता संग्रह का 'मुन्नो' और उपन्यास का—'लल्ला'।

सीता (राधा से) लडके का 'पथिक' और लडकियों का 'मुली' और 'भटकी'।

धीरज (प्रभावित हो चारों तरफ देखकर) कितने पारिवारिक नाम हैं। (आगे झुककर) मैंने सुना है, मई साहित्य का विशेषज्ञ तो हूं नहीं, कि नयी कविता परिवार के निकट आ गई है।

राधा (चारों तरफ देखकर) बडे साहित्यिक नाम हैं। आज कल परिवार साहित्य के बहुत निकट आ गये हैं। घर घर पत्रिकाएँ पढी जाती हैं।

मोती (कुर्सी पर बैठने का ढंग बदलते हुए और बातचीत में भाग लेने का प्रयत्न करते हुए) अगर परिवार साहित्य के निकट आ गया है और साहित्य परिवार के निकट तो कुछ दिनों में

परिवार साहित्य कहलाने लगेगा और साहित्य परिवार। (अपने किए मजाक पर हँसता है। और कोई साथ नहीं देता। वह अपनी हँसी बटोर लेता है।)

धीरज (राम से) अच्छा आप तो कवि हैं, उपन्यासकार हैं। साथ में अँग्रेजी-हटाओ और हिन्दी-रखो का भी काम कर रहे हैं। कैसे इतना सब कर लेते हैं आप ?

राधा (सीता से) तुम पत्नी हो, गृहिणी भी हो और साथ में तीन बच्चों को भी रखती हो। कैसे इतना सब कर लेती हो ?

राम }
सीता } (एक साथ) सब हो जाता है।

धीरज (राम से) अँग्रेजी हटाओ हिन्दी रखने के बारे में अपने शुभ विचार आप किस अखबार में व्यक्त कर रहे हैं ?

राधा (सीता से) तुम अपने बच्चों को पढ़ने के लिए कहाँ भेज रही हो ?

राम (धीरज से) अँग्रेजी हटाने के बारे में 'स्टेट्समैन' में और हिन्दी रखने के बारे में 'नवभारत' में।

सीता (राधा से) लड़के को सेन्ट अन्थोनी में और लड़कियों को सेंट मेरी में।

धीरज हिन्दी के हित में बहुत बड़े-बड़े अखबारों में आप को लिखना पड़ता है।

राधा बच्चों के हित में बहुत ऊँचे ऊँचे स्कूल में तुम्हें उन्हें भेजना पड़ता है।

[अदृश्य व्यक्ति बाईं ओर से बारजे पर आ कर इन लोगों के बीच में खड़ा हो जाता है।]

राम क्या करें, देश के भविष्य का सवाल हमारे सामने है।

सीता क्या करें, बच्चों के भविष्य का सवाल हमारे सामने है।

[राम 'देश' कह कर रुकते हैं, सीता 'बच्चों' कह लेती है तब दोनों एक साथ वाक्य पूरा करते हैं के भविष्य

सवाल हमारे सामने है। अन्तिम शब्दों के निकलते निकलते अदृश्य व्यक्ति राम और सीता के चाँटा लगा कर फिर आराम से खड़ा हो जाता है।]

मोती (हँसकर) चाँटे वाला फिर आ गया!

सीता } राम } (उठ कर खड़े होते हुए, गाल सहलाते हुए, एक साथ) यह क्या बदतमीज़ी है!

राधा (उठ कर खड़े होते हुए, मोती से) हँस क्या रहे हो! हमारे घर में मेहमान को कोई नहीं मार सकता। हमारी भी अपनी आन है। मेरे नाना

[अदृश्य व्यक्ति राधा के एक चाँटा लगाता है।]

धीरज (उठकर) अगर ज़रूरत हुई तो अपने विचारों को त्याग करके कर्म की अग्नि में मैं भी कूद सकता हूँ। (अदृश्य व्यक्ति धीरज के चपत लगाता है।)

राम (सीढ़ियों की तरफ जाते हुए) अब मर्यादा कहीं रह नहीं गई है। मैं कोई ऐसा-वैसा पुरुष नहीं हूँ। (दरवाज़े के पास मुड़कर) मैं राम हूँ।

[अदृश्य व्यक्ति राम के बढ़ कर चाँटा लगा देता है। अदृश्य व्यक्ति हर चाँटा लगाने का काम सहज रूप से ठीक समय से करता है।]

सीता (राम सीढ़ियों पर उतर जाते हैं। उनके पीछे जाते हुए) मैं भी कोई ऐसी-वैसी स्त्री नहीं हूँ! (मुड़कर) मैं भी सीता हूँ

[अदृश्य व्यक्ति सीता के चाँटा लगाता है। सीता सीढ़ियों पर उतर जाती है।]

राधा (धीरज इस बीच अपने स्थान पर ही दौड़ने की सारी प्रतिक्रियाएँ करने लगता है। राधा कमरे की ओर बढ़ते हुए) मैं इस घर में पल भर भी नहीं रह सकूँगी। (मुड़कर, मोती से) और याद रखो, मैं भी राधा हूँ, राधा! (अदृश्य व्यक्ति

राधा के चाँटा लगाता है। राधा कमरे में चली जाती है।)

धीरज (अदृश्य व्यक्ति सीढ़ी वाले दरवाज़े पर आ जाता है। धीरज तेज़ दौड़ने की क्रिया जारी रखते हुए धीरे धीरे सीढ़ियों की ओर बढ़ते हुए) मैं भी हर मुसीबत का सामना करने वाला धीरज हूँ। (अन्तिम शब्दों पर गर्दन आगे करके अपना मुँह अदृश्य व्यक्ति के बिल्कुल पास कर देता है। अदृश्य व्यक्ति उसके चाँटा लगा देता है। धीरज सीढ़ियों पर उतर जाता है।)

[अदृश्य व्यक्ति मोती के पास आकर खड़ा हो जाता है। मोती उठ कर मुँह खोल कर 'मैं ...' कहता है और इसके पहले कि कुछ आगे कहे, अदृश्य व्यक्ति उसके चाँटा लगा देता है। चाँटा लगते ही वह कुर्सी पर गिर सा पड़ता है।

अदृश्य व्यक्ति सामने रेलिंग के पास आ कर खड़ा हो जाता है। कुछ देर शांति रहती है। सब मूर्तिवत और अवास्तविक लगने लगता है। एक कुत्ते के बोलने की आवाज़ आती है, जिससे लगने लगता है कि काफ़ी रात हो गई है। फिर एक रेडियो के बजने की आवाज़ आती है—एक गाने की आखिरी पंक्तियाँ "यह देश हमारा है" फिर प्रेषक की आवाज़ "यह आकाशवाणी है। रात के दस बजा चाहते हैं। अन्त में मौसम का हाल सुनिए। कल सुबह होने तक आशा की जाती है कि उत्तरी-पूर्वी सीमा पर प्रधान-मन्त्री पहुँचेंगे और गरज के साथ कहेंगे कि सारे देश का सवाल उनके सामने है। (अन्तिम शब्दों पर अदृश्य व्यक्ति अपने चाँटा लगाता है।) इसके साथ आज का कार्यक्रम समाप्त होता है। जय-हिन्द!" अदृश्य व्यक्ति वहीं निर्जीव होकर लट जाता है। दस के घंटे बजते हैं। पर्दा गिरता है।]

● ○ ○

पात्र

नत्थू   रत्ना   माथुर साहब

पप्पू



[मच पर पीछे कुछ बायी ओर पेड के लिए बन ईंट के एक पुराने घेरे के नीचे दो भिखमगे बठे है। सामने [illegible] का पौधा रखा है। सुबह का समय है।]

नत्थू (हल्के ललकारने के स्वर में) हाँ, खैरा।

खैरा (बनावटी सहज स्वर मे) हाँ, नत्थू।

नत्थू बनो मत!

खैरा मैं कहाँ बन रहा हूँ?

नत्थू तुम्हारी आवाज से लग रहा है।

खैरा तुम्हारे कान को चक्कर आ रहा है।

नत्थू (दोषा ठहराने के स्वर में) चक्कर [illegible] रहा है। तुम सामने देखने की कोशिश कर रहे हो।

खैरा (बैठने का ढंग बदलते हुए) [illegible] कर रहा था।

नत्थू तुम कर रहे थे।

खैरा नहीं कर रहा था।

[कुछ देर के लिए [illegible] है।]

नत्थू आज इतवार होगा।

खैरा जरूर होगा।

नत्थू तुम्हें कैसे मालूम?

खैरा सुबह वाली [illegible] बजा, [illegible]।

नत्थू खैरा, तुम्हारे [illegible]

खैरा एक पेड़ है।

नत्थू (चेट से हाथ [illegible]) [illegible] कोशिश की। [illegible] रहे थे।

नत्थू (हार के स्वर मे) किसका मन नही चलता नत्थू, सामने देखने का !

नत्थू मेरा नही चलता, दुनिया में बहुत से लोग है, जिनका नही चलता।

खैरा (चुनौती स्वीकार करते हुए, आगे झुककर) जब भगवान् ने लोगो के आँखें सामने लगायी हैं, तो सामने देखना चाहिए, नही तो वह सामने लगाता क्या, पीछे न लगाता ! भगवान् क्या गधा है ?

नत्थू भगवान् नही, सामने लगी आँखो से सामने देखने वाला गधा है।

खैरा (सीधे बैठते हुए) कैसे ?

नत्थू (आगे झुकते हुए) जैसे गधा गधा है !

खैरा (दिमाग पर जोर डालते हुए) गधा कैसे गधा है ?

नत्थू ओफ ! (एक एक शब्द बोलते हुए उसका धीरज समाप्त हो रहा है) क्या तुमने कभी गधे को पीछे की ओर देखते देखा है ?

खैरा (इधर उधर सिर हिलाते हुए) नही।

नत्थू (ठोढी उठा कर) और उसके आँखें सामने लगी होती है।

खैरा याद नही पडता ! बहुत दिन हो गये गधे को देखे हुए। खैर चलो

नत्थू और वह सामने लगी आँखो से खाली सामने देखता है।

खैरा हाँ !

नत्थू तब जो सामने देखता है वह गधा है ! (आराम से बैठ जाता है, जैसे थक गया हो।)

खैरा (कुछ सोच कर) तो क्या दुनिया के सब समझदार आदमी वही हैं जो पीछे देखते हैं ?

नत्थू और क्या ! किसी दुनिया वाले से पूछ लो।

खैरा अब मुझे दुनिया वाला कहाँ से मिलेगा ?

नत्थू मिले तब जब तुम्हें सामने देखने से फुर्सत हो !

खैरा (बात सह जाता है। कुछ बोलने के लिए मुंह खोल कर बन्द कर लेता है।)

नत्थू (खैरा की चुप्पी से चिढ़ कर) अभी तुम्हें पेड़ दीखा है, कुछ देर बाद पेड़ की पत्तियाँ दीखेंगी।

खैरा (फिर जवाब के लिए मुंह खोल कर बन्द कर लेता है।)

नत्थू (टाँग खींचने के स्वर में) फिर पत्तियों के बीच में चिड़िया बैठी दीखेगी।

खैरा चिड़िया नहीं तोता। (बोल कर जल्दी से एक हाथ से मुंह बन्द कर लेता है, जैसे ग़लती से बोल गया हो।)

नत्थू (स्थिति से लाभ उठाते हुए) ओह! माफ करिएगा खैरा सरकार, मुझसे भूल हो गयी! हाँ, तो आपको तोता दीखेगा।

खैरा (बोलने के लिए मुंह खोल कर आवाज़ निकालता है पर जबरदस्ती अपने दोनों हाथों से मुंह को बन्द कर लेता है।)

नत्थू (खैरा की परेशानी से खुश हो कर) फिर तोते की गर्दन दीखेगी।

खैरा (हाथ से नत्थू से आगे न बोलने का इशारा करता है।)

नत्थू (जैसे किसी नशे में आ गया हो) फिर एक ही कमी रह जाएगी धनुष ज्ञान तब लीन्ह सवाँरा! (धनुष खींचने का अभिनय करता है।)

खैरा (शरीर को हिलाते हुए जैसे बहुत तकलीफ में हो) नहीं, नत्थू नहीं, अब बस करो! वह सब मत याद दिलाओ! मुझ पर रहम करो।

नत्थू (उठे हाथ गिरा कर) तो मुझसे भीख माँगो।

खैरा (जैसे बच्चे खेल में हारी मानते हैं वैसे बोलते हुए) मैं तुमसे भीख माँगता हूँ।

नत्थू (विजय से) तीन बार माँगो।

खैरा तीन बार माँगता हूँ।

नत्थू खैरा !
खैरा हाँ।
नत्थू क्या यह सामान हम लोगों ने चुराया है ?
खैरा नहीं, हमें पड़ा मिला।
नत्थू पर पड़ा हुआ सामान उठाना और रख लेना भी तो एक तरह की चोरी है !
खैरा पड़ा हुआ नहीं, फेंका हुआ था। और उठा कर तुम अपने पास रखते तो गलत हो सकता था। तुमने पड़ा माल उठा कर मुझे दे दिया। इसलिए तुमने चोरी नहीं की।
नत्थू तब तो तुम चोर बन जाओगे। नहीं, यह नहीं हो सकता।
खैरा मैं क्यों बन जाऊँगा। मुझे तो सामान तुमने दिया इसलिए न तुम चोर न मैं चोर।

[कुछ देर दोनों चुप बैठे रहते हैं। एक बिल्ली दायें से बायें मंच पार कर जाती है।]

खैरा नत्थू।
नत्थू हाँ।
खैरा अब मैं मरूँगा।
नत्थू अच्छा, लेकिन कहाँ मरोगे। (स्वगत बात करने के स्वर में।)
खैरा यहीं।
नत्थू रुको, जरा उठ कर देख लूँ। शायद कोई अच्छी जगह मिल जाए। (खैरा आराम से बैठ जाता है। नत्थू उठ कर मंच पर इधर उधर ठीक स्थान ढूँढ़ता है। कई जगह बैठ कर, ठोक-पीट कर, जमीन देखता है। अंत में पीपे के पास जा कर उसमें झाँकता है। खैरा के पास आ कर कहता है) तुम आज उस पीपे में मरो। मैं उसे ढकेल कर ले जाऊँगा और मुलायम मिट्टी में गाड़ दूँगा। अच्छी कब्र बनेगी। फिर रोज वहाँ फूल या पत्तियाँ चढ़ा आया करूँगा।

खैरा (उठता है।) अच्छा।

[दोनों पीपे के पास आते हैं। पीपे का चक्कर लगाते हैं। बारी-बारी से अन्दर झाँकते हैं। फिर खैरा पीपे पर चढ़ने की कोशिश करता है, नत्थू उसे रोक देता है।]

नत्थू खैरा, मरने के पहले गले तो मिल लो।

[दोनों गले मिलते हैं। खैरा फिर पीपे पर चढ़ने की कोशिश करता है। नत्थू फिर हाथ के इशारे से रोकता है।]

नत्थू मरते समय एक और कपड़ा तुम्हारे पास होना चाहिए। यह लो। (अपना फटा कुर्ता उतार कर खैरा के गले में 'एप्रन' की तरह लटका देता है, कुर्ते की बाहों में गले के पीछे गाँठ बाँध देता है। कोने पकड़ कर कंधा पर फैला देता है।) *अब ठीक है! पता नहीं स्वर्ग में कहाँ लगो। कोई कपड़ा देने वाला मिले, न मिले।*

[खैरा फिर पीपे पर चढ़ने की असफल कोशिश करता है। नत्थू उसे रोक देता है।]

नत्थू खैरा, कब्र में शान से और आराम से पैर रखो। लो, मैं झुका जाता हूँ, तुम मेरे ऊपर पैर रख कर चढ़ जाओ।

[नत्थू झुक कर बैठ जाता है। खैरा उसे उठा देता है ईंट के घेरे के पास जा कर झाड़ू निकालता है। आ कर जहाँ नत्थू झुका था वहाँ की जमीन साफ करता है। जा कर झाड़ू रख आता है। इसी बीच साफ की हुई जगह पर फिर झुककर बैठ जाता है। खैरा उसकी पीठ पर पैर रख कर पीपे में उतर कर बैठ जाता है। नत्थू उठ कर अन्दर झाँकता है। फिर पीपे को ढकेलता हुआ मंच के बीच की ओर कदम-कदम बढ़ता है। पर्दा गिरता है।]

● ● ●

इन्द्राणी (फिर टोकते हुए) कोई नयी बात नही कही मैंने। यह तो हमारे देश का हर स्वस्थ बालक जानता है।

चौहान (जसे अपनी बात भूल-से गये) जी हा, इस पर मैं आ ही रहा था, पर मैं क्या कह रहा था

आनन्द आप कह रहे थे कि हम स्वतन्त्र हो गये।

चौहान (आनन्द जी की ओर कृतज्ञता भरी नजरो से देखते हुए) जी हा, तो अब हमे यह शोभा नही देता कि डाकुओ से हार मान लें।

इन्द्राणी डाकुओ का देश मे होना बच्चो के स्वास्थ्य के लिए लाभदायक नही है।

आ०चौ० (खुश होते हुए एक साथ) तब तो हमें जल्दी ही कुछ करना होगा।

तीनो साथ (इन्द्राणी जी हवा मे प्रश्नात्मक मुद्रा में हाथ घुमाती हैं, मानो वाद्यवन्द निर्देशन कर रही हो) पर क्या ? कब ? कैसे ?

आनन्द मैं सोचता हूँ कि उस इलाक़े का दौरा करूँ, यानो महानदी के किनारे किनारे हवाई जहाज से उड कर देखूँ कि डाकुओं ने कितने घर तबाह कर दिये है, क्यो चौहान ?

चौहान (विचारो में खोये थे चौंक कर) खयाल तो अच्छा है, पर इसमें आपकी जान को खतरा है। देश को अभी आपकी बहुत जरूरत है। मैं सोच रहा था कि, अगर डाकुओं को मारने के लिए और अधिक इनाम की घोषणा कर दी जाए तो हो सकता है कि लालच मे आ कर गाँव वाले उन्हें मार कर उनके दलो को तहस नहस कर डालें।

इन्द्राणी कसी डाकुओं को सी बातें करते है आप चौहान जी (चौहान जी हक्का-बक्का हो कर उनकी तरफ देखते है जैसे उनका अपमान हो गया हो, पर, सहसा क्या करें समझ में नही आ

रहा ह । आहत चेहरे से अकड कर उठ जाते हैं । आनन्द जी बात को सम्हालते हैं ।)

आनन्द बहन, चौहान जी हमारे बडे विश्वसनीय पुलिस अधिकारियो मे से हैं । भाई राष्ट्राचाय इनसे बहुत प्रसन्न रहते है । अरे हाँ, अभी उस दिन जब मैं उनसे मिलने गया था, माँ जी को जुकाम हो गया था । क्या आप भवन गयी थी उन्हें देखने ?

इद्राणी कहाँ जा पायी ! पर कल मत्रालय में पाँच मिनट काम रुकवा कर मैंने सबको अपनी जगह खडा करवा कर प्राथना करवायी थी कि ऐसे अवसर पर भगवान माँ को और राष्ट्राचार्य जी को दु ख सहने की शक्ति दें ।

आनन्द बहुत अच्छा किया आपने । (चौहान जी का चेहरा देख कर जैसे उन्हें सहसा विषय याद आ गया) अरे हाँ, चौहान जी, मैं तो भूल ही गया कि आप भी बठे ह । अब आप लोग जो भी तय कीजिए, मुझे मान्य होगा ।

इद्राणी मुझे एक बात सूझ रही है । (दोना उनको ओर बडी आशा और उत्सुकता से देखने लगते हैं ।) आप तो गौतम को जानते ह न, बडा ज़िद्दी लडका ह । मैंने इतना कहा कि अब तू बडा हो गया है, डाक्टरी पढ़ लें, सिविल सजन बनवा दूँगी, जनसेवा का अवसर मिलेगा, पर उसने कहा न माना । तब मैंने एक दूसरे लडके अशोक को डाक्टरी पढवायी । खर, गौतम ने एक शांति टोली कायम की ह, जो आजकल खेतों को जोतने मे किसाना की मदद कर रही है । मुझे विश्वास ह कि मेरे कहने पर वह डाकुओ को सुधारने का कार्य अपने ऊपर ले लेगा ।

आनन्द धन्य हैं इद्राणी बहन आप, देश सौभाग्य शाली ह, आपको स्वास्थ्य-मत्राणी के रूप मे पा कर !

चौहान देश को नाज ह आप पर ! आपकी सूझ निराली ह । और

गौतम जी का क्या कहना। सारा देश उनको जानता है।

[तीन]

[शाम का समय है। लकड़ी, पत्तियाँ इकट्ठी करके एक साफ़ जगह पर आग लगा रखी है, जैसे स्काउटों का कैम्प हो। आठ दस व्यक्ति चारों ओर घूम रहे हैं और गा रहे हैं]

सहगान ऊपर है चन्दा, नीचे है पानी
बीच में धरती तारों की रानी।
धरती पर पेड़ है पेड़ों में डालें
डालों पर फल है, गिनो तो जानें।
एक ही फल है, हाथ है कितने
एक ही माँ के बच्चे बहुत से
एक एक बालक से, टोली है बनती
टोली टोली गाँव बने, गाँव है शक्ति।
ऊपर है चन्दा

[एक ओर से इन्द्राणी जी का प्रवेश। उन्हें देख कर, टोली गाते गाते रुक जाती है। उन्हें आदर से आग के पास बैठा दिया जाता है और एक व्यक्ति गौतम जी को बुलाने चला जाता है। इन्द्राणी शेष लोगों से गाना जारी रखने के लिए कहती है। पर इतने में गौतम जी आ जाते हैं। उनको देख कर सब चले जाते हैं। इन्द्राणी और गौतम आग के पास बैठ कर बातें करते हैं।]

गौतम माँ, आज तुम इधर कैसे आ भटकी। यहाँ तुम्हें तकलीफ़ होगी।

इन्द्राणी व्यंग्य-वाक्य मत बोल बेटा। जहाँ तू रहता है वहाँ भला मुझे क्या तकलीफ़। मैं सब तुम्हीं लोगों के लिए तो कर रही हूँ। मेरा क्या, चन्द दिनों की मेहमान हूँ।

[गौतम जैसे इस प्रलाप से पूर्व-परिचित है और जल्दी ही विषय पर आ जाना चाहता है।]

गौतम अच्छा माँ, अब बताओ काम क्या है? क्या फिर किसी गाँव में प्लेग फैला है?

इन्द्राणी नही, नहीं! इस बार मैं और कठिन काम ले कर आयी हूँ। मुझे और सरकार को तुमसे बहुत आशाएँ हैं, बेटा। मुझे विश्वास है कि तुम इस काम को करने से पीछे नही हटोगे।

गौतम हूँ! (जरा आराम से बठ जाता ह।)

इन्द्राणी महानदी की घाटिया में कुछ डाकुओ ने डेरा डाल रखा है। चेतासिह उनका सरदार ह। पुलिस की आखो म धूल झोक कर वे लोग डकैती कर रहे हैं। स्थिति काबू के बाहर हो चुकी ह। यदि तुम इसमे मदद कर सको तो राष्ट्राचाय व्यक्तिगत रूप से तुम्हारे कृतज्ञ होगे और

गौतम लेकिन मैं डाकुओ से कैसे लोहा ले सकता हूँ, जब गोले-बारूद और तमगो से लैस तुम्हारी पुलिस कुछ न कर सकी।

इन्द्राणी तुम विद्वान हो, कुछ न कुछ हल जरूर निकाल लोगे। बस 'तुम हा' कर दो तो मैं समाचार दे दूँ। सारा दश इस समय तुम्हारी ओर नजरे गडाये खडा है।

गौतम तो खडा रहे! मैंने कोई देश का ठेका नही ले रखा है। म शाति काय स्वान्त सुखाय करता हूँ, मेरे ऊपर कोई बन्धन नही ह।

इन्द्राणी : देश का न सही, मा की आकाक्षाआ का तो व धन ह। मेरी ओर देख कर क्या तू यह सब कह सकता है। मेरी इच्छाओ का कोई मूल्य ही नही! पाल पास कर इतना बडा किया और अब कैसा हो गया है तू गौतम? (आचल स आँसू पाछती है।)

गौतम (इस अप्रत्याशित स्थिति से द्रवित होते हुए) माँ, तुमसे तो

मैंने कुछ भी नही कहा। तुम्हारा कहना मानना मैं अपना धर्म मानता हूँ

इन्द्राणी तो बस मैं जा कर शेष कार्यवाही किये लेती हूँ। डाकुओ को तुम्हारा इरादा मालूम पड जाए इसके लिए उचित विज्ञापन होना आवश्यक है, और पुलिस हमेशा तुम्हारी सहायता के लिए तैयार रहेगी।

गौतम लेकिन माँ

इन्द्राणी (बीच में टोकते हुए) बस अब मैं कुछ नही सुनना चाहती। मैं जानती थी, मेरा वीर गौतम इस काय को करने में डरेगा नही। (जरा अपन स्वास्थ्य का ध्यान रखा कर। यह कहते हुए प्रस्थान।)

[चार]

['या' कमरे में आराम-कुर्सी पर लेटे हुए अखबार पढ रहे हैं। 'थी' कपडो पर लोहा कर रही है।]

या (जोर-जोर से अखबार पढते हुए) थी आनन्द, गृहमंत्री ने आज सम्वाददाताओ से बातचीत करते हुए कहा कि हमारी सरकार ने महानदी की घाटिया में छुपे हुए डाकुओ के हृदयो पर विजय पाने के लिए देश के महान् शांति-सेवक श्री गौतम को काम सौंप कर बडी दूरदर्शिता का परिचय दिया है और हमें विश्वास है कि अहिंसा द्वारा बर्बर शक्तियो का नाश करके हम एक बार फिर दुनिया के सामने एक मिसाल रख सकेंगे और देश द्वारा आरम्भ किये गये काय को आगे बढ़ाएँगे।

['थी' का हाथ जल जाता है और वह झीकने लगती है।]

थी घर है कि कबाडखाना है
पुरी के यहाँ बिजली का लोहा है

गुप्ता के यहाँ हर कमरे म पखा है
पडोसिन ने नया रेडियो खरीदा है
और म हूँ कि रोटियो के लिए
मिट्टी का चूल्हा और गीली लकडी है
और तुम हो कि समय काटने के लिए
चार पन्ने का अखबार और टूटी कुर्सी है
ऐसी जिन्दगी से तो मेरी मौत अच्छी है !

पा जिन्दगी से मौत कभी अच्छी नही होती
यू रोज सौ बार मरना भी है एक नीति होती
अगर म तुम्हारे प्यार में दीवाना न होता
तो शाति टोली में मैं एक सैनिक होता
तमाम डाकू मेरे कहने को मानते
अपने लाल हाथो को धो घरो मे बतन माजते
हर आदमी चैन से अपना अपना काम करता
न मैं बेकार और बैठता और न तुम्हारा ही हाथ जलता
एक बार अगर श्री गौतम सफल हो जाएँ
दुनिया में हम एक महान् राष्ट्र बन जाएँ !

थी धन्य ह वह माँ, गौतम पुत्र हैं जिसके
मुझे भी गव होता है उनकी बातें सुन के
जगलो में रहना डाकुओं के बीच में
बहती हवाओ मे घूमना दश के हित में
कुछ ही महापुरुष ह इतने भाग्यवान होते
वरना हमारे तुम्हारे नाम भी अखबार में होते ।

पा निष्काम काम करना ही गौतम का धम ह
न नाम की लालसा न पौरुष का गव ह
हर आदमी अपनी-अपनी राह चलता ह
कोई बादशाह कोई गरीब बनता ह

इस ससार मे दु ख का एक ही कारण ह
बादशाह गरीब से और गरीब बादशाह से जलता ह
हम और तुम क्या एक टोली नही हैं
रोज अपना काम करते क्या सुखी नही है ।

थी अगर यू लेक्चर न दा तुम्हें कौन पूछे
क्यो रोज तुम्हारे घर भी कोई चक्की पीसे
हर बात को वढा कर कहना तुम्हें खूब आता है
तुम्हारी बाता में मेरा दुखी मन डूब जाता ह
तुम्ही हो मेर डाकू तुम्ही हो मेरे गौतम
तुम्ह देखते देखते मेरा दिन बीत जाता है
यह कमरा है जगल, गृहस्थी की चीजा से हरा ह
उबलती दाल की खुदबुद में कितना सगीत भरा है ।

[था' फिर अखबार पढने लग जाते हैं ।]

[पाँच]

[नाटा, मोटा, भोला और दुबला, कवि सा शशि गुल्ली डडा खेलते हुए]

शशि इस बार देश का गुल्ली डडा टीम का कप्तान तुम्हें होना चाहिए, भोला ! हमारा राष्ट्रीय खल ह । इसमें हमारी हार नही होनी चाहिए ।

भोला सुना ह चीन वालो ने अपने जासूस भेज कर हमारी तरकीबो का अध्ययन कर लिया ह । एक गुप्तचर तो अपने दल मे भी ह । पर गौतम से कौन कहे । हर आदमी में वह भलाई ही भलाई देखता ह ।

शशि यह ता उसके चरित्र का गुण है ।

भोला कदद्दू ! गलत दृष्टि रखना भी कोई चरित्र ह । हम लोगा को उसका मित्र होने के नाते उस असली स्थिति से अवगत करा देना चाहिए ।

पर क्या इससे जनता का विश्वास पुलिस पर से उठ नही जाएगा। यदि ऐसा हो गया, तो मैं सोचता हूँ कि लम्बे अरसे मे यह देश के लिए अधिक घातक होगा।

गौतम बडी दूरदर्शिता की बात कही है तुमने शशि। पर हमारे सिद्धान्त के अनुसार भविष्य मे पुलिस की कोई आवश्यकता ही नही रहेगी। इस समय यदि इस काय को अहिंसा द्वारा करके दिखा देगे तो भविष्य मे पुलिस को निरथक प्रमाणित करना आसान हो जाएगा, क्यो भोला!

भोला आपका निणय जँच रहा ह मुझे। पुलिस वालों की वरदियाँ उतरवा कर उन्हें खेती में लगवा देना चाहिए, जिससे अधिक अन्न उपजे, गन्ने की फसल अच्छी हो और देश में खाने-पीने की कमी न रहे।

[शशि कुछ बोलना चाहता है, शायद भोला पर कुछ मजाकी फिकरा कसने के इरादे स, पर गौतम उसे इशारे से रोक देते ह।]

गौतम तो ठीक है, माँ ने पुलिस देने का वादा किया था। अब मैं कहूगा कि पाच सौ पुलिस का जत्था भेज दो कि इस इलाके की जमीन में हल चला कर किसानो की मदद करे ताकि हमें इस काय से अवकाश मिले और हम अपनी सारी शक्ति डाकुओं की समस्या हल करने मे लगा सकें।

भोला }
शशि } ठीक ह! (गौतम दोनो की कमर में हाथ डाल कर जाते हैं।)

[छ]

[आनन्द जी, चौहान जी और इन्द्राणी जी फ़श पर बठे हुए हैं।]

आनन्द (चौहान जी बठे हुए अपना एक तमग़ा सीधा कर रहे हैं।)

चौहान जी, अब तो बहन इन्द्राणी ने हम लोगो का सर दर्द दूर कर दिया। गौतम जी और उनके दो साथी (इन्द्राणी जी की ओर प्रश्नात्मक मुद्रा मे देख कर) क्या नाम है उनका ?

इन्द्राणी श्री भोला और श्री शशि।

आनन्द हाँ तो इन तीनो की मदद से, आशा है, सब काम निकल आएगा। पर चौहान जी, आपको पाँच सौ आदमी उत्तम गाव में हल चलाने के लिए भेजने पड़ेंगे।

चौहान यह तो बडी मुसीबत है ! हल चलाने के लिए मेरे आदमी कसे तैयार होंगे ?

आनन्द आप भी अजीब आदमी है। अरे, पहले दिन हल चलाने का उद्घाटन समारोह बहन इन्द्राणी करेंगी—श्रमदान के रूप में ! उस अवसर पर पत्रो के सवाददाता वहा रहेंगे। मेरा आदमी उस समय के छाया चित्र ले लेगा। फिर देखिएगा आपके जवान किस खुशी से इस काम को करते है।

इन्द्राणी मैं अकेले इस काम को नही करूंगी। ऐसा करवा दीजिए कि बैल एक खूटे से लाल फीते द्वारा बँधे रहें। आप पहले जा कर उस फीते को काटिएगा। फिर मैं हल में हाथ लगा दूँगी।

आनन्द आपकी आज्ञा सिर माथे पर। आयोजन की पूरी व्यवस्था मैं अपने छोटे भाई सानन्द को दे दूँगा। इस बहाने उसे भी देश सेवा का कुछ अवसर मिल जाएगा।

चौहान क्यो नही, क्यो नही, उनका भी स्वभाव आपकी ही तरह सरल है। (आनन्द जी कुछ गर्व स तन जाते है।) हाँ आनन्द जी, मै कहने वाला था कि गौतम जी के आश्रम से डाकुओ को पकडने का भार मेरे ऊपर छोड दिया जाए। आप तो जानते ही है, डाकुओ को पकडने के लिए हमारी सरकार ने कुछ इनाम

की घोषणा की है। हो, हो, हो, मेरा भी इसमें कुछ भला हो जाएगा और अपना कतव्य पूरा करने का अवसर

आनन्द अरे, यह काय आप पूरा नही करेंगे तो क्या कोई छोटा मोटा दरोगा करेगा। प्रमाण के लिए मै छायाचित्र लेने का इन्तजाम करा दूँगा। बहन इन्द्राणी तो बिलकुल चुप हो गयीं, किस सोच मे हैं ?

इन्द्राणी मैं सोच रही थी कि गौतम घाटियों म घुसेगा। वहाँ जान का बहुत खतरा है। डाकुओ की गोलिया के अलावा साँप-बिच्छू और अन्य रोगों का शिकार भी हो सकता है। उसके बीमार होने पर राष्ट्रीय काय में बाधा पड सकती ह। अपनी सुरक्षा के लिए वह पुलिस को तो साथ नही रखेगा, पर मैं समझती हूँ कि उसके स्वास्थ्य का ध्यान रखना हमारा कतव्य ह। यदि आप लोग ठीक समझें तो यह कार्य हमारी सरकार डा० अशोक को सौंप दे। मुझे विश्वास ह कि देश के सकट को देखते हुए वह इस कठिन कार्य को स्वीकार कर लेगा।

आनन्द आप न कहती तो हम लोग वास्तव में बडी भारी भूल कर जाते। इसमे सोचने विचारने की आवश्यकता नही ह। आप अशोक को यह विशेष 'कमीशन' अवश्य दे दें। यह देश आपके परिवार के त्याग और सेवाओ का हमेशा आभार मानेगा।

चौहान मीटिंग समाप्त होने के पूर्व म यह प्रस्ताव रखना चाहूँगा कि इस सम्पूण कायवाही का नाम 'आनन्द प्रोजेक्ट' रखा जाए। (आनन्द जी हँसते हुए मना करने लगते ह पर इन्द्राणी जी खडी हो कर प्रस्ताव का समथन करती हैं, और जसे हार कर आनन्द जी इसे सिर झुका कर स्वीकार कर लते हैं।)

[सात]

[गौतम, भोला, शशि और डा० अशोक जगल में चलते

हुए।]

गौतम शांति।

शेष तीनों हमारा धम है।

गौतम निष्काम।

तीनों हमारा कम है।

गौतम अहिंसा से।

तीनों बड़ी कोई शक्ति नहीं।

गौतम मृत्यु से।

तीनों हम डरते नहीं।

[सहसा शशि हृदय के पास हाथ रख कर एक ओर झुक, कराहते हैं, मानो दद हो रहा हो। सब रुक जाते हैं।]

अशोक (आगे बढ़ कर, शशि को सहारा दे कर एक वृक्ष के नीचे बिठाते हुए) क्यों शशि, क्या हुआ ? घबड़ाओ नहीं, जरा आराम कर लो।

शशि ओफ, कितनी तकलीफ है, लगता है कि प्राण निकलने वाले हैं।

[डा० अशोक अपने बग से एक गोली निकाल कर, बोतल से पानी ले कर उन्हें दवा खिलाते हैं। फिर अलग हट कर गौतम से बात करते हैं।]

अशोक मुझे लगता है कि शशि को आगे जाना मुश्किल है। इन्हें आराम की सख्त जरूरत है।

गौतम मैं भी यही सोच रहा था। मेरा विचार है कि आप और शशि यहीं रुकें मैं भोला के साथ आगे बढ़ता हूँ।

अशोक ठीक है, और कुछ तो इस समय किया नहीं जा सकता है।

[गौतम और भोला एक बार शशि को देखकर आगे चले जाते हैं। शशि को बेहोशी सी आ जाती है। कुछ देर बाद जब होश आता है तब वह पूछते हैं।]

शशि कहाँ हूँ मैं ?

अशोक महानदी की घाटी में !

शशि कौन हो तुम ?

अशोक डाक्टर हूँ मैं !

शशि पर यह स्वच्छ निर्मल महानदी का
मेरे स्वप्नों की सतरंगी घाटी नहीं है
यह जमीन भी गोलियों और औजारों से भरी
आदमियों के आखेट से त्रस्त शेष पृथ्वी-सी है
यहाँ मेरा दम घुट रहा है
मेरा प्रायश्चित्त अब जमीन का अन्त ही है।

अशोक मन छोटा न करो, मैं पास हूँ तुम्हारे
अभी सौ वर्ष देश की सेवा और करोगे।

शशि देश की सेवा का नाम न लो
वह अब एक व्यवसाय है
जिसमें चुकी हुई आत्माओं को
फूलों की शय्या पर आराम कराया जाता है
और फूलों के अभाव में कलियों को तोड़ा जाता है
नयी मासूम नीली आँखों को अँधेरा देखने के लिए मजबूर किया जाता है।
शिशु के अनायास बढ़े हाथों पर बन्दूक की नलियाँ टिका दी जाती हैं।
पौधों के बढ़ने से पहले ही निष्फल घोषित कर उखाड़ दिया जाता है।
और बियाबानों में खड़े ठूँठों पर नकली फूल और फल बना कर टाँग दिये जाते हैं।
और हमसे कहा जाता है कि इनकी जड़ों में पानी डाल देश की सेवा करो।

मैं अब इस झूठ के चंगुल से अपने प्राणों को छुटाने के लिए आतुर हूँ।
और तुम उनके प्रहरी नहीं महज उनकी मुक्ति के स्रष्टा हो।

[शशि आँखें मूंद कर जैसे मृत्यु की गोद में सो जाते हैं।]

[आठ]

['धो' मुढिया पर बैठी हुई फटे कपड़े सी रही है। तथा अखबार ले कर आते हैं और आराम-कुर्सी पर बैठ जोर-जोर से पढने लगते हैं।]

था हमारी सरकार बहुत दुःख के साथ यह घोषणा करती है कि 'आनन्द प्रोजेक्ट' में काम करते हुए श्री शशि की मृत्यु हो गयी। ईश्वर से प्रार्थना की जाती है कि उनके सगे सम्बन्धियों को इस दुःख को झेलने के लिए शक्ति प्रदान करे। देश ने एक महान् सेवक को और श्री गौनम और श्री भोला ने अपने एक वीर साथी को खो दिया है।

धो *श्री शशि का जीवन सफल हो गया*
बच्चों की टोलियाँ उनकी वीरता के गान गाएँगी
स्वर्ग में उनके स्वागत को परियाँ आएँगी
मैं भी उनका नाम तकिये के गिलाफ़ में टाँकूँगी
उनकी तसवीर का कैलेण्डर अपने कमरे में टाँगूँगी
अफसोस है मेरे अपने कोई लड़का नहीं हुआ
इस अभागिन मुन्नी का मैं क्या करूँगी।

था खबर सुनी नहीं कि तुम्हारा रेडियो 'आन' हो गया
मृत्यु किसी की हुई कहीं तुम्हारे ऊपर अत्याचार हो गया
यह चारों दीवारें बाँधती नहीं बल्कि हमें मौक़ा देती हैं

सहानुभूति के बल पर हर हार जीत का साझीदार बनने वा हमारी अपनी कलियाँ पगु नही बनाती हमें बल्कि अवसर देती है सरल जीवन और उच्च विचारों का ।

['थी' के सुई चुभ जाती है । वह झींककर उठती है और अखबार को छीन लेती है ।]

थी जिन्दगी क्या है ?

था अँधेरे में एक रोशनी ।

थी मौज क्या है ?

था अखबार बिछा कर उस पर बैठना ।

थी उच्च विचार क्या है ?

था दूसरे के अनुभवो से क्या न करना चाहिए अपनी आराम कुर्सी पर बैठे बैठे सीखना ।

थी तुम क्या हो ?

था जो तुम नही हो ।

थी और मैं क्या हूँ ?

था कोई नही बता सकता ।

थी } अच्छा, मौत क्या है ?
था } पड़ोसी की नयी मोटर ।

[बाहर से तरकारी वाली 'था' को पुकारती है, 'था' फिर अखबार पढने लग जाते है ।]

[नौ]

[गौतम और भोला बातें करते हुए जगल मे चले जा रहे है । विश्राम के लिए एक पेड के नीचे बैठ जाते है ।]

भोला क्या डाकुओ को मालूम हो गया होगा कि हम लोग उनके बीच शस्त्र अर्पण करवाने के लिए आ रहे है ?

गौतम हाँ !

रामदीन आपकी इच्छानुसार हम लोग ऐसा ही करेंगे। पर हमारे सरदार चेतासिंह तैयार नहीं हैं। आपको अपना ध्यान करना चाहिए, हम लोग आपको सावधान करने आये हैं।

गोला बोरा आपकी रक्षा के लिए हम लोग साथ चलेंगे।

गौतम (जरा हँस कर) नहीं नहीं, मैं किसी को अपना शत्रु नहीं मानता, फिर रक्षा किससे ? पर तुम लोग शस्त्र अर्पण के उपरान्त मेरे साथ मार्ग दिखलाने के लिए अवश्य चल सकते हो।

रामदीन यदि आपने विश्राम कर लिया हो तो हम लोग तैयार हैं, आइए।

भोला (बड़ी मुश्किल से उठते हुए) जरा कुछ खा-पी लेते तो आगे चलते।

रामदीन आइए, उधर बहुत फल मिलेंगे।

[कुछ दूर चलते ही एक स्थान पर चार दिशाओं से चार सशस्त्र डाकू आ कर इन लोगों को घेर लेते हैं। रामदीन आगे बढ़ कर संकेत शब्द 'शीशम' कहता है। वे लोग इन्हें आगे जाने की राह दे देते हैं। अन्दर पहुँच कर एक साफ जगह पर सरदार चेतासिंह का दरबार लगा हुआ है। बीच में दो योद्धा लाठी चलाने का प्रदर्शन कर रहे हैं। इन लोगों की उपस्थिति महसूस कर, प्रदर्शन रुक जाता है। गौतम अपनी पूरी शान के साथ आगे बढ़ते हैं। पीछे पीछे भोला है। शेष तीनों वहीं पंक्ति में खड़े हो जाते हैं। गौतम के पास पहुँचने पर चेतासिंह उठ खड़ा हो जाता है। उसके चेहरे पर सहसा किसी को पहचान लेने का भाव साफ झलक आता है।]

चेता० अरे गौतम! तुम्हीं वह गौतम होगे मैंने सोचा भी न था।

गौतम आश्चर्य मुझे भी है चेतासिंह। दुःख इस बात का है कि तुम

अपनी जगह से आप दोनो 'फायर' करेंगे।

[जोरावरसिंह गिनना, शुरू करता है, चेतासिंह का शरीर क्रोध से कुछ काँप जाता है, गौतम हाथ नीचे किये शांत खड़े हैं। एक, दो, तीन, कहते ही चेतासिंह फायर करता है, निशाना चूक जाता है। गौतम अपनी पिस्तौल नही उठाते। हँस कर आगे बढ़ जाते हैं और पिस्तौल चेतासिंह के सम्मुख उठा कर बड़े विश्वास के साथ कहते हैं।]

गौतम लो, शस्त्रो का प्रयोग मैं नही करता। यह तुम्हारी भाषा है जिसने तुम्हें भुठला दिया। मुझे तुमसे और कुछ नही कहना है। (अपने चारो ओर खड़े लोगो पर दृष्टि डालते हुए) जो लोग मेरे साथ चलना चाहते हैं चलें, जो न चलना चाहें यही रहें। मैं इस स्थान का पता किसी को नही बताऊँगा।

[गौतम जिस ओर से आये थे उसी ओर चल देते है। पहले भोला, गोलासिंह, बीरा और रामदीन उनके पीछे चलते हैं, फिर चेतासिंह और जोरावर को छोड कर शेष सभी एक दूसरे से इशारो में सहमत हो शान्तिपूर्वक उनके पीछे चलते हैं। कुछ क्षणो के बाद जोरावरसिंह भी साथ हो जाता है। मच पर अकेला चेतासिंह हतप्रभ, हारा हुआ खडा रह जाता है।]

[दस]

[शाम का समय है। अपने कमरे में बैठा 'या' और 'यी' चाय पी रहे हैं—'या' प्याले में और यी' गिलास में। बाहर से अखबार बचने वाले की आवाज आती है—'डेली न्यूज का स्पेशल आनन्द प्रोजेक्ट सफल हुआ, महानदी की घाटी में एकतरफा गोली,—गौतम और चेतासिंह की मुठभेड,—ताजा-स्पेशल आवाज धीरे धीरे पास आती जाती है। 'या' प्याला 'यी' के हाथो मे थमा कर बाहर अखबार लेने दौड जाते हैं

और वहीं से पढ़ते हुए आते हैं। आरम्भ में जैसे 'थी' को यह घटना प्रिय नहीं लगती, पर 'था' को बहुत मन लगा कर खुशी-खुशी अखबार पढ़ते देख वह भी उत्सुक हो उठती है।]

थी क्या है मैं भी सुनूं!

था पर अब तो यह समाचार पुराना पड़ गया।
इसी बीच और न जाने क्या क्या हो गया।
गौतम का क्या हुआ, आनन्द को क्या मिला।
हाय, क्या न मुझे शादी में एक रेडियो मिला!

थी अगर मैं अपने साथ में एक रेडियो लाती
तो तुम्हारी नहीं आनन्द या गौतम की पत्नी होती
सब मुझे बड़े आदर की निगाह से देखते
तुम आते तो तुम्हें ही एक मेज़ बनाने को देती!

['था' अखबार उलट कर दूसरी ओर पढ़ने लगते हैं।]

था अच्छा, यह लड़ने का नहीं, खुशी का समय है
आज टाऊन हाल में बड़ा भारी जलसा है
श्री आनन्द को राष्ट्राचार्य बड़ी उपाधि देंगे
श्रीमती इन्द्राणी को दौरे पर अपने साथ रखेंगे
यहाँ तक कि श्री चौहान भी वीरता का तमगा पाएंगे
श्री गौतम जब लौटेंगे राष्ट्राचार्य उनसे बात करेंगे
विदेश में सवाददाता हमारे एक गर्वीले नागरिक की तस्वीर छापेंगे।

वह देश महान् है जहाँ इतने हँसमुख लोग होते हैं!

थी लगता है प्रसन्न हो हम देश का निर्माण कर रहे हैं!

था अखबार पढ़ रोज इतिहास रच रहे हैं।

था, थी } एक दिन वह भी आएगा
जब घर-घर रेडियो होगा

हफ्ते में पाच दिन काम करेंगे
साल में एक बार पहाड घूमेंगे
हम है इस देश के योग्य वासी
अपनी मुन्नी को खूब प्यार करेंगे ।

[स्टेज पर मुन्नी उछलती गाती हुई आती ह, 'था' और 'थी' के चारों ओर घूमती ह ।]

मुन्नी मने नानी से कहानी सुनी
एक था था एक थी 'थी'
मैंने नानी से

['एक था था' कह कर था पर उँगली उठाती है और 'एक थी थी' पर थी पर । मुन्नी की आयु क़रीब पांच वष ह ।]



आँख से निकली हुई रोशनी

[डॉ० सत्यव्रत सिनहा के निर्देशन में 'प्रयाग रंगमंच' द्वारा ११-१२ ६६ को 'पैलेस थियेटर' में प्रदर्शित]

पात्र

मदन	शांतिस्वरूप प्रधान
नौटियाल	डॉ० सत्यव्रत सिनहा
स्नेहलता	ज्योति नागर
शर्मा	सूर्यप्रताप
दरोगा	हरीराम
कालीचरन	राजाराम सिंह
वर्मा	रामगोपाल



[एक]

[एक अच्छा सजा कमरा—वाले रंग का सोफ़ा-सेट, बड़ी मेज़, कुर्सियाँ टेबिल-लम्प, किताबों आदि से भरा हुआ। दाहिनी ओर दरवाज़ा और बायीं ओर खिड़की, दाहिने अन्दर की ओर एक दीवार के पास छोटी मेज़ पर टेलीफोन और एक कुर्सी दर्शकों की ओर मुँह करके रखी है। तीस वर्ष की उम्र के मोहन दरवाज़े से ताला खोल कर अन्दर आते हैं, कोट उतार कर सोफ़े पर डाल देते हैं, बैठ जाते हैं। सहसा उठ कर टेलीफ़ोन के पास जाते हैं। किसी का नम्बर मिलाते हैं पर बात न करने का निश्चय करके तुरन्त नीचे रख देते हैं। दूसरी ओर जा कर खिड़की खोल देते हैं। ठंडी हवा में लम्बी साँस लेते हैं और सुख का अनुभव करने की कोशिश करते हैं। सुख नहीं मिलता, परेशानी बढ़ती जाती है। खिड़की बन्द करके अन्दर से सिटकनी चढ़ा लेते हैं। मंच पार करके दरवाज़े में अन्दर से सिटकनी लगा लेते हैं। जल्दी-जल्दी, कभी रुक रुक कर, कभी चुप रह कर, कभी बड़बड़ा कर, सारा सामान थोड़ा थोड़ा इधर-उधर खिसका देते हैं। खाली टेलीफोन की मेज़ और कुर्सी नहीं छूते। मेज़ की दराज़ पीछे की ओर खोल कर छोड़ देते हैं। बीच में कभी कोई पत्र, कभी 'पेपर-वेट,' कभी कोई कलम उठा कर उलट-पलट कर देखते हैं, ध्यान में डूब जाते हैं, बड़े एहतियात से जहाँ से जिस चीज़ को उठाया था वहीं उसे रख देते हैं। कुछ देर के बाद एक दराज़ में से एक पिस्तौल निकाल लेते हैं। उसे मेज़ पर रख देते हैं। कमरे के बीच में आ कर मुआयना करते हैं। दरवाज़े की सिटकनी खोल देते हैं और आ कर पिस्तौल उठा कर टेलीफोन वाली कुर्सी पर दर्शक

की ओर मुह करके बैठ जाते ह। बायें हाथ में पिस्तौल ले कर दीवार की ओर वाली कनपटी पर नली का मुह रख देते हैं। घोडा दबा देते ह और पिस्तौल सहित फ़र्श पर लुढ़क जात हं।

एक मिनट के बाद दरवाज़े पर कोई झीगरन की आवाज़ देता है। फिर दरवाज़ा खोल कर नौटियाल भूरा कोट पहने अन्दर आ जाता ह। लम्बा चौडा व्यक्ति है। आ कर सोफे पर खिडकी की ओर मुह करके बैठ जाता ह। एक पत्रिका बीच की मेज से उठा कर देखता है। मन नहीं लगता तो उसे पटक कर, इधर-उधर देखता है। 'कहाँ चला गया ह!' उठ कर खिडकी खोल देता है। ठडी हवा में साँसें लेता ह। 'इस देश मे हवा पर टैक्स नही लगा ह, बस'—आ कर पूववत बठ जाता ह। सामने की कुर्सी को टेढा पा, उठ कर सीधा कर देता है फिर गिरे टेबिल-लम्प को खडा कर देता है। 'लगता ह भूचाल आया है।' इस प्रकार छोटी मोटी सामने की सभी चीज़ें सीधी कर डालता है। फिर देखता ह कि जिस सोफ़े पर वह बैठा था, वह भी टेढ़ा ह। 'इसको सामान रखने की तमीज़ नही है। जिसके पास सामान ह उसके पास तमीज़ नही है, जिसके पास तमीज ह, उसके पास सामान नही है।' मेहनत करके दरवाजे की ओर पीठ करके, सोफे को सरकाने की कोशिश करता है। इतने में दरवाज़ा खोल कर मदन नुकीली दाढ़ी और चटक मटक कपडे पहने अन्दर आ जाता ह। वह आहिस्ता से दरवाज़ा भेड देता है और अवाक् नौटियाल की हरकतें देखता है। जब नौटियाल झुक कर पूरा ज़ोर लगा ना सोफ़ा उठाने में सफल होने को होता है तभी मदन बोल उठता है ?

मदन कहो भाई नौटियाल, ख़रियत तो है ?

नौटियाल (हाथो से सोफ़ा छूट जाता है, घबड़ा कर पीछे देखता है।)

मदन (आगे बढ़ते हुए) अरे, तुम तो पसीने पसीने हो रहे हो। क्या बात है?

नौटियाल (कंधे हिला कर अपने को सीधा करते हुए) कुछ नही, जरा सोफ़ा सीधा कर रहा था।

मदन (बैठते हुए) क्यों, क्या हुआ, झीगरन से यहाँ कुश्ती कर रहे थे क्या, और वह है कहाँ?

नौटियाल (बैठते हुए) मुझे क्या मालूम! (एक पत्रिका उठा कर देने की कोशिश करता है।)

मदन तुम्हें क्या मालूम! आखिर तुम अन्दर कैसे आये?

नौटियाल (पत्रिका पटकते हुए) जैसे तुम! (उसकी ओर मुह उठा कर देखता है।)

मदन (नौटियाल को अपनी ओर इस प्रकार देखते हुए पा कर कुछ कह देने के स्वर में) मैं तो दरवाजे से आया।

नौटियाल (चिढ़ कर) तो क्या आप समझते है मैं खिड़की से आया।

मदन (खिड़की की ओर देखते हुए) झीगरन के कमरे की खिड़की इतनी बड़ी है कि मोटे सहाय को छोड़ कर सभी इधर से आ सकते हैं।

नौटियाल (सहाय का नाम सुन कर मुसकुराते हुए) आज वह तुम्हारे साथ नही है? वह चलता है तो वाकई सड़क पर भीड़ बढ़ गयी हो ऐसा लगने लगता है।

मदन उसका ननीताल वाला क़िस्सा तुम्हें मालूम है?

नौटियाल ('नही' में सिर हिलाता है।)

मदन लाइब्रेरी के सामने जो हिमालय होटल' है न, उसमें ठहरने पिछली गर्मियो मे जब वह पहुँचा तो वहाँ के मैनेजर ने उसके डील डौल को देख कर कह दिया कि जगह नही है सहाय ने उससे एलफिन्सटन को टेलीफोन करके जगह

ह कि नही मालूम करने को कहा। उसने वहाँ टेलीफ़ोन पर बात की (टेलीफोन करने की मुद्रा बना लेता है) और कहा, एक महाशय, क्या नाम है आप का—मिस्टर सहाय, कमरा चाहते है नाम समझ में नही आया, मिस्टर सहाय—'स' से समुन्दर, 'हा' से हाथी और 'य से यम (टेलीफोन करने की मुद्रा खत्म कर) वहाँ से उसने भी कह दिया कि कोई कमरा खाली नही है—

नौटियाल (हँसते हुए) तुमने किस्सा फिट खूब किया, यह तो मैंने अग्रजी में कही पढा था।

मदन तुम लोग तो समझते हो भारतीय प्रतिभा कुछ ह ही नही। सब या तो नकल ह या अनुवाद है। सहाय भी चर्चिल को देख कर गोल मटोल हो गया होगा। और हो भी गया तो क्या हुआ, कोई और हो कर दिखाए।

नौटियाल अरे भई, खफा क्या होत हो! अच्छा बताओ, क्या चित्र उन बना रहे हो आजकल।

मदन मैं चित्र उत्र' नही बनाता हूँ, 'चित्र' बनाता हूँ। इस देश म फालतू शब्द बोलने पर टक्स लग जाना चाहिए!

नौटियाल तव तो सबस ज्यादा टक्स नेताओ को ही देना पडेगा। (मदन हँसता ह।) अच्छा भई, क्या चित्र बना रहे हो आजकल ?

मदन कुछ खास नही, यूक्लिड ने एक जगह कहा है कि रोशनी आँख से निकलती ह और उसी रोशनी में हम चीजो को देखते है।

नौटियाल तव तो रात में भी हमे चीज दीखनी चाहिए।

मदन नही, (एक एक शब्द पर ज़ोर दे कर) उसका मतलब यह था कि हमें चीजें उसी ढग से, उसी कोण में, दिखलाई देती हैं जसी कि दिखलाई देती, अगर रोशनी हमारी आँखो से

निकलती होती उस।

मौडिल्याल : वाह, यह दुष्टिकता कैसा सच्चा आदमी था क्या ?

मदन : दुष्टिकता सच्चा नहीं, संसार का एक बहुत रहस्यमय और दार्शनिक था, और जो दुष्टिकता के बारे में नहीं जानता वह आदमी आदमी कहलाने लायक नहीं है। तुमने तो उसका नाम जानता होगा।

मौडिल्याल - अरे बड़े, तुम फिर पागल हो गये लड़की के दुपट्टे उड़ाने में बेच कर दुष्टिकता के लिये पड़ा आता है। पर इस सबसे तुम्हारे चित्र का क्या वास्ता ?

मदन (मुस्कराते हुए) वास्ता है। अगर आँखें हो इसके कोण को सन्तुलन करती हैं तो पहले को इसके कोने से दुनिया कैसी दीखती होगी ? अगर तुम सिर के बल खड़े हो कर कमरे को देखो तो तुम्हें यह सब सामान कैसा दीखेगा। इस दृष्टि से मैं एक नया चित्र बनाने की सोच रहा हूँ। (सहसा उत्सुक हो कर) यार मौडिल्याल ! तुम तो उसके अपने हो। सिर के बल खड़े हो कर तुम एक बार दृश्य का वर्णन कर दो तो उसे सुन कर मैं अच्छा चित्र तैयार कर लूँगा। यह मेरी नजर झूठी ही होगी और मेरी आँखों में तुम्हारा भी नाम टँक जायगा।

मौडिल्याल : (घबरा कर) न, मैं सिर के बल खड़ा नहीं हो सकता। पंडित नेहरू के बारे में जान कर एक बार दीवार का सहारा ले कर मैंने कमरे में अकेले कोशिश की थी पर सिर-पैर पड़ा था। अब इस उम्र में....

मदन अच्छा तो मैं सोफ़ा पर उलटा बैठ कर सिर नीचे लटका लेता हूँ, तुम मेरे पैर ऊपर से पकड़े रहना जिससे फिसल न जाऊँ!

मौडिल्याल - हाँ, यह कर सकता हूँ।

[मदन उलटा बैठ जाता है। सिर नीचे लटकाता है और पैर ऊपर उठा लेता है। नौटियाल सोफे के पीछे जा कर उसके पैर कस कर पकड लेता है। इतने में दरवाजा खोल कुमारी स्नेहलता चश्मा लगाये एक मोटी किताब लिये हुए अन्दर आ जाती है। इन लोगों को इस मुद्रा में देख कर उसके हाथ से किताब गिर पडती है।]

स्नेहलता (एक हाथ से अपने खुले हुए मुह को ढकते हुए) हाय राम, यह क्या कर रहे है नौटियाल जी आप, (पास आ कर) छोडिए मदन जी को! नौटियाल मदन के पैर छोड देता है मदन लुढक कर उठ बैठता है, सब हाँफते हुए एक-दूसरे को देखते है।)

नौटियाल (स्नेहलता की शिकायत भरी निगाह अपने ऊपर महसूस कर) मै, मैं, मदन को मार नही रहा था, वह—

स्नेहलता नही, आप तो उन्हें आदरपूर्वक बैठा रहे थे, (सिर पकड कर सोफे पर बैठ जाती है) ओफ, मेरी तो कुछ भी समझ मे नही आ रहा है।

मदन आप शान्ति से बैठ जाइए, बात यह है कि नौटियाल मुझे उलटी दुनिया दिखला रहे थे।

स्नेहलता (हाथ सिर से हटा कर) उलटी दुनिया, यह आज हो क्या रहा है, भीगरन जी कहाँ है उनकी अफ्रीका वाली किताब (महसूस करके कि वह दरवाजे पर पडी है, दौड कर किताब उठा लाती है। नौटियाल बैठ जाता है और छत की ओर देखने लगता है। मदन खिडकी के पास जा कर ठंडी हवा में साँस लेता है।) भीगरन जी अभी लौटे नही क्या, उन्होने तो कहा था—

मदन (खिडकी के बाहर झाँक कर मजा लेने के स्वर में) क्या कहा था?

जाता हूँ।

स्नेहलता अब हम लोगों का क्या होगा? देर हो गयी है, मुझे भी घर पहुँचना है।

मदन चलिए आपको पहुँचा दूँ। (उठने को होता है।)

दरोगा (हाथ से बैठने का इशारा करते हुए) अभी कोई नहीं जाइएगा।

(मदन बैठ जाता है। दरोगा दरवाज़े की ओर मुँह उठा कर पुकारता है) कालीचरन। (एक सिपाही अन्दर आ कर दरोगा के बग़ल में खड़ा हो जाता है।) लाश गयी?

कालीचरन जी हाँ, गयी।

दरोगा डाक्टर ने जाँच कर ली थी?

कालीचरन जी हाँ!

दरोगा उन्होंने क्या पाया?

कालीचरन जो मैंने बताया था।

दरोगा और कुछ तो नहीं?

कालीचरन जी नहीं, डायरी में वही लिख लिया उन्होंने। उसमें देखने को था क्या।

दरोगा और शर्माजी ने फोटोग्राफ लिये थे?

कालीचरन जी हाँ।

दरोगा तुम्हें कैसे मालूम?

कालीचरन जी, वह कमरा लगा कर काले कपड़े में मुँह डाले बहुत देर तक कुछ करते रहे।

दरोगा कोई बल्ब जलाया था कि नहीं।

कालीचरन बल्ब तो नहीं जलाया था और वैसे—

दरोगा और बस क्या, बिल उसका भी बना कर देगा। ख़ैर! तुम बाहर रहना और किसी को अन्दर नहीं आने देना। डायरी लिखने के लिए वर्मा जी आएँ तो भेज देना। बस।

(कालीचरन बाहर चला जाता है।)

मदन मुझे भी देर हो रही है। मुझे एक काम है।

दरोगा क्या काम है आपको?

मदन मुझे एक चित्र बनाना है।

दरोगा बहुत खूब, इसमें मेरी दिलचस्पी है। खून के बाद मुलजिम खास तरह के चित्र बनाता है—

मदन (बिगड़ कर) मैंने खून नहीं किया, यह आपसे किसने कहा कि मैं मुलजिम हूँ।

दरोगा यह मनोविज्ञान की बात है, असल में इस इलाके में मैं ही एक आदमी हूँ जो शरलुक हुस की तरह खूनी का पता लगाता हूँ।

मदन शरलुक हुस नहीं, शेरलोक होम्स।

दरोगा अब मैं क्या जानूं साहब, तिवारी जी ने 'लंदन में मौत' का अनुवाद किया है उसमें शरलुक हुस ही लिखा है और झट-पट झट-पट तो मेरे साथ कोई है ही नहीं एक कालीचरन है—

नौटियाल यह झट पट झट पट क्या है?

मदन डाक्टर वाटसन का नाम होगा।

दरोगा तिवारी जी की किताब में यही लिखा है और साहब कोई ऐसी वैसी में नहीं 'लन्दन में मौत' में लिखा है, तब ग़लत कैसे हो सकता है—

स्नेहलता पर यह तो नितान्त भारतीय मौत है, इसमें लंदन से क्या वास्ता?

दरोगा अब क्या बताऊँ, २० साल से ज्यादा हो गया यह नौकरी करते हुए, वही वर्दी पहन रहा हूँ जो अंग्रेज़ सरकार ने पहनायी थी और वैसे ही काम कर रहा हूँ। यह मेरी पेटी का बकसुआ लन्दन का ही है। जो नये मिलते हैं उनमें यह चमक कहाँ। अब अंग्रेज से मुलाक़ात तो होती नहीं, गज़ब

का अफसर होता था। तिवारी जी की किताबें पढ़ कर ही नये ढग जानने की कोशिश करता रहता हूँ।

मदन (स्नेहलता से) इस तरह से तो और देर होगी, इन्हें जल्दी अपनी पूछ ताछ खतम कर लेने दो।

दरोग़ा मौत के मामले में हम लोग कोई जल्दी नही करते। (डायरी खोल कर) अच्छा आप लोगो के नाम क्या हं ?

(सब लोग अपने-अपने नाम, वल्दियत, और पता दर्ज कराते हं।) आप लोगो मे से इस कमरे में सबसे पहले कौन आया था ? (कुछ देर तक सब चुप रहते हैं। तीनो एक दूसरे का मुह देखते हैं और दरोग़ा गभीरतापूर्वक इनकी सारी हरकतें।)

नौटियाल म आया था।

दरोग़ा फिर ?

नौटियाल फिर मदन जी आये और फिर स्नेहलता आयी।

दरोग़ा जितना पूछा जाए अभी उतना ही बताइए। (डायरी देख कर) पहले नौटियाल, तब मदन और तब—ठीक है, अब आप लोग बाहर इन्तजार करिए। मैं एक एक का बयान लूगा, फिर अगर मैंने मुनासिब समझा तो आप लोग जा सकेंगे। (दरवाजे की ओर मुह कर के) कालीचरन, (कालीचरन अन्दर आ कर दरोगा के बगल में खडा हो जाता ह)

दरोग़ा ये लोग इन्तज़ार करेंगे। बयान होगा। वर्मा आ गये ?

कालीचरन जी, आ गये।

दरोग़ा इन लोगो को ले जाओ और उन्हें भेज दो।

[कालीचरन तीनो के साथ बाहर जाता है, वर्मा पुरानी काली अचकन पहने अन्दर आता है और आदाबअर्ज करता ह।]

वर्मा (बैठते हुए) किस पर शक है आपको ?

दरोगा मुझे तो नौटियाल पर हो रहा है।
वर्मा वह जो लंबा-तडंगा सा है ?
दरोगा हाँ, बिलकुल ठीक पकड़ा आपने। आपकी निगाह का क़ायल हूँ।
वर्मा अर, अब इन आँखो में वह बात नही रही वर्ना खूनी को तो मैं मील भर की दूरी से ही पहचान लेता था।
दरोगा आपकी इस तारीफ से वाकिफ हूँ। पर हम लोगो की काब-लियत को पूछने वाले अब इस देश में नही रहे। आप आ कैसे गये ?
वर्मा खाना खा कर लौटा तो पता चला कि आप मौत का बयान लेने गये हैं। इन लोगो को भी ऐसे बेसमय मरना होता है। जरा भी आराम नही किया और चल पडा। आपने तो खाया भी नही होगा।
दरोगा छुट्टी मिले तब तो खाऊँ। पहले उस लडकी को बुलवाऊँ। क्या नाम है ? (डायरी देख कर) स्नेहलता।
वर्मा कालीचरन ! स्नेहलता को भेजो ! (कालीचरन की बाहर आवाज सुनायी देती है 'बयान के लिए—स्नेहलता हाजिर होओऽऽ। स्नेहलता अन्दर आ कर बैठ जाती है।) आपका नाम स्नेहलता है ?
स्नेहलता जी हाँ।
दरोगा वल्दियत मेरे पास दर्ज है। हाँ, तो स्नेहलता जी, आप जब यहाँ आयी तब नौटियाल और मदन जी इस कमरे में बैठे हुए थे ?
स्नेहलता बैठे हुए तो नही कहूँगी—।
दरोगा (आगे झुक कर) क्या ये लोग बैठे बातें नही कर रहे थे ?
स्नेहलता नही, बातें तो नही कर रहे थे— !
दरोगा (एक बार वर्मा से आँखें मिला कर) तब क्या कर रहे थे ?

स्नेहलता (सिर पर हाथ रख कर) ओह, बड़ा सिर में दर्द हो रहा है, कुछ समझ में नहीं आ रहा है क्या करूँ, क्या कहूँ ?

दरोग़ा आप कुछ आराम कर लीजिए। हमें आपके साथ पूरी हमदर्दी है। भीगरन जी बहुत काबिल और दयालु आदमी थे। उनकी मौत किसी को भी दुःख पहुँचा सकती है।

स्नेहलता (सुबकते हुए) आप नहीं जानते भीगरन जी कितने अच्छे आदमी थे। हर आदमी की मदद करना, सब को प्यार करना, दिन-रात काम में जुटे रहना, फिर भी सब का खयाल रखना। उनका सा आदमी मिलना बहुत मुशकिल है इस दुनिया में। (कुछ शांत हो कर बैठ जाती है।)

दरोग़ा क्यों नहीं, क्यों नहीं, आप कब से उन्हें जानती थीं ?

स्नेहलता मैं भी उसी अखबार में काम करती हूँ, जिसमें वे विशेष संवाददाता थे। कितनी बार इसी कमरे में उन्होंने मुझे विश्व की मुशकिल राजनीति समझायी है। उनका समझाने का ढंग इतना अच्छा था कि आप होते तो आप भी समझ जाते।

दरोग़ा क्यों नहीं, क्यों नहीं। आखिर नेक आदमी क्या नहीं कर सकता !

स्नेहलता उस खिड़की के पास खड़े हो कर हम लोग घंटों इलियट की कविता पढ़ा करते थे। उन्हें इलियट की कविता से बहुत प्रेम था। वह बहुत अच्छी कहानियाँ लिखते थे।

दरोग़ा अच्छा ! यह इलियट कहाँ का रहने वाला है ? वर्मा जी नाम दर्ज कर लीजिए। इसके बारे में मालूम करके भीगरन जी के मनोविज्ञान को समझने में आसानी मिलेगी।

स्नेहलता रहते तो इलियट लन्दन में थे, पर अब उनकी भी मृत्यु हो गयी है।

दरोग़ा कितने अफसोस की बात है। अगर वह जिन्दा होते तो मैं

उन्हें लन्दन से बकमुआ भेजने के लिए लिखता। क्या वर्मा जी? यह मेरा बकमुआ अब घिस चला है न।

वर्मा जी, दरोगाजी, पर लन्दन से पूछताछ कैसे हो सकती है?

दरोगा क्या नहीं हो सकती है, मौत के केस में सब कुछ हो सकता है। जरूरत पड़ने पर मैं लन्दन भी जा सकता हूँ।

स्नेहलता एक बार तीन दिन के लिए, जब वहाँ की रानी गद्दी पर बैठी थी, तब झोगरन जी लन्दन गये थे। वहाँ से मेरे लिए एक पार्कर पेन भी लाये थे। अब तो बस यही चीजें उनकी याद दिलाएँगी। इस खिड़की

दरोगा (खिड़की को देख कर) इस खिड़की का इस केस से गहरा सम्बन्ध मालूम होता है। जरा नोट कर लीजिए कि गवाह ने यह शब्द कई बार कहा—आपको कोई आपत्ति तो नहीं है!

स्नेहलता नहीं, आपत्ति क्या मैं तो इसी की याद में इसी का नाम जप, अब जिन्दगी काटूँगी। अब मेरे लिए बचा ही क्या है।

दरोगा आपका बेहद नुकसान हुआ, इसमें कोई शक नहीं। अब आपका परम कर्त्तव्य है कि जिस आदमी ने झोगरन जी को आपसे सदा सदा के लिए जुदा किया है, उसे क़ानून के हवाले करने में हमारी मदद करें। हाँ, तो आप जब कमरे में आयी तो नौटियाल जी और मदन जी क्या कर रहे थे?

स्नेहलता नौटियाल जी सोफे के पीछे खड़े थे और मदन जी के पैर ओफ़, मैं क्या कहूँ कैसे कहूँ, कौन विश्वास करेगा?

दरोगा आप कहिए, विश्वास मैं करूँगा। आप नहीं जानतीं कि मैं कैसी कैसी बातों पर विश्वास कर लेता हूँ। हाँ, मदन जी के पैर

स्नेहलता नौटियाल जी मदन जी के दोनों पैर पकड़ कर उन्हें उलटा सोफे के ऊपर लटकाये हुए थे।

दरोगा (आँखें ताज्जुब से निकाल कर) अच्छा! यह तो केस की कुंजी है। इस बयान में आपको कोई शक तो नहीं है?

स्नेहलता नहीं, मैंने यह बिलकुल साफ देखा और

दरोगा और क्या

स्नेहलता इस दृश्य से मैं इतना घबड़ा गयी कि मेरे हाथ से किताब नीचे गिर गयी। मैंने कहा भी कि नौटियाल जी आप मदन जी को छोड़ दीजिए। मैं न आ जाती तो न जाने क्या होता।

दरोगा और क्या? आपको देख उन लोगों की लड़ाई रुक गयी। एक आदमी को लटकाने के लिए टाँगें बहुत ज़ोर से पकड़नी पड़ेंगी। हो सकता है, नौटियाल जी टाँगें मरोड़ भी रहे हों।

स्नेहलता यह मैं ठीक ठीक नहीं कह सकती।

दरोगा वर्मा जी, आप बयान में लिख लीजिए कि नौटियाल जी मदन जी को उलटा लटका कर टाँगें मरोड़ते हुए देखे गये। अगर टाँगें न मरोड़नी हों तो कोई किसी को इस प्रकार लटकाएगा ही क्यों, मदन जी कोई गाजर मूली तो हैं नहीं? ठीक है न, आपको कोई आपत्ति तो नहीं है।

स्नेहलता पता नहीं क्यों नौटियाल जी मुझे भी अच्छे नहीं लगते, एक प्रकार की क्रूरता टपकती है उनके चेहरे से।

दरोगा आप ठीक कहती हैं पर मुझे 'भी' से क्या मतलब है आपका?

स्नेहलता झोगरन जी भी उनका बहुत आना पसन्द नहीं करते थे। कहा करते थे कि नाहक आ कर दिमाग चाटता है।

दरोगा (वर्मा से) लिखिए कि नौटियाल जी झोगरन जी को पहले

है, क्या यह कचहरी है ?

वर्मा (जरा खाँस कर) वह देखिए, बात कुछ ऐसी है कि दरोगा जी का मा की इच्छा थी कि उनका लडका मजिस्ट्रेट बने और उसकी कचहरी में चपरासी ऐसे ही आवाज लगाए। अब दरोगा जी ने देश की सेवा जब इस रूप में करना निश्चय किया तो मा की इच्छा का लिहाज कर कालोचरन को इस तरह आवाज देना सिखाया। हमेशा वाकयात के मौके पर जा कर आप इसी प्रकार कचहरी लगा कर बयान लेते हैं। माँ की इच्छा का पालन और दश की सेवा का अद्भुत सगम ह आपमे।

दरोगा गव से सिर उठा कर) समय वहुत क़ीमती ह, इसलिए हम लोग शीघ्र काय शुरू करें। वर्मा जी आप तयार ह ?

वर्मा (अपनी डायरी और क्लम सम्हाल लत हं।)

दरोगा मदन जो, आप जब इस कमरे मे आये तब आपन क्या देखा ?

मदन एक सफेद रग का फैलाव, जिसमे दाहिने एक नीला चौकोर धब्बा, बायें नीचे की ओर लम्बा पाले रग का टुकडा और उसी स एक ओर चिपका हुआ भूरे रग का दाग।

दरोगा म समझा नही।

मदन यह आपकी समझ में नही आएगा। इस देश में चित्रकार को कोई नही समझता।

दरोगा अच्छा, तो आप तसवीर-उसवीर बनात ह !

मदन (बिगड कर) मैं तसवीर उसवीर नही, तसवीर बनाता हूँ। मैं आपको दरोगा फ़रोगा कहूँ तो आपको कसा लगेगा ?

दरोगा (चिढ़ कर) अच्छा, अगर आप चित्रकार ह तो क्या आप भीगरन जी क पास कुछ पैसा की मदद माँगन आये थे ?

मदन म लखपती हूँ।

दरोग़ा (ग़ौर से मदन का मुआयना करते हुए) क्या आप बता सकते हैं कब ? हत्या के केस में पैसे का बहुत बड़ा हाथ होता है। इसलिए जानना चाहता हूँ।

मदन मेरे एक चित्र का कम से कम दाम पाँच सौ रुपये होता है। और अब तक मैं दो सौ से अधिक चित्र बना चुका हूँ।

दरोग़ा वे चित्र इस समय हैं कहाँ, क्या लोगरन जी ने ख़रीदे हैं और रुपये नहीं दिये ?

मदन जी नहीं, वे सब मेरे घर पर हैं। जिस दिन इस देश में चित्र ख़रीदे जाने लगेंगे उस दिन यह देश आगे बढ़ जाएगा।

दरोग़ा हम लोग बयान से दूर चले गये। क्या आप मुझे समझा सकते हैं कि जब आप इस कमरे में आये तो आपने क्या देखा ?

मदन वही जो बतला चुका हूँ और जो आपकी समझ में नहीं आया।

दरोग़ा किसी तरह समझाइए।

मदन अच्छा। (अपनी जगह से उठता है। वर्मा जी के हाथ से क़लम और डायरी ले कर अलग रख देता है। हाथ पकड़ कर उन्हें सोफ़े के किनारे ला कर खड़ा कर देता है। उनसे झुक कर साफ़ा उठाने की मुद्रा में रहने का आदेश देता है। फिर दरोग़ा जी का हाथ पकड़ कर उठा कर दरवाज़े के पास ले जाता है। दीवार की ओर उँगली उठा कर और हाथ घुमा कर) यह सामने क्या है ?

दरोग़ा दीवार।

मदन दीवार नहीं, सफ़ेद दीवार।

दरोग़ा अच्छा, सफ़ेद दीवार।

मदन (खिड़की दिखला कर) यह क्या है ?

दरोग़ा खिड़की।

मदन खुली खिड़की के बाहर क्या दीख रहा है ?

दरोग़ा आसमान ।

मदन आसमान नहीं, नीले आसमान का टुकड़ा ! (सोफ़ा दिखा कर) यह क्या है ?

दरोग़ा पीला सोफ़ा ! (हँसता ह ।)

मदन (दरोग़ा की पीठ थपथपा कर) अब समझ में आने लगा आपके । (वर्मा जी की तरफ़ उँगली उठा कर) वह क्या ह ?

दरोग़ा चिपका हुआ काला दाग़ । समझ में आ गया । पर

मदन (दरोग़ा का हाथ पकड़ कर आगे बढने के लिए बढ़ते हुए) ठीक ह, मैंने भूरा दाग़ कहा था ! (दोनों बैठ जाते हैं वर्मा भी आ कर बैठ जाता ह ।) असल में मैं जब आया तब नौटियाल जी भूरा कोट पहने हुए सोफ़ा सरकाने की कोशिश कर रहे थे ।

दरोग़ा (आगे झुक कर) सोफ़ा सरकाने की ? क्या ?

मदन मुझे क्या मालूम ? मुझे तो और भी चीज़ें सरकी और गिरी-पड़ी मालूम हो रही थी ।

दरोग़ा इसके मानी नौटियाल जी और भीगरन जी में हाथापाई हुई और आख़िर में जब भीगरन जी पुलिस को ख़बर करने टेलीफ़ोन की ओर दौड़े तब नौटियाल जी ने उन्हें गोली मार दी ।

मदन (कंधे उचकाता ह और 'हम क्या जानें' वाला हाथ नचाता है ।)

दरोग़ा उसके बाद वह कमरे को ठीक कर रहे थे ताकि मालूम न पड़े कि लड़ाई हुई ह । तभी आप आ गये । ओफ़् आपके बिना तो यह केस बनता ही नहीं । तभी नौटियाल जी ने आपको पैरों से पकड़ कर लटका लिया और आगे पता नहीं क्या करते अगर स्नेहलता जी न आ जातीं ।

मदन दरोग़ा जी, आपका सिर एक ख़ाली कमरा ह !

[मदन जाता है। दरोग़ा निढाल हो कुर्सी पर लेट-सा जाता है, वर्मा उठ कर उसके पास जाने को होता है। दरोग़ा हाथ उठा कर उससे बैठ जाने को कहता है। फिर एक बार सिर हिला कर सीधा बैठ जाता है।]

वर्मा कालीचरन, नौटियाल जी को भेजो।

[कालीचरन आवाज़ लगाता है—नौटियाल अन्दर आ कर बैठ जाता है।]

दरोग़ा आप जब भीमरन जी के कमरे में आये तब से अपना बयान दीजिए।

नौटियाल मुझे कोई बयान नहीं देना है और आप बयान लेने वाले होते कौन हैं?

दरोग़ा (कई बार पलक मार कर नौटियाल को देखता है।) आप जानते हैं आप क्या कह रहे हैं?

नौटियाल हाँ!

दरोग़ा आपको मेरे साथ थाने चलना पड़ेगा।

नौटियाल मैं थाने जाने से नहीं डरता, मैंने कोई जुर्म नहीं किया है, चलिए। (दोनों हसते हैं।)

दरोग़ा (नौटियाल से) इधर उधर जाने की कोशिश मत करिएगा। हम लोगों के साथ कालीचरन रहेगा और वह एक पुराना मशहूर डाकू है।

नौटियाल वही क्यों!

[पर्दा]

[मदन और नौटियाल उसी कमरे में बैठे हैं।]

नौटियाल क्या भारत के सब कलाकार तुम्हारी तरह मूर्ख हैं?

मदन हर महान कलाकार में नासमझी होती है, उसमें दुनियादारी की कमी होती है।

नौटियाल लेकिन उस बिना सीग के भसे को कानूनन कोई अधिकार नही है इस तरह से मौत के केस मे बयान लेन का। यह तो घर मे पली हुई गाय भी जानती है। फिर तुम।

मदन (सिर ऊँचा करके) कलाकार मे दूसरे के हृदय में घुस कर उसके अन्तस्तल की गहराइयो को नाप लने की क्षमता होती है। नही तो कोई पुरुष-लेखक स्त्री पात्र का इतना सच्चा लगने वाला चरित्र न खीच पाता। मगर घर म पली गाय के हृदय में घुस कर तो आज तक अगर तुम उसे प्रतीक मान कर चल रहे हो तो बात और है।

नौटियाल एक तो हृदय मे घुसा नही पैठा जाता है। दूसरे आज के युग म हृदय म नही मस्तिष्क मे पैठा जाता है। (एकाएक अपना सिर दोनो हाथो से पकड लेता है, जसे कोई नया महत्त्वपूर्ण विचार आ गया हो) मदन। (दोनो आँखें खोल कर मदन की ओर एकटक देखता है।)

मदन (आधा उठते हुए) क्या हुआ ?

नौटियाल मस्तिष्क म कैसे पैठा जाए। मस्तिष्क म कसे पैठा जाए ? असली सवाल यही है।

मदन इसका हल

नौटियाल इसका हल मिल जाए तो झीगरन की हत्या का रहस्य खुल जाए। नही तो यह बिना पहिये का तांगा हम लोगो को इस काड में फँसा कर रहेगा। तुम लोगो का बयान बडा गडबड लगता है। मेरा मन होता है इस दरोगा का कचूमर निकाल दू। उसने जो तुम लोगो से बयान लिया है उसका बदला ले कर रहूँगा।

मदन मगर कसे ?

नौटियाल देखो अभी इसका इतजाम करता हूँ (टेलीफोन के पास जा कर एक नम्बर मिलाता है।) आप कोतवाली से बोल रहे

हैं हाँ, अच्छा जरा टलीफ़ोन दरोगा जी को दे दीजिए मैं नौटियाल बोल रहा हूँ, आप क्या भीगरन जी के कमरे में इस वक्त आ सकते हैं अभी फुरसत नहीं है। यातायात के मन्त्री आने वाले हैं? तो उनमे आपको क्या लेना देना है उनकी हाजिरी में स्टेशन मास्टर जाएँ आपसे क्या मतलब मैं कुछ नहीं जानता, हम लोग एक मौत की तहकीकात कर रहे हैं और हम सबका पुनीत कर्त्तव्य है कि हम चन से तब तक न बैठें जब तक इसके रहस्य का उद्घाटन न कर लें। अच्छा हम लोग आपकी प्रतीक्षा कर रहे है। आकर कुर्सी पर बैठ जाता है।)

[स्नेहलता कमरे में आती है। वह अफ्रीका वाली पुस्तक लिए हुए है।]

मदन ओह! स्नेहलता जी! आप भी हम लोगों की तरह बहुत उदास दीख रही हैं।

स्नेहलता (बैठते हुए) अब इसके अलावा मुमकिन हो क्या है?

नौटियाल यह किताब अभी भी आप लिये क्या घूम रही हैं?

स्नेहलता (किताब को सीने से लगाते हुए) मुझे उठते बैठते लगता है कि भीगरन जी इस पुस्तक के लिए मेरा इतजार कर रहे हैं और अभी हाथ बढा कर मुझसे यह किताब मागेगे। तब मैं उन्हें क्या दूँगी? उनकी यह अन्तिम इच्छा मैं पूरी नहीं कर पायी। इसलिए मन व्रत लिया है कि जीवन भर इस पुस्तक को अपने साथ रखूंगी।

मदन धन्य है आपकी भावना! इस देश को आप जैसी नारियों की आवश्यकता है।

नौटियाल इससे देश को क्या फायदा होगा? यह तो समय और शक्ति को बर्बाद करना हुआ।

स्नेहलता आप नहीं समझेंगे इन बातों को। इनको समझने के लिए

[illegible] ।

कॉन्स्टेबल [illegible] हुए दरोगा का प्रवेश]

दरोगा (बैठते हुए) क्या हुआ, तुम लोगों ने रात को [illegible] ? मुझे इस समय आराम कुछ देखना ।

कॉन्स्टेबल दरोगा जी, हम लोगों का विचार है कि इस इंस्पेक्टर से [illegible] वैज्ञानिक [illegible] मनोवैज्ञानिक [illegible] ले लें । वह एक आधुनिक आदमी [illegible] डर की नहीं है ।

दरोगा यह तो मैं भी कहता हूँ, पर कोई मेरी [illegible] हो रहे ।

कॉन्स्टेबल हम लोगों का विचार है [illegible] और [illegible] [illegible] रखता है और वे लोग ही [illegible] जी की मौत के आसपास की घटनाओं को [illegible] करें । उन घटनाओं के [illegible] कब हुई यह हमें [illegible] सकेगा ।

दरोगा ख्याल अच्छा है लेकिन

कॉन्स्टेबल लेकिन से काम नहीं चलेगा । (खड़े हो कर) [illegible] [illegible] जी बनोगे, [illegible] आप [illegible]

करगी, मैं भी अपना और दरोग़ा जी मदन का पाट करेंगे।

मदन मैं समझता हूँ कि हम लोग पहले इस मौत का एक ढाँचा सोच लें फिर उसे आजमाएँ।

स्नेहलता हाँ, यह जरूरी ह। नही तो मेहनत बेकार जाएगी।

नौटियाल यह मान लें कि भीमरत्न जी हम लोगों के कमरे मे आन स पहले मर चुके थे

दरोग़ा मैं इसस सहमत नही हूँ। अगर मर चुके थे और यहाँ पडे थे तो पहले किसी को दीखे क्यों नही ?

स्नेहलता हाँ, बात तो ठीक है, और जब मदन जी उलटे लटके हुए थे तब तो उन्हें दीखना चाहिए था।

मदन यूक्लिड के अनुसार उलटे लटके आदमी को हर व्यापार उलटा लगता ह।

स्नेहलता इसके क्या माने ? क्या अगर आवाज हो तो उसे सन्नाटा लगेगा और सन्नाटा हो तो उसे आवाज़ सुनाई देगी ?

मदन और क्या ?

दरोग़ा यह नही हो सकता।

नौटियाल आइए, हम लोग इस सिद्धा त को परख ल। कोरी बातो पर विश्वास करने स मौत का पता नही चलेगा। आइए दरोगा जी, आपको मदन की तरह लटका लूँ।

[दरोगा के मना करने पर भी वह उसे सोफा पर बठा कर पैर ऊँचा कर देता ह और पीछे स जा कर उलटा लटका लेता ह। दरोगा एक बार फिर मना करता ह और पैर फटकारता ह। नौटियाल के हाथ से छूट कर नीचे लुढ़क जाता ह। नौटियाल और मदन मिल कर फिर उसे सोफे पर डाल देते ह और नौटियाल पीछे जा कर दुबारा दरोगा को उलटा लटका लेता ह। मदन को सिर के इशारे से पास बुला कर कान मे कह कुछ देता ह।]

मदन - (दरोगा के उलटने का कर हाथ उठा कर पुर खिसकने को [illegible] हैं कुछ [illegible] है पर कोई [illegible] नहीं [illegible]। नौटियाल [illegible] दरोगा से पूछता है।) [illegible] सुनाई देता नहीं ?

दरोगा (बिना [illegible] है, [illegible] नहीं कर पा रहा है कि [illegible] कहे।)

नौटियाल लगता है इसे सुनाई ही नहीं दे रहा है। (उसके दरोगा को गिरा देता है (उसके उठने पर) मदन को आवाज सुनाई दी थी ?

दरोगा (फिर ऊपर उठ कर) हाँ, सुनाई दी थी !

स्नेहलता लेकिन मदन जी तो...

नौटियाल - (इशारे से स्नेहलता को चुप कर देता है।)

स्नेहलता तब तो उलटा होने पर आदमी बात भी उलटी समझेगा। [illegible] का भी [illegible]।

मदन और क्या। यह भी प्रयोग करके साबित किया जा सकता है।

नौटियाल (मदन के साथ मिल कर दरोगा को टाँगे फिर ऊपर करके पीछे जा कर उसे लटका लेता है।)

मदन (सूचना देने के स्वर में) आप उलटी खोपड़ी के आदमी मालूम पड़ते हैं।

दरोगा (जोर जोर से 'नहीं' का सिर हिलाता है।)

मदन (स्नेहलता की ओर देख कर) देख लो, जो कहा था वही निकला। उलटा सिर है फिर भी 'नहीं' का सिर हिलाता है।

नौटियाल (धीरे से दरोगा को गिरा कर) अब यह साबित हो गया कि मदन जी मरे हुए भोगराज को मरा पड़ा नहीं देख सकते थे। क्योंकि उन्होंने मरे भोगराज को नहीं देखा इसलिए

यही बहुत मुमकिन है कि वे पहले ही मर चुके थे। पर कैसे ? (सिर खुजलाता है।)

दरोग़ा (कुछ बिगड कर) यह अच्छा मजाक है। जब मदन जी यहाँ मौजूद ह तब मं क्यो उनका पाट करूँ, मुझे क्या हर बार लटकाया जा रहा है ?

नौटियाल आदमी मौत के केस मे जान तक देने के लिए तयार हो जाता ह। अगर हम एक देश मे जीते है तो जान की क़द्र करना, जान लेने वाले का पता लगाना और उस कानून के सामने खडा करना हमारा सबसे बडा धम है।

मदन मगर इस देश की हालत तो इतनी पिछडी हुई ह कि हमारे यहाँ जासूस अभी हं ही नही। अगर कोई आदमी बढिया हत्या करे तो उससे फायदा भी क्या होगा। उसकी सूझबूझ की तह में पहुँच कौन पाएगा ? बिचारा बिना ख्याति पाय ही मर जाएगा। यहाँ तो बस गँडासे स सिर काटा और भाग लिये। तब दरोग़ा जी गये और उसे पकडलाये। इस म कला का कही नामोनिशान नही ह !

नौटियाल जसे रद्दी पकडने वाले होंगे वैसे ही रद्दी हत्यारे होंगे।

स्नेहलता क्या आप यह कहना चाह रहे ह कि किसी देश की प्रगति का माप यह है कि वहाँ कसी बढ़िया या पेचीदी हत्याए होती ह।

मदन और क्या ? रद्दी देश में रद्दी हत्याएँ हागी और आगे बढ़ हुए देशो मे बढ़िया। वही देखो, अमरीका मे कनेडी की हत्या हुई, अभी तक पता नही किसने कसे मारा। यह ह हत्या ! और वह हमारे यहाँ महात्मा जी क गोली लगी। उन्होन हत्यारे को दख भी लिया और कहते ह उसे क्षमा भी कर दिया। लोग उसे हाथ पकड कर ले गये। यह भी कोई बात हुई। यह देश बिलकुल पिछडा हुआ ह।

नौटियाल अगर सिद्धान्त कम और काम ज्यादा किए जाएँ तो बेहतर होगा। दरोगा जी, तहक़ीक़ात करना तो अलग रहा, हत्यारे को खोज निकालने में आप हमारा साथ भी नहीं दे रहे हैं।

दरोगा कमाल है, और अब तक उलटा लटका क्यों हुआ था? क्या मुझे शौक़ है उसका।

नौटियाल अगर आपको मदन जी का पाट अच्छा नहीं लग रहा तो क्या आप फ़ीगरन जी का पाट अदा करना मंजूर करेंगे। किसी तरह आप सहयोग तो दें।

दरोगा (मजबूर हो कर) अच्छा।

मदन मेरी समझ में असली गुत्थी यह है कि जब हत्यारे ने फ़ीगरन जी पर गोली चलायी तब वह कर क्या रहे थे, कहाँ बैठे थे?

स्नेहलता मुझे तो रह रह कर लगता है कि हत्यारे ने उस खिड़की (खिड़की की ओर इशारा करता है।) से गोली चलायी और उनके जीवन के शीशे को चकनाचूर कर दिया।

नौटियाल अगर उस खिड़की से गोली चलायी तो जरूर फ़ीगरनजी मेज के कोने पर बैठे सिगरेट पी रहे होंगे। (दरोगा की ओर देख कर) ज़रा आप वहाँ मेज के कोने पर बैठ कर सिगरेट पीने का अभिनय कीजिए। मैं खिड़की के पास जाता हूँ। (दरोगा मुँह लटका कर अनमने भाव से मेज पर बैठ जाता है, नौटियाल खिड़की के पास जा कर उँगली और अँगूठे से तमंचा बना कर निशाना लेता है।) ठीक बिलकुल ठीक कनपटी पर निशाना लग रहा है। जैसे ही मैं गोली दागने की आवाज करूँ आप गोली खा कर गिरने का अभिनय करिएगा। ठाँय!

[दरोगा गोली की आवाज सुन कर भी बैठा रहता है। मदन उससे गिरने का इशारा करता है, अन्त में आ कर उसे धीरे से धक्का देता है। दरोगा नीचे गिर पड़ता है। तीनों उसके चारों तरफ़ खड़े हो कर उसका मुआयना करते हैं।]

स्नेहलता भीगरन जी इस प्रकार पैर पसार कर नही पड़े हुए थे। उनके चेहरे पर एक सौम्य था

मदन हाँ, गिरने की शैली मुझे भी कम पसन्द आयी और इस समय भी आकार में लय की कमी है।

नौटियाल इस समय चेहरा और लय देखने का वक्त नही है। देखना यह है कि भीगरन की लाश इसी तरह से पड़ी हुई थी या नही।

स्नेहलता उनका सिर खिड़की की ओर था और पैर दीवार की ओर, यह तो बिल्कुल उलटे पड़े हैं।

दरोगा क्या अब मैं उठ सकता हूँ? (उठ कर खड़ा हो जाता है और अपना माथा छूता है जैसे चोट लग गयी हो। हाथ में देखता है कि खून तो नही आ गया।)

नौटियाल (इत्मीनान से सोफे पर बैठ कर) इससे क्या नतीजा निकलता है।

मदन (मेज पर बैठ कर) इसके माने यह मेज पर नही बैठा हुआ था जब उसके गोली लगी।

दरोगा शरलक हम तो कभी हत्यारे को पकड़ने के लिए मेज पर से नही गिरता या फिर मैं क्यो गोली खाऊँ और

नौटियाल (दरोगा की ओर मुड़ कर) क्या आप चाहते हैं कि हत्यारा न पकड़ा जाए?

दरोगा क्यो नही क्या नही, म तो कल से हथकड़ियाँ लिये घूम रहा हूँ।

नौटियाल तो जरा हम लोगों को बैठ कर सोचने दीजिए।

दरोगा अच्छा, मैं भी सोचूगा (एक सोफे पर बैठ जाता है।) कालीचरन को भी साथ ले आता तो अच्छा रहता।

स्नेहलता भीगरन जी की मृत्यु से जैसे हम सब अकेले रह गये। मुझे तो बड़ा डर लगता है।

स्नेहलता भीगरन जी इस प्रकार पैर पसार कर नहीं पड़ हुए थे। उनके चेहरे पर एक सौम्य था

मदन हाँ, गिरने की ढंगी मुझे भी कम पसन्द आयी और इस समय भी आकार में लय की कमी है।

नौटियाल इस समय चेहरा और लय देखन का वक्त नहीं है। देखना यह है कि भीगरन की लाश इसी तरह से पड़ी हुई थी या नहीं।

स्नेहलता उनका सिर खिड़की की ओर था और पैर दीवार की ओर, यह तो बिल्कुल उलटे पड़े हैं।

दरोगा क्या अब मैं उठ सकता हूँ? (उठ कर खड़ा हो जाता ह और अपना माथा छूता ह जैसे चोट लग गया हो। हाथ में देखता ह कि खून तो नही आ गया।)

नौटियाल (इत्मीनान से सोफ़े पर बैठ कर) इससे क्या नतीजा निकलता ह।

मदन (मेज पर बैठ कर) इसके माने वह मेज पर नही बैठा हुआ था जब उसके गोली लगी।

दरोगा शरलुक हुव तो कभी हत्यारे को पकड़ने के लिए मेज पर से नही गिरता या फिर मैं क्यो गोली खाऊँ और

नौटियाल : (दरोग़ा की ओर मुड़ कर) क्या आप चाहते है कि हत्यारा न पकड़ा जाए?

दरोग़ा क्यो नही, क्या नही, म तो कल से हथकड़ियाँ लिये घूम रहा हूँ!

नौटियाल तो जरा हम लोगो को बैठ कर सोचने दीजिए।

दरोगा अच्छा, मैं भी सोचूगा (एक सोफे पर बैठ जाता है।) काली चरन को भी साथ ले आता तो अच्छा रहता।

स्नेहलता भीगरन जी की मृत्यु से जैसे हम सब अकेले रह गये। मुझे तो बड़ा डर लगता है।

मरन मुझे [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हैं। [illegible]
न हमारे [illegible], [illegible] और [illegible] [illegible]
है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
कर दिया। [illegible] [illegible] है [illegible] है।

रघोवा [illegible] [illegible] नहीं [illegible]। [illegible] [illegible]
हुए—

लिहुनजा [illegible] रहे हैं [illegible] है ?

मरन हाँ बिल्कुल [illegible] है। [illegible] हमारे [illegible] [illegible]
एक [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
जिन्दगी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
दुनिया के हर महान साहित्य ने [illegible] और [illegible]
[illegible] और [illegible] [illegible] हमारा [illegible]—
हमारा साहित्य था।

लिहुनजा [illegible] [illegible] [illegible]
जाएगा।

मरन और क्या, हमारा साहित्य, हमारा कला और [illegible] सब [illegible]
में नयी ऊँचाइयों को छुएगी।

नौटियाल अब अगर आप लोग भविष्य को [illegible] [illegible]
पर ध्यान दें तो एक बात [illegible] [illegible] हूँ।

रघोवा (आगे झुक कर) क्या ?

नौटियाल अगर [illegible] का सिर खिड़की की तरफ था तो [illegible]
हुए वह टेलीफोन के पास वाली कुर्सी पर बैठा हुआ था। [illegible]
गिरा (उठ कर हाथ पकड़ कर दरवाज़े की [illegible] हुए)
चलिए ज़रा आप उस कुर्सी पर तो बैठिए

रघोवा मैं नहीं मैं नहीं (नौटियाल ले जा कर [illegible]

बठा देता है और खुद फिर खिड़की के पास जा कर तमचा उँगलियो स बना लेता ह। दरोग़ा जसे डर कर बचाव के लिए अपना एक हाथ कनपटी पर लगा लेता। सहसा उसके मुह से आवाज़ निकलती है।) ठहरिए, नौटियाल जी, ठहरिए

नौटियाल (अपना हाथ नीचे करके) क्या बात ह ?

दरोग़ा आप मेरी दाहिनी कनपटी पर गोली क्यो चलाना चाह रहे ह जब कि झीगरन जी के हत्यारे ने बायी कनपटी पर गोली मारी थी।

नौटियाल (उछल कर दरोगा के पास आ कर उसकी बायी कनपटी छूकर) क्या झीगरन के गोली इस ओर लगी थी।

दरोग़ा (सिर हिला कर) हाँ! मेरा डायरी म दज ह।

मदन तब तो इसके माने हुए कि

नौटियाल (वाक्य को पूरा करते हुए) चूकि दीवार फोड कर किसी ने गोली नही चलायी इसलिए झीगरन ने खुद अपने हाथ में पिस्तौल पकड कर कनपटी पर रख कर दाग़ दी।

स्नेहलता और झीगरन जी हर काम बायें हाथ स ही करते थे। (कह कर वह अपने मुह पर हाथ रख लेती ह।)

मदन आज इस दश के सास्कृतिक इतिहास मे एक नया पृष्ठ खुला। आज साबित हो गया कि हमारे लेखक और कलाकार भी आत्महत्या कर सकते है। अब हम ससार मे सिर ऊँचा करके चल सकते ह।

स्नेहलता अब उनका नाम हेमिगवे, स्टीफेन ज़्विग और वान गाग के साथ लिया जाएगा। मैं पहले स ही जानती थी कि वे एक महान् आत्मा थे।

दरोग़ा (खड़ा हो कर डायरी निकाल कर कुछ नोट करता ह।)

[पर्दा]

● ● ●

नाटक कैसा, क्यों और किसके लिए

भाषा ईश्वर ने नही बनायी। भाषा किसी एक व्यक्ति ने सहसा एक दिन ईजाद नही कर दी जसे वह साइकिल, इजन या बेतार का तार का आविष्कार कर लेता ह। यदि ये दोनो बात नही हुई तो भाषा मनुष्य का एक निजी गुण हैं, जो उसके विकास के साथ विकसित हुआ, एक सामूहिक क्रिया है जिसम भावो को व्यक्त करना और समझना सहज और अनिवार्य ह। मनुष्य जिन प्रतीको में सोचता ह और अपने को अभिव्यक्त करता हैं उसमें और वस्तुआ या स्थितियो मे कोई तार्किक सम्बन्ध नही ह। प्रयोग और रिवाज से ही भाषा अथ ग्रहण करती ह। शब्द का अथ एक सदभ में, एक स्थिति में, उसका प्रयोग ह। एक व्यक्ति, एक समूह, एक देश जसे जैसे उत्थान या पतन के अनुभवो स गुजरता जाता ह, उसके सन्दभ और उसकी मौजूदा स्थितियाँ बदलता जातो हैं। चूकि भाषा का स्थितियो से ज म का सम्बन्ध हैं, भाषा भी बदलती ह। बहुत से शब्द जो पहले गौण थे अब महत्त्वपूण हो जाते हैं और जो महत्त्वपूण थे पीछे चले जाते हैं। यह सब इतना आसानी से नही होता है जितना कहने में लग रहा है। पर अभी इससे बँधी हुई जटिलताआ को स्थगित कर दें तब भी इतना निश्चित ह कि स्थितियों के साथ हमारे चिंतन को सामग्री बदलती हैं और इसलिए भाषा भी। जब ऐसा सुचारु रूप से होता है तब भाषा अपनी ताजगी और जादुईपन से वचित नही होती। तब मनुष्य बार बार अपने को उस तरह के ढाँचे की स्थितिया में पाता हैं जिनमें ये शब्द ज मे थे। भाषा अपने स दभ म पूरी तरह गूजती हैं और क्योंकि अब स्थितियो का क्रम भिन है, साजोसामान भिन्न ह एक नयापन और एक ताजापन बना रहता हैं। स्थिति एक अति की हो तब नये शब्द भी गढे जा सकते ह, गढे गये हं। खर, अब प्रश्न यह है कि कौन से शब्द हमारे लिए आज के सन्दभ में महत्त्वपूण ह? अगर हम यह खोजना चाहते ह

तो पहले हमें यह खोजना पड़ेगा कि हम किन स्थितियों से घिरे हुए हैं ? उन स्थितियों में या बसे ढाँचे वाली स्थितियों में, जब हम अपने को रखेंगे तो तुरन्त पहचान लेंगे कौन से शब्द महत्त्व के हैं । हम शब्द को जसे पुन खोज लेंगे । इस खोज में एक सजनात्मक सुख मिला होगा । स्थिति में अपने को रचना और तब उचित शब्द को खोजना नाटक का तरीका है और उसी में मुमकिन ह । इसलिए नाटक का एक विशेष महत्त्व है ।

कहने को दूर तक कवि या उपन्यासकार भी यही करता ह, पर कुछ ही दूर तक । यह कहना ठीक होगा कि उसके लिए यह अनिवार्य नहीं ह । बल्कि वह आसानी से अपनी कुर्सी पर बैठा हुआ, सोचते हुए, इसका उल्टा करने लग जा सकता है । बजाय स्थिति में अपनी भाषा खोजने के वह अपने चिंतन की भाषा के अनुरूप स्थितियाँ गढ़ने लग जा सकता ह । अगर इस खतरे के प्रति वह आगाह नहीं हुआ तो चक्रवृद्धि की तरह यह दोष बहुत जल्दी भयानक अनुपात ग्रहण कर लेगा । यदि उसकी स्मरण शक्ति तेज हुई, और वह भाषा का अव्वल दर्जे का विद्यार्थी हुआ, तब तो उसे धरती पर वापस लाना भी नामुमकिन हो जायगा । ऐसे सफल कवि या उपन्यासकार की आदत इतनी खराब हो जायगी कि वह नाटक लिखने के क़ाबिल ही नहीं रह जायगा, या लिखने बठेगा तो उसका रुझान होगा कि वह ऐतिहासिक नाटक लिखे । क्योंकि नाटक उसे तुरन्त मजबूर करेगा कि भाषा और स्थिति मे साम्य बैठाये । चूंकि भाषा उस पर हावी ह वह तुरन्त उन स्थितियों को चुन लेगा जो उसकी पुस्तक से सीखी हुई भाषा के अनुरूप हं । हा, इस चुनाव म वह इतना खयाल अवश्य रख सकता ह कि ऐतिहासिक स्थितियों म से उन्ही को चुने जो किसी रूप म आज के जाने माने मूल्यों या प्रश्नों से कुछ सम्बन्धित हों । यदि समाज का एक वग अपने वतमान से असन्तुष्ट और हीन भावना से बचने के लिए अतीत के गौरव से आतंकित हुआ तो ऐसे नाटक तुरन्त मान पा जायेंगे । उनकी ऊपरी

गभीरता भाषागत साहित्यिकता और प्रतीकात्मक वर्तमानता बजाय दोष लगने के गुण दीखने लगेंगे । ऐसे नाटको का लिखा जाना और मान पाना किसी सर्जनात्मक प्रश्न को हल करने मे तनिक भी सहायक नही होगा । नाटक लिखने और प्रस्तुत करने की समस्या अछूती रह जायगी । उन शब्दो को ढूढना जो हमारे आज के वास्तविक और व्यापक जीवन की लय को पकड सकें, बाकी रह जायगा । और अगर यह नही हुआ तो कुछ नही हुआ ।

जब साहित्य और चिंतन की भाषा जीवन की मौजूदा स्थितिया से जुदा हो जाय तब क्या स्वाभाविक है और क्या अस्वाभाविक, इसका कोई अदाज नही रह जाता । न चिंतन में न जीवन में । दोनो की दिशाएँ पृथक और प्राय विपरीत भी हो जा सकती है । ऐसी हालत में भाषा अपनी वास्तविकता, अपनी हस्ती को खो बैठती है । भाषा, अपनी भाषा न लग कर, कोई दूर की चीज या महज सहूलियत की चीज लगने लगती है । एक सजावट की चीज़ लगने लगती है । जसे बाग में फूल हो, सडक पर मोटर हो, कमरे मे कुर्सी हो, वैसे ही कही भाषा भी हो । वह भी जैसे कोई वस्तु हो । फिर अगर वह टूटी हालत मे ह तो किसी और से भी काम चलाया जा सकता ह । काम चलना चाहिए । अगर किसी और भाषा से अच्छा काम चले, तो चले । वह भाषा जिसम चिंतन और सजन हो रहा है अगर हमसे उतनी ही दूर है जितनी कोई अन्य भाषा, तो जैसे यह वस वह । कौन सी भाषा हमारे लिए सच्ची ह, यह कैसे साबित हो ? यह सबूत नाटक में मिल सकता ह ।

जब हम अपनी भाषा मे अपने को व्यक्त करते ह, तो उसमें और जब हम उस भाषा मे अपने को व्यक्त करते ह, जिसे हमने सीखा ह और काफी जानते ह उसमे, ज़मीन-आसमान का अन्तर ह । पहली स्थिति में मुमकिन ह कि हम कुछ खास शब्दो को न जानते हो, या कुछ शब्दा को भूल भी गये हो, पर अपने देश में रह कर हम किसी भी प्रकार

अपनी ही भाषा को याद नही रखते हं। जब कि किसी भी अन्य सीखी हुई भाषा को, उस भाषा क बोलने वाला के बीच रह कर भी सीखी हुई भाषा को, हम याद रखते हैं और तब उसका प्रयोग करते हं। अपनी भाषा के प्रयोग के हम स्वय ही सबूत हैं। दूसरे की भाषा का सबूत हमार या हमारे परिवेश के बाहर ह, इसलिए हम उसका महज अदाज लगा सकते हैं। क्याकि विदेशी भाषा याद कर के बोलते हैं इसलिए उसम अगर काफी याद हं तो बिना दूसरी भाषा का शब्द लाये देर तक बोल सकते ह। पर अपनी भाषा में बोलते समय याद की हुई भाषा के शब्द बीच बीच में आ कर अटक जाते हैं और अक्सर मुह से निकल भी जाते हैं। जो याद नही रखा गया उसस आसानी से बचा जा सकता है। जो याद है उससे बचने क लिए मेहनत करनी पडती ह। रोज एक याद की हुई विदेशी भाषा का हम अदाजन प्रयोग करते ह। यह दिखलाने के लिए कि हम उस भाषा में माहिर ह हम कम प्रयोग में आन वाले अजीब और कठिन शब्दो को याद रखते हैं और गव के साथ उनका इस्तेमाल करते ह। भारतीय अग्रेजो इसके लिए मशहूर हैं। अदाजन अजीब और कठिन शब्दो का रोज रोज प्रयोग करते हुए या ऐसे प्रयोग को आदर पाते हुए देख कर, हमारी ऐसा करने की आदत बन जाय तो कोई ताज्जुब नही। यह आदत, हमारे, अपनी भाषा के प्रयोग में भी एक मरोड पैदा कर सकती ह। बल्कि ऐसा हुआ है। तनिक वयस्क हिंदी के लेखका की रचनाओ में कठिन शब्दा का वायवी प्रयोग भरा पडा ह। उनके जमाने में भारतीय अग्रेजो (अगर ऐसी कोई अग्रेजी ह तो) इन्ही मूल्यो का पोषण कर रही थी और वे इससे प्रभावित हुए। वह अपनी ही भाषा को जैसे याद कर के लिखने लग गये, या उनकी भाषा मे यह भलक आ गयी। यह भाषा 'प्रसाद' के ऐतिहासिक नाटको में निभ गयी, उस समय की बहुत सी कविता में निभ गयी। आज भी उसका गहरा असर है। पर इस भाषा की कमजोरी को सबस अधिक अगर कोई कला माध्यम

शब्दों का प्रयोग करके व्यक्त कर सकते हैं या उसे ठेंगा दिखा कर व्यक्त कर सकते हैं। जो भाव अँगूठा दिखा कर व्यक्त किया जा सकता है वह शब्दों से कभी नहीं व्यक्त किया जा सकता। देश और परम्परा के साथ भाषा ही नहीं, हरकत भी बदल जाती है। अलग-अलग जातियाँ अलग अलग हरकतें इस्तेमाल में लाती हैं और एक ही हरकत का एक जगह एक माने हो सकता है और दूसरी जगह दूसरा।

किसी छोटी मामूली सी घटना से आरम्भ कर के नाटक में हम समाज की स्वाभाविक हरकतों को ढूंढ़ सकते हैं और साथ ही उस स्थिति के उपयुक्त शब्दों को बटोर सकते हैं। अगर लोगों या कुछ वर्ग के सदस्यों में अपने को हरकतों से व्यक्त करने की प्रणाली समाप्त हो चली है और उसका स्थान महज़ शब्दों ने ले लिया है, तो यह स्थिति ऐसे नाटक को देख कर तुरन्त पकड़ी जा सकेगी। इससे यह भी पता चलेगा कि समाज की शक्ति कुछ प्रकार के अनुभवों को प्राप्त करने के लिए समाप्त हो चुकी है। जो भी अनुभव किया जा सकता है वह हमेशा व्यक्त किया जा सकता है। क्योंकि एक प्रकार की अभिव्यक्ति सूख चुकी है और चूंकि वह दूसरी तरह से अभिव्यक्त की ही नहीं जा सकती इसलिए वह अनुभव नामुमकिन है। एक समाज एक प्रकार के अनुभवों से सूना हो जा सकता है और इस स्थिति का सही अंकन नाटक में ही मुमकिन है, क्योंकि वही दोनों प्रकार की भाषाओं का प्रयोग करता है।

एक देश की भाषा वह है जो वहाँ बोली जाती है। नाटक का, बोली जाने वाली भाषा से सीधा सम्बन्ध है। एक देश के लोग क्या थे और अब क्या हैं इसका सजग उदाहरण है कि लोग कैसे उठते-बैठते हैं, चलते फिरते हैं, अनजाने में किसी स्थिति में कैसी कैसी हरकतें करते हैं। नाटक इन हरकतों को उजागर करता है इसलिए परम्परा से सीधा संबंध स्थापित करता है। पर इतना ही नहीं है। जब नाटक में हरकत और भाषा का आमना सामना होता है तब शब्दों के प्रयोग के कई अर्थ खुलते हैं। जो सामने है उसे नाम देना पहला स्तर है। जो सामने नहीं है उसे

पुकारना दूसरा स्तर है। जो सामने है, पर शक्ल बदल हुए है, उसे भेष्कर नाम देना तीसरा स्तर है। हरकत कुछ और हो और उसके असली भाव को पकडकर नाम कुछ दूसरा दिया जाए तब शब्द का तीसरा स्तर खुलता है और यह नाटक में सहज हो लाया जा सकता है। इसमे भाषा म अथ ग्रहण करन की शक्ति बढती है।

इस प्रकार हम देखते है कि नाटक बोल-चाल की भाषा में और हरकत की भाषा म एक अटूट सम्बन्ध स्थापित करता है। बल्कि, एक पचाहित भाषा को लेकर चलता है जिसम से साधारण भाषा और हरकत की भाषा एक एक करके निकाले जा सकते है, पर जो स्वय इनके जोड स अधिक है। इसके अनुसार सिफ यह बताना कि एक चरित्र क्या कह रहा है अधूरा है, इसलिए गलत है। क्योंकि चरित्र कहता भी है और हरकत भी करता है। जो हरकत स कहता है वह शब्द म नही कहा जा सकता, इसलिए वह जो कह रहा है, वह वह है जो शब्दो और हरकतो का मिला कर कहा गया है। और यह समाहित भाषा ही सही भाषा है, पूरी भाषा है। यहाँ अगर महज शब्द है और हरकत नही है तो उसका खास अथ है। यहाँ अगर महज हरकत है और शब्द नही है तो उसका भी विशेष अथ है। इसके माने ये है कि केवल एक प्रकार का अनुभव मुमकिन है, इसलिए वही व्यक्त किया जा रहा है। जा नही व्यक्त किया जा रहा वह है भी नही। जितना व्यक्त किया जा रहा है उतना ही है या नाटक में जितना व्यक्त होता है उतना जरूरी भी है और पर्याप्त भी। इस दृष्टि से कविता और उपन्यास अधूरे माध्यम हैं। पहले के नाटककार भी इस स्थिति स आगाह थे, पर आज का नाटककार इसको अधिक समझता है और इसका पूरा प्रयोग करता है। वह इसको दुहरी भाषा नही वरन एक, पर जटिल, भाषा मानता है जिसमें पूरे अनुभव के यथाथ का भार ढोने की क्षमता है। नये नाटक न हमारे भाषा के प्रयोग को निश्चय ही विस्तार दिया है और गहराई दी है। अगर हम मानें लें कि आज का जीवन अधिक जटिल हो गया है, तो कह सकते हैं कि नाटक की भाषा के सहारे आज के अधिक जटिल हुए अनुभव को व्यक्त किया जा सकता है, किया जा रहा है।

लिखी जानेवाली साहित्य की भाषा और बोलचाल की भाषा में अंतर होता है। कभी कभी यह अन्तर बहुत बढ़ जाता है। जब यह अन्तर एक सीमा के बाहर हो जाता है तो लिखी जानेवाली भाषा अस्वाभाविक हो जाती है, व्यक्तिगत हो जाती है। कुछ लोगों के लिए ही वह मान रखने लगती है। वह एक सीमित दायरे के व्यक्तिगत अनुभवों का ही व्यक्त कर पाती है और वह भी उन्हीं के लिए जो उससे परिचित हैं। ऐसी भाषा का प्रयोग करनेवाला लेखक दुनिया को धीरे धीरे दो हिस्सों में बाँट लेता है। एक वह जो लिख रहा है और एक वह सारा समूह जिसको वह देख रहा है, समझ रहा है और जिसके बारे में वह लिख रहा है। जिस भाषा में अपने इस अनुभव को वह व्यक्त करेगा, उसमें और इस समूह की बोलचाल की भाषा में चूंकि बहुत अन्तर है, इसलिए वह जिनके बारे में लिखेगा, वे उसकी रचना के पाठक नहीं हैं। यह बात अलग है कि उसमें से कुछ मेहनत करके, उस परिमार्जित भाषा का अध्ययन करके, उसके रीति रिवाज को समझ बूझकर, उसकी रचना का आस्वादन कर लें। रचनाकार एक ऐसा प्रतिभाशाली व्यक्ति है, जो ऐसी अच्छी रचनाएँ करता है कि अगर इतनी मेहनत करके कोई उसकी रचना समझ पाया तो उसे एक सौंदर्यानुभूति होगी जो वैसे न होती। यहाँ तक पहुँचने का जिम्मा सारा पाठक का है। एक बार वह यहाँ तक पहुँच गया तो जान जाएगा कि पहले जिस समूह का वह सदस्य था, वह इस लेखक को दृष्टि में कैसा दीखता था, कैसे-कैसे अनुभव वह इस लेखक को देता था। स्वयं समूह के सदस्यों के अपने अनुभव क्या थे, उससे यहाँ कोई मतलब नहीं है। रचना समूह के सदस्यों के अनुभवों को आधार न मानकर रचनाकार के समूह के बारे में अपने अनुभव को आधार मानकर लिखी गयी है। एक प्रकार से वह लेखक की आपबीती है। कविता में या उपन्यास में, लेखक अपनी आपबीती को अपनी भाषा में व्यक्त कर देता है, और इसकी उसे पूरी स्वतन्त्रता है। अगर वह प्रतिभाशाली लेखक है तो लोग मेहनत करके उसका अध्ययन करेंगे। उसकी आपबीती को

बात बहुत मुश्किल नही लगेगी, अगर बोल चाल की भाषा, हरकत की भाषा और ऐसे अनुभवों को लेकर नाटक लिखा जाएगा, जो लेखक की आत्म कथा न होकर बहुता की बात कहें। यहाँ नाटक के लेखक पर जो बन्धन लगा लिये गये हैं, इस माने मे सही लगते ह कि अगर ये सीमाएँ मानकर नाटक लिखा गया तो दर्शक समूह को सहज ही भाएगा। पर प्रश्न है कि इन ब धनो को मानकर जो लिखा जाएगा उसमें कुछ महत्त्वपूर्ण बातें महत्त्वपूर्ण ढग से व्यक्त भी की जा सकेंगी, या नही ? और दूसरा प्रश्न यह भी है कि यह बन्धन लेखक का स्वतन्त्रता को कम तो नही करेगा ? इन दोनो प्रश्नो के उत्तर आपस मे गुथे हुए ह।

हम यह मानकर चल सकते ह कि नाटक एक कला माध्यम है, इसलिए वह अन्य कला माध्यमो से भिन्न ह। विशेषकर जो उप यास में लिखा जा सकता ह या कविता म लिखा जा सकता ह, वह नाटक में नही लिखा जाना चाहिए। नाटक म वही लिखा जाना चाहिए, जो नाटक के माध्यम की माँगा के माफिक हो। यह शत चूकि माध्यम की अपनी विशेषताओ से परिचालित है, इसलिए लेखक को स्वतन्त्रता का कम नही करनी। बोल चाल की भाषा और हरकत चूकि सब दर्शका की पूँजी ह और उनकी मुठभेड से जटिलता उत्पन्न का जा सकती ह, इसलिए यहाँ से शुरू करने में फायदे ह। अगर हम यह भी मान ल कि बोल चाल की भाषा और साहित्यिक भाषा में अन्तर ह, और साहित्यिक भाषा अधिक परिमार्जित और शक्तिशाली भाषा ह, तो भी कोई हज नही। क्योकि, कला के स्तर पर भाषा का परिमार्जित होना या शक्तिशाली होना कोई माने नही रखता। कविता और उप यास के माध्यम से प्राप्त साहित्यिक भाषा की शक्ति नाटक के लिए निरर्थक हो सकती है। बोलचाल की भाषा अलग भाषा होते हुए भी अपने में एक पूरी भाषा ह और उसमे नाटक की कलात्मक भाषा बनने के सभी गुण मौजूद ह। इस भाषा म नाटक लिखना उतना ही बधन स्वीकार करना है, जितना किसी भी भाषा में लिखना ब धन स्वीकार करना ह। इस माने में आज हिन्दी में लिखना भी एक बधन स्वीकार

करना है। इसलिए यह परेशान करनेवाला वचन नहीं है। दिक्कत पेश होती है जब हम कहते हैं कि लेखक अपनी आत्म कथा न कहकर सबकी बात कहे। यही पर लगता है कि हम लेखक पर रोक लगाते हैं कि वह अपने निजी सत्य को, अपने को एक अलग इकाई मानकर प्राप्त किए गये अनुभवो को नजर अंदाज करके अपने को समूह म मिला दे, समूह क सदस्यो की दृष्टि मे देखने का प्रयत्न करे और उस दृष्टिकोण से देखे गए यथार्थ की कलात्मक अनुभव का कच्चा मल मान कर उसे नाटक का रूप दे दे। निश्चय ही समूह का सदस्य हो जान पर लगता है, जैसे वह अपने लेखक की हस्ती मिटा देगा और उसका काम रह जाएगा सिर्फ हमारे सामने समूह या उसके सदस्यो की गिरी हालत, गुमराह मनोवृत्ति, सत्य से दूरी या कुल मिलाकर उसकी एक नगी तस्वीर बेशर्मी के साथ हमारे सामने खडी कर देना। अपनी तमाम शक्ति और लियाकत इसमें खर्च करने के बाद वह आशा करे कि दर्शक अपने कटु यथार्थ को पहचानकर अपने को जान लेगा और तब उसे एहसास होगा कि वह क्या है और जो उसे होना चाहिए, उससे वह कितनी दूर है। यह आत्मज्ञान उसे एक प्रकार की मुक्ति प्रदान करेगा। और अगर यह सब हो गया, तो नाटककार सफल हो गया। जैसे नाटककार के पास इस खतरनाक और नीरस रास्ते को अपनाने के अलावा दूसरा चारा नहीं। दूसरी ओर कवि और उपन्यासकार कल्पना, प्रेममय जीवन और सुन्दर भाषा में अपने निजी लखनीय अनुभवो एव सत्यो को अभिव्यक्ति देने के लिए स्वतन्त्र है। ऐसी हालत में नाटककार बनना कौन पसंद करेगा ? समाज की कलात्मक मुक्ति के लिए कौन यह सब करने को तैयार होगा विशेषकर जब कला के अन्य माध्यमो पर यह बोझ नहीं। यही पर एक सवाल तक करने उठ खडा होता है कि क्या अलग अलग कला माध्यमों के लिए अलग अनुभव प्राप्त करने के ढंग होंगे ? एक म रचनाकार अपने को अलग रखकर, सदस्य होने के नाते जीवन से जो बहु गहरे और उच्च कोटि के सम्बन्ध स्थापित करता है उन्हें एक कलात्मक भाषा में अभिव्य'

दे। पाठक पूरी तयारी करके, उसकी रचना को समझे और जाने कि कितने सूक्ष्म और गहरे अनुभव थे। यह ज्ञान उसक लिए हितकारी होगा। दूसरे मे रचनाकार साधारण जन को तरह समूह में मिलकर उन्ही लोगो के अनुभवो को खोजने की, महसूस करने की और फिर उन्ही की भाषा में वह देने की कोशिश करे ताकि उसको रचना से परिचित होने पर वह लेखक को नही, अपने को पहचान लें। नाटककार को अवश्य ही यह दूसरा ढग अपनाना पडेगा और अगर यह कला माध्यम है तो यही ढग कला का ढग है। पहला नही है। कुछ कम कहा जाए तो आज के प्रजातन्त्र, औद्योगिक, सामूहिक साधनो से युक्त युग मे नाटक के ढग का विशेष महत्त्व है। कला की आधुनिक दिशा को वही तय करेगा।

नाटक में सहयोग के कई स्तर ह। नाटक लिखनेवाले और नाटक करने वालो के बीच एक सहयोग है। दूसरा नाटक करनेवाला और दर्शको के बीच है जिसकी चर्चा पहले हो चुकी ह। यहाँ पर ज्यादा मौका ह कि एक सहयोगी दूसरे सहयोगी को समझे, न समझे, ग़लत समझे। इस सहयोग की प्रतिक्रियावश हर स्तर पर नये रचनात्मक मोड के आने को सभावना बढ जाती ह। लेखक जो लिखता है और अभिनेता जसे उसे प्रस्तुत करता है, अभिनेता रिहर्सल' मे कुछ करता ह और भरे हाल मे कुछ और, लेखक समूह के बीच जो अनुभूति पा चुका था और जिसे उसने अपनी कला कृति मे अभिव्यक्ति दी थी, उसमें और वही समूह जब दर्शक बनकर उसकी रचना को तौलता है उसमे अतर आ जाता ह। इस अर्थ में यहाँ दर्शक आरम्भ से ही नाटय प्रस्तुति मे हिस्सा लेता ह, उसके लिखे जाने से लेकर उसकी प्रस्तुति तक उसे प्रभावित करता ह। शायद इसीलिए जब हम नाटक देखने जाते हं, तब अपने को इतना बाहरी निस्सहाय और महज सुप्त दर्शक नही महसूस करते, जितना सिनेमा देखते समय या उपन्यास पढते समय करते ह। इस दृष्टि से समाज के सास्कृतिक जीवन में नाटक जीवत घटना है, बहुतो को उसका वास्तविक साझीदार बनाती है, रचनात्मक

प्रक्रिया के स्तर पर उन्हे छूती है, अत उन्हें बदलती है। किसी प्रजातन्त्र देश के रचनाकार अगर यह मानते हैं कि अधिक से अधिक लोगो को सास्कृतिक सबक मिलना चाहिए, सबको कला की रचना प्रक्रिया का एहसास होना चाहिए, तो नाटक लिखने मे रुचि लेना उनका नैतिक कर्त्तव्य है। नाटक को लिखने मे शुरू से ही सबको लेकर चलना होगा। सबकी भाषा की हालत के अन्तर्गत ही नाटक आकार ग्रहण करेगा। जहा सब हैं वहा से उनका हाथ पकडकर उन्हे नाटक मे मिला लेना होगा। तब लेखक कोई विशेष जीव नही होगा, सबके साथ उसका कोई अलग रिश्ता नही होगा, इसीलिए इस रिश्ते को अभिव्यक्ति मिली या नही मिली, इसका निर्णायक वह स्वय नही होगा। अत रचना ज्यादा से ज्यादा लोगो के पास तक पहुँचे, यह आवश्यक होगा। लोग उस पहुँचने को प्रभावित कर सकें, इसलिए उनकी उपस्थिति में अभिनेताओ द्वारा उसका प्रस्तुतीकरण उचित माध्यम होगा। ऐसे साहित्यिक नाटक लिखना जो प्रस्तुतीकरण न वहन कर सकें, अनैतिक होगा, विलास होगा।

आज के अनुभव की जटिलता अगर ऐसी है कि उसे सुलझाकर अलग-अलग रखा नही जा सकता तो साधारण भाषा उसे अभिव्यक्ति देने में असफल होने लगेगी। उसे भाषा मे व्यक्त करने के लिए हम विशेषणों, सबधसूचक अव्ययो और सहायक क्रियाओ की मदद लेनी पडेगी और इस सिलसिले मे यह अनुभव इतना विश्लेषित हो जाएगा कि घना और गुथा हुआ होना जो उसके विशेष गुण थे, खो जाएँगे। ऐसा लगेगा कि जो हम कहना चाह रहे थे, वह तो कहा ही नही गया। इसके विपरीत, हरकत की भाषा लचीली है, किसी एक इशारे में तनिक मोड दे देने से कई अर्थों को व्यजित करने लगती है और इसलिए नाटक के क्षेत्र में ऐसे घने गुथे अनुभवो को व्यक्त करने की क्षमता प्रदान कर सकती है। पर इस भाषा की सफलता बहुत कुछ अभिनेता पर निर्भर करेगी। लेखक, इस भाषा का प्रयोग कैसे होगा, इसकी ओर इशारा भर कर सकेगा, इस भाषा का प्रचुर मात्रा में प्रयोग

हो सके, इसके लिए स्थिति के चुनाव में जगह रख सकेगा, लकिन इसक बाद उसे अभिनेता की बुद्धि और कुशलता पर ही विश्वास रखना होगा। अत अभिनता का जहाँ अपना कला-कुशलता दिखान को नये नाटक में अधिक छूट मिलेगी, वही उसका जिम्मेदारी भी बढ़ जाएगी। अब वह अधिक दूर तक नाटक को रचना में साझीदार होगा।

हिदी मे नाटक ने अभी बहुत कम हासिल किया ह। नाटक लिखे कम गये ह, मच नही के बराबर हैं और देखन वाल इकट्ठे करन पडते हैं। हर नये दौर की तीन मजिलें होती हैं। आरम्भ में लोग उस ऊटपटांग, गरजिम्मदार और नाहक पाते ह। एक सिलसिले के बाद लाग उसकी उपस्थिति को सहने लगते ह, उसमें कही कुछ सत्य ह, यह भी मानने लगत ह, पर अब भी उसे अधिकाशत निरथक सतही और अगभीर पाते हैं। फिर एक स्थिति आती ह जब उसक विरोधी आगे बढ़कर अपने को उसका ज मदाता, अग्रणी और वास्तविक अनुयायी घोषित करने लगते हं। नया नाटक अभी पहली स्थिति में ही ह। या शायद उससे भी पहले की स्थिति में ह, जहाँ वह ह ही नही।

अत करने के पहले कुछ सूत्रा को इकट्ठा करे तो लगता ह कि दश के अधिकाश लोगो की मन स्थिति उनका बोलचाल की भाषा और उनकी हरक्तो में अभिव्यक्त होती रहती ह। अगर हम बोल-चाल की भाषा और हरकत को कलाकृति का माध्यम बना लेंगे, तो मौजूदा और व्यापक यथाथ से एक मूल आधारभूत सम्बन्ध स्थापित कर लेंगे और यह जरूरी भी ह और पर्याप्ति भी। यथाथ से इससे ज्यादा या कम सम्बन्ध कलाकृति के अपने आतरिक सगठन को कमजोर करेगा। इस बोलचाल और हरक्त की समाहित भाषा का उपयोग करके नाटक के अपने नियमो को निभाते हुए जो भी लिखा जाएगा, उसका एक सामाजिक महत्त्व भी होगा, क्योंकि वह लेखक के किसी खास अनुभव का चित्राकन न करके बहुता के अनुभवो के समापवतक को उजागर करेगा, जिसे वे स्वय नही वाणी दे पा रहे थे।

इस भाषा और इस अनुभव के स्रोत में कलाकृति को जन्म देने के सब गुण मौजूद हैं। जब तक नाटक अभिनय द्वारा दर्शक समूह के सामने प्रस्तुत नहीं हो जाता तब तक वह अधूरा रहता है। दर्शक की उपस्थिति नाटक को प्रभावित करती है। दर्शक नाटक की रचना का साझीदार है उसके लिखे जाने का, क्योंकि वही उसकी समाहित भाषा को निर्धारित करता है और उसकी प्रस्तुति का भी, क्योंकि वह अभिनय को प्रभावित करता है। प्रजातन्त्र में समूह देश की राजनीति को और उससे उपजनेवाली तमाम नीतियों को निर्धारित करता है और स्वयं अपने अनुभवों, अपनी भाषा और अपनी परम्परागत हरकतों सहित नाटक का कच्चा माल भी बनता है। नाटक की संपूर्ण रचना प्रक्रिया में वह भाग लेता है और वही अपने असली रूप को पहचानता भी है। जिस प्रजातन्त्र देश के जितने लोग, जितना अधिक अपने को सही रूप में पहचानेंगे, उतना अधिक वह देश अपने प्रजातन्त्र के आदर्श के निकट सरकेगा। इस दृष्टि से नाटक की, इसलिए रंगमंच की, जो ज़िम्मेदारी है और जो संभावना है, वह अन्य किसी कला माध्यम की नहीं हो सकती।



1)

अरघान (कविता सग्रह 1984)

पता सी-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003